खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

अधिकतम :34°C
न्यूनतम: 20°C

मेरठ, गुरुवार 30 अप्रैल 2026 मेरठ संस्करण: वर्ष 19 अंक 328 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com | वैसाख शुक्ल पक्ष 13 विक्रमी सम्वत् 2083 | 11 जिलकदा 1447 हिजरी | नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

यूपी विधानसभा के विशेष सत्र की तैयारी, महिला आरक्षण पर सियासी घमासान तय पेज 2

राजस्थान रॉयल्स के सूर्यवंशी ने फिर किया ऑरेंज कैप पर कब्जा खेल टाइम्स

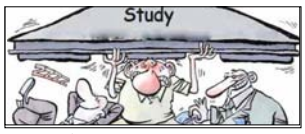

स्कूल की चौखट पर खड़ा बाजार, भीतर सिमटती शिक्षा सम्पादकीय

ईरान में हार से बचने को अमेरिका रास्ता तलाश रहा: अमेरिकी विशेषज्ञ पेज 12

संक्षिप्त समाचार

पेट्रोल-डीजल की कीमतें बढ़ने संबंधी आदेश फर्जी: सरकार

नई दिल्ली। सरकार ने कहा है कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी से संबंधित सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा आदेश फर्जी है और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने इस तरह का कोई आदेश जारी नहीं किया है। सोशल मीडिया पर वायरल पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के इस कथित आदेश में दावा किया जा रहा है कि पेट्रोल की कीमत में दस रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत में साढ़े बारह रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी की गई है। कथित आदेश में कहा गया है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी के कारण सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों ने इस बढ़ोतरी का निर्णय लिया है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय के पत्र सूचना कार्यालय पीआईबी की फैक्ट चैक टीम ने वृंधवार को इस कथित आदेश की जांच के बाद कहा है कि यह फर्जी है और सरकार ने पेट्रोल तथा डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी का कोई आदेश जारी नहीं किया है।

राजस्थान में गर्मी के चलते ट्रेन के ब्रेक में लगी आग

नई दिल्ली। देश के कई शहर हीटवेव की चपेट में हैं। ज्यादातर हिस्सों में तापमान 40-46 डिग्री सेल्सियस के बीच है। मध्य प्रदेश के देवास में गर्मी से बचने के लिए 20 कूलर के साथ बारात निकाली गई। राजस्थान के धौलपुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेन के एक जनरल कोच के निचले हिस्से में आग लग गई। रेलवे के सूत्रों के मुताबिक, गर्मी के कारण ब्रेक पैडल वाले हिस्से में आग लगी थी। ओडिशा के झारसुगुड़ा में 45.3 डिग्री से ज्यादा तापमान रहा। यहां लू सेंटर बनाए जा रहे हैं, जहां ठंडा पानी और ग्लूकोज का इंतजाम होगा। यूपी के 15 शहरों में आंधी-बारिश हुई।

गाजियाबाद में आवासीय इमारत में आग लगने से हड़कंप

गाजियाबाद। उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद जिले के इंदिरापुरम स्थित गौर ग्रीन एवेन्यू सोसाइटी में बुधवार को भीषण आग लग जाने से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। अग्निशमन अधिकारी ने घटनास्थल से जानकारी देते हुए बताया कि दमकल कर्मियों की टीम ने तुरंत वहां पहुंचकर आग बुझाने की कोशिश शुरू कर दी है। हालांकि, आग ऊंची मंजिलों तक फैल रही थी, इसलिए इस पर काबू पाने के लिए क्रेन की मौके पर लगाया और आग पर काबू पाने का प्रयास किया जा रहा है। आग के दूसरे फ्लैट तक भी फैलने की आशंका से वहां रह रहे लोगों में अफरा-तफरी मच गई है।

ग्रेट निकोबार परियोजना पर राहुल ने मांगा जवाब

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अंडमान-निकोबार के ग्रेट निकोबार द्वीप में प्रस्तावित विकास परियोजना को लेकर सवाल उठाते हुए सरकार से इस पर स्पष्ट जवाब देने को कहा है। श्री गांधी ने 'एक्स' पर क्षेत्र के अपने हालिया दौरे का जिक्र करते हुए कहा कि ग्रेट निकोबार के जंगल अत्यंत प्राचीन और अद्भुत हैं, जिन्हें विकसित होने में पीढ़ियां लगी हैं।

एग्जिट पोल: बंगाल में पहली बार भाजपा

असम, पुडुचेरी में भी खिलेगा कमल, तमिलनाडु में टीवीके आगे व केरलम में यूडीएफ बनाएगी सरकार

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में 6 एग्जिट पोल के नतीजे आ चुके हैं। 5 में भाजपा और एक में टीएमसी सरकार बनने का अनुमान जताया गया है। मैट्रिज के एग्जिट पोल में टीएमसी को 125 से 140 और भाजपा को 146 से 161 सीटें मिलने का अनुमान है।

चाणक्य स्ट्रैटजी ने टीएमसी को 130 से 140 और भाजपा को 150 से 160 सीटें मिलने का अनुमान जताया है। पीपुल्स पल्स ने टीएमसी को 177 से 187 और भाजपा को 95 से 110 सीटें मिलने की बात कही है। प्रजा पोल ने टीएमसी को 85 से 110 और भाजपा को 178 से 200 सीटें मिलने की बात कही है। पी-मार्क के एग्जिट पोल में टीएमसी को 118 से 138 और भाजपा को 150 से 175 और सीटें दी गई हैं। पोल डायरी ने टीएमसी को 99 से 127 और भाजपा को 142 से 171 सीटें मिलने की बात कही है। असम के 8 एग्जिट पोल सामने आए हैं, सभी में भाजपा की वापसी का दावा किया गया है। एक्सिस माय इंडिया ने भाजपा को 88-100, जबकि कांग्रेस को 24-36 सीटें मिलने का अनुमान जताया है। मैट्रिज ने भाजपा को 85-95 और कांग्रेस को 25-32 सीटें दी हैं। पीपुल्स पल्स ने

बंगाल एग्जिट पोल्स 2026
कुल सीटें: 294 । बहुमत: 148

एजेंसी	TMC	BJP	अन्य
मैट्रिज	125-140	146-161	6-10
चाणक्य स्ट्रेटीज	130-140	150-160	0-5
पीपुल्स पल्स	177-187	95-110	1-4
पोल डायरी	99-127	142-171	5-9
प्रजा पोल	85-110	178-208	0-5
पी मार्क	118-138	150-175	0-0
जनमत पोल्स	195-205	80-90	1-4
एवरेज	142	145	7

भाजपा को 68-72 और कांग्रेस को 22-26 सीटें दी हैं। पी मार्क ने भाजपा को 82-94 और कांग्रेस को 30-40 सीटें दी हैं। जेवीसी ने भाजपा को 88-101 और कांग्रेस को 23-33 सीटों का अनुमान जताया है। चाणक्य स्ट्रैटजी ने भाजपा को 88-98 और कांग्रेस को 22-32 सीटें मिलने की बात कही है। पोल डायरी ने भाजपा को 86-101 और कांग्रेस को 15-26 सीटें मिलने का अनुमान जताया है। वोट वाइब ने भाजपा को 90-101 और कांग्रेस को 23-33 सीटें दी हैं। तमिलनाडु के 5 एग्जिट पोल- 4 में डीएमके+ की वापसी बताई गई है। मैट्रिज ने डीएमके+ को 122-132, एआईके डीएमके+ को 87-110 सीटें मिलने का अनुमान जताया है। पी मार्क ने डीएमके+ को 125-145, एआईडीएमके+ को 65-85 सीटें दी हैं। पीपल्स इनसाइट ने डीएमके+ को 120-140, एआईण्डीएमके+ को 60-70 सीटें दी हैं। जेवीसी- टाइम्स नाउ डीएमके+ को 75-95 एआईडीएमके+ को 128-147 सीटें दी हैं। पीपल्स पल्स ने डीएमके+ को 125-145 एआईडीएमके+ को 65-80 सीटें मिलने की अनुमान जताया है।

बंगाल में आखिरी चरण में 92 प्रतिशत से ज्यादा वोटिंग

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में सेकेंड फेज की 142 सीटों पर वोटिंग खत्म हो गई है। शाम 6 बजे तक के आकड़ों के मुताबिक, 92फीसदी से ज्यादा वोटिंग हुई है। यह और बढ़ सकता है।

वोटिंग के दौरान कई जगहों पर हिंसा, झड़प, लाठीचार्ज और ईवीएम से छेड़छाड़ की घटनाएं सामने आईं। नॉर्थ 24 परगना के अरविंद रैली में टीएमसी और भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसक झड़प हुई। दोनों पार्टियों के कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को दौड़ा-दौड़ाकर मुक्के, लाठियों से हमले किए। भारी संख्या में सुरक्षाबलों की मौजूदगी के बावजूद हालात बेकाबू दिखे। सीएम ममता ने सीआरपीएफ पर टीएमसी समर्थकों और वोटरों से मारपीट का आरोप लगाया।

ममता ने कहा कि सीआरपीएफ ने हमारे कई लोगों को गिरफ्तार किया है। वोटरों और सेंट्रल ऑब्जर्वर लोगों को मार रहे हैं। महिलाओं और बच्चों को भी नहीं छोड़ा। टीएमसी ने आरोप लगाया कि सीआरपीएफ के हमले से हावड़ा के उदयनारायणपुर में एक बुजुर्ग की मौत हो गई। टीएमसी महासचिव अभिषेक बनर्जी ने दावा किया कि बुजुर्ग अपने बेटे के साथ वोट डालने गए थे। केंद्रीय बलों ने उन्हें धक्का दिया और मारपीट की। बुजुर्ग को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। जिन 142 सीटों पर वोटिंग हो रही है, उनमें से 123 सीटों पर टीएमसी ने 2021 के विधानसभा चुनाव में जीत दर्ज की थी। पहले फेज की 152 सीटों पर 23 अप्रैल को रिकॉर्ड 93 फीसदी मतदान हुआ था। 4 मई को रिजल्ट आएंगे।

- उत्तर 24 परगना में टीएमसी-भाजपा कार्यकर्ताओं में हिंसा
- दावा: हावड़ा में CRPF की पिटाई से बुजुर्ग की मौत

शुवेंदु अधिकारी को टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने घेरा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में दूसरे फेज की वोटिंग के दौरान कई विधानसभा सीटों पर हिंसा और मारपीट की घटनाएं सामने आईं। नादिया जिले के छपरा में भाजपा एजेंट ने टीएमसी कार्यकर्ताओं पर हमले का आरोप लगाया।

वहीं, शांतिपुर में भाजपा कैंप पर भी हमला हुआ। बीजपुर में निर्दलीय प्रत्याशी और काउंसलर के बीच मारपीट हो गई। श्यामपुकुर में भाजपा उम्मीदवार के खिलाफ प्रदर्शन किया। भाजपा उम्मीदवार रत्ना देवनाथ ने टीएमसी कार्यकर्ताओं पर हमले का आरोप लगाया है। वहीं बंगाल में अंतिम चरण के साथ मतदान संपन्न हो गया है। अब मतगणना चार मई को होगी। इस बार पश्चिम बंगाल का चुनाव पूरे देश में सुर्खियों में बना रहा है।

ईरान को NPT का उपाध्यक्ष बनाने पर तिलमिलाया अमेरिका

न्यूयॉर्क। ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु कार्यक्रम को लेकर युद्ध जैसी स्थिति बनी हुई है। इसी बीच एक दिलचस्प खबर सामने आई है। ईरान को परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का उपाध्यक्ष चुना गया है। यह फैसला न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र में चल रहे एनपीटी के 11वें रिव्यू कॉन्फ्रेंस में लिया गया। यह कॉन्फ्रेंस 5 साल में एक बार होती है।

सम्मेलन के अध्यक्ष और वियतनाम के राजदूत दो हुंग वियेत ने बताया कि ईरान का नाम 'गुटनिरपेक्ष देशों के ग्रुप' की तरफ से आया था। इस ग्रुप में भारत समेत 100 से भी ज्यादा देश हैं। अमेरिका के एक अधिकारी क्रिस्टोफर येओ ने इसे एनपीटी के लिए अपमान

- अमेरिकी अधिकारी बोले: यह संगठन का अपमान
- ईरान बोला: अमेरिका हमें न सिखाए

बताया। उनका कहना है कि ईरान लंबे समय से परमाणु हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है। ऐसे में उसे इस संगठन का अहम पद देना सही नहीं है। वहीं ईरान ने इन आरोपों को खारिज कर दिया। ईरान ने कहा कि अमेरिका, जो खुद परमाणु हथियार इस्तेमाल कर चुका है और लगातार अपने हथियार बढ़ा रहा है, उसे दूसरों को सीख देने का हक नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस 27 अप्रैल 2026 को यूएन हेडक्वार्टर में परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हुई मीटिंग में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस 27 अप्रैल 2026 को यूएन हेडक्वार्टर में परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हुई मीटिंग में प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए। परमाणु अप्रसार संधि 1970 में लागू हुई थी। यह दुनिया में परमाणु हथियारों को फैलने से रोकने की सबसे अहम व्यवस्था मानी जाती है। इस संधि का एक सीधा सौदा है, जिन देशों के पास परमाणु हथियार नहीं हैं, वे इन्हें नहीं बनाएंगे और जिनके पास हैं, वे धीरे-धीरे उन्हें खत्म करेंगे।

तीस्ता सीतलवाड़ की अर्जी खारिज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक्टिविस्ट तीस्ता सीतलवाड़ की पासपोर्ट रिलीज करने की अर्जी खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि जब भी वह विदेश जाने का प्लान तय करेंगी, तो नई अर्जी दे सकती हैं। तीस्ता ने अपना पासपोर्ट रिलीज करने की मांग की थी। तीस्ता का पासपोर्ट 2002 के गोधरा के बाद हुए दंगों के मामलों में बेगुनाह लोगों को फंसाने के लिए कथित तौर पर डॉक्यूमेंट्स बनाने के मामले में जमानत की शर्त के तौर पर कोर्ट में जमा किया गया था।

सुधार के नाम पर धर्म को खोखला नहीं कर सकते: SC

शाह टाइम्स ब्यूरो

नई दिल्ली। केरलम के सबरीमाला मंदिर सहित अन्य धार्मिक स्थलों में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव से जुड़ी याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को सुनवाई हुई। कोर्ट ने एडवोकेट इंदिरा जयसिंह की दलीलों के जवाब में कहा कि सामाजिक सुधार के नाम पर धर्म को खोखला नहीं किया जा सकता।

आस्था और विवेक के मामलों पर कोर्ट में बहस नहीं हो सकती। एडवोकेट जयसिंह ने सुनवाई के 10वें दिन कहा कि सबरीमाला मंदिर में एंट्री का फैसला अब भी लागू है। इस पर स्टे नहीं है, लेकिन मंदिर में प्रवेश

- कहा: आस्था और विवेक के मामलों पर कोर्ट में बहस नहीं हो सकती

नहीं मिल रहा है। जयसिंह ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट इसकी रिव्यू पिटिशन पर सुनवाई कर रहा है। हालांकि, कोर्ट कभी यह तय नहीं करता कि धर्म में क्या जरूरी है या और क्या नहीं। इसका फैसला तो धर्म ही करता है। इस पर जस्टिस बीवी नागरत्ना ने कहा कि हम इस भूमि के सभ्यता के विकास और धार्मिक इतिहास को नजरअंदाज नहीं कर सकते। इसी बैकग्राउंड से संविधान के आर्टिकल 25 और 26 आए हैं। इस पर जयसिंह ने कहा कि इस पर डिबेट हो सकती है। यह क्लीन स्लेट है। सबरीमाला मंदिर मामले पर 7 अप्रैल से सुनवाई शुरू हुई थी। इस दौरान केंद्र सरकार ने महिलाओं की एंट्री के विरोध में दलीलें रखीं। सरकार ने कहा था कि देश के कई देवी मंदिरों में पुरुषों की एंट्री भी बैन है, इसलिए धार्मिक परंपराओं का सम्मान किया जाना चाहिए।

सौगात: पीएम ने गंगा एक्सप्रेसवे किया राष्ट्र को समर्पित

उप्र के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों को जोड़ने वाली लाइफलाइन साबित होगा एक्सप्रेसवे

शाह टाइम्स संवाददाता

हरदोई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को यहां 594 किलोमीटर लंबे गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन किया और इसी के साथ ही उत्तर प्रदेश के अवसंरचना विकास में एक ऐतिहासिक अध्याय जुड़ गया।

यह राज्य की कनेक्टिविटी और आर्थिक महत्वाकांक्षाओं में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रधानमंत्री ने स्थल पर एक पौधा लगाया और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ एक्सप्रेसवे पर पैदल चलकर इसके डिजाइन और विशेषताओं का जायजा लिया। इस अवसर पर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद, उपमुख्यमंत्री

केशव प्रसाद मौर्य और बृजेश पाठक, साथ ही भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री पंकज चौधरी भी उपस्थित थे।

ग्रीनफील्ड गंगा एक्सप्रेसवे की आधारशिला दिसम्बर 2021 में स्वयं प्रधानमंत्री ने रखी थी। लगभग 36,230 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से निर्मित यह परियोजना विश्व स्तरीय अवसंरचना की दिशा में राज्य के प्रयासों को दर्शाती है। उद्घाटन से पहले, प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा आयोजित एक प्रदर्शनी का भी दौरा किया।

विपक्ष को सजा देने को बहन-बेटियों ने किया रिकॉर्ड मतदान: मोदी

हरदोई। देश के पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले राजग की जीत का भरोसा जताते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को कहा कि महिला आरक्षण का विरोध करने वाले विपक्ष की कुटिल मंशा को बहन-बेटियां पहचान गई हैं और यही कारण है कि असम, केरलम, पुडुचेरी, बंगाल और तमिलनाडु में बहनों ने रिकॉर्ड मतदान किया है। हरदोई के मल्लावां में देश के सबसे बड़े गंगा एक्सप्रेस वे के लोकार्पण के अवसर पर श्री मोदी ने आयोजित एक जनसभा में कहा कि आज हर क्षेत्र में, हर मोर्चे पर भारत की बेटियां इतना शानदार काम कर रही हैं, तो राष्ट्र के भविष्य से जुड़े फैसलों में भी बहनों-बेटियों की भूमिका और बढ़नी ही चाहिए।

हैरत: दिल्ली HC में वर्चुअल सुनवाई में चली पोर्न वीडियो

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट में बुधवार को वर्चुअल सुनवाई के दौरान अश्लील वीडियो चल गया। उस वक्त चीफ जस्टिस देवेंद्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तेजस खरिया की बेंच सुनवाई कर रही थी।

यह मामला दोपहर 12:56 बजे का है। यह साफ नहीं हुआ है कि वारदात के वक्त बेंच किस मामले में सुनवाई कर रही थी। जैसे ही पोर्न वीडियो चला, फौरन सुनवाई रोक दी गई। कुछ मिनट बाद सुनवाई दोबारा शुरू हुई, फिर पोर्न वीडियो चलने लगा। मामले की शिकायत दिल्ली पुलिस की आईएफएसओ यूनिट को दी गई है। वर्चुअल सुनवाई के दौरान कई लोग जुड़े हुए थे। इनमें एक

- स्क्रीन पर दिखा हैक का मैसेज, गाने भी बजे

क्षितिजीत सिंह थे। शुरुआती पूछताछ में क्षितिजीत ने दावा किया कि उसका अकाउंट अमेरिका से हैक किया गया था। उन्हें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि सुनवाई के दौरान वह अश्लील वीडियो कैसे चला। बुधवार को सुनवाई के दौरान वीडियो चलने के बाद आपका सिस्टम हैक हो गया है', का मैसेज भी स्क्रीन पर दिखाई दिया। दो बार पोर्न वीडियो चला और तीसरी बार म्यूजिक वीडियो चला। कोर्ट में 100 से ज्यादा जनहित याचिकाओं पर सुनवाई हो रही थी। ये मामला उसी दौरान सामने आया।

संक्षिप्त समाचार

नशीले पदार्थों से जुड़े मामलों में अवैध संपत्तियों को ढहाया

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में पुलिस ने नागरिक प्रशासन के सहयोग से नशीले पदार्थों की तस्करी से जुड़े मामलों में बड़ी कार्रवाई करते हुए सरकारी जमीन पर करोड़ों रुपये की अवैध रूप से बनी संपत्तियों को ढहा दिया है। पुलिस ने बताया कि इस अभियान के दौरान, राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे एस्टेट संगम में सरकारी जमीन पर बनी कई इमारतों को ढहा दिया गया। पुलिस ने बताया कि इन इमारतों का इस्तेमाल सड़क किनारे ढाबों के तौर पर किया जा रहा था और ए इमारतें एनडीपीएस अधि. नियम के मामलों में शामिल लोगों से जुड़ी पाई गईं। ढहाई गई संपत्तियों में कश्मीर रेस्तरां (ढाबा) भी शामिल था, जिसके मालिक डोनिपोरा संगम के रहने वाले गुल मोहम्मद मीर और बशीर अहमद मीर थे। पुलिस ने बताया कि इन दोनों के नाम बिजबेहारा पुलिस स्टेशन में दर्ज अलग-अलग एनडीपीएस मामलों में शामिल हैं।

विश्वनाथ धाम में प्रधानमंत्री मोदी को त्रिशूल-डमरू भेंट

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने काशी दौरे के दूसरे दिन बुधवार सुबह बरेका से रोड शो करते हुए काशीवासियों और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं का अभिवादन करते हुए श्री काशी विश्वनाथ धाम पहुंचे। धाम में ब्राह्मणों और बटुकों ने प्रधानमंत्री का डमरुओं की निनाद तथा शंखनाद के साथ भव्य स्वागत किया। विश्वनाथ धाम भ्रमण के दौरान प्रधानमंत्री ने विक्रमादित्य वैदिक घड़ी को देखा और उसके बारे में विस्तार से जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने विश्वनाथ धाम में लोगों का अभिवादन किया और गंगा द्वार भी पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्री काशी विश्वनाथ जी का जलाभिषेक किया।

11 घंटे का सफर मात्र छह घंटे में होगा पूरा

गंगा एक्सप्रेस से मिलेगी विकास को रफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ पश्चिमी उप्र के मेरठ को पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से जोड़ेगा, 3.5 किमी लंबा इमरजेंसी लैंडिंग फैसिलिटी तैयार, वायुसेना के एयरक्राफ्ट को आपात स्थिति में लैंड कर सकेंगे

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट गंगा एक्सप्रेस का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को हरदोई में किया। 594 किलोमीटर लंबा गंगा एक्सप्रेसवे प्रदेश के सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट में से एक है, जिसे 3-5 साल से भी कम समय में पूरा किया गया है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ को पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से जोड़ने वाले इस एक्सप्रेस वे के शुरू होने से राज्य के विकास को नई गति मिलने की उम्मीद है। गंगा एक्सप्रेसवे के शुरू होने से यात्रा समय करीब 11 घंटे से घटकर लगभग छह घंटे रह जाएगा। इससे बिजनेस, लॉजिस्टिक्स, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और पर्यटन क्षेत्रों को व्यापक लाभ होगा। सड़क सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए इस एक्सप्रेसवे पर एआई-सक्षम कैमरा सिस्टम लगाए गए हैं, जो दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एडवांस अलर्ट करेंगे। इस प्रोजेक्ट के तहत शाहजहांपुर जिले में 3-5 किमी लंबा इमरजेंसी लैंडिंग फैसिलिटी तैयार किया गया है, जिससे भारतीय वायुसेना के एयरक्राफ्ट को आपात स्थिति में लैंड कर सकेंगे और इस रणनी. तिक कॉरिडोर की क्षमताएं और मजबूत होंगी। 12 जिलों से गुजरने वाला यह छह लेन का एक्सप्रेसवे, जिसे भविष्य में आठ लेन तक विस्तारित किया जा सकता है, बाजारों, स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा केंद्रों और पर्यटन स्थलों तक पहुंच को बेहतर बनाएगा। आम नागरिकों को जहां आवश्यक सेवाओं तक तेजी से पहुंच मिलेगी, वहीं व्यापार और उद्योगों को तेज कनेक्टिविटी का लाभ मिलेगा। अदाणी रोड ट्रांसपोर्ट लिमिटेड ने इस परियोजना में 464 किमी, यानी कुल एलाइनमेंट का लगभग 80 फीसदी हिस्सा विकसित किया। निर्माण के समय में इश प्रोजेक्ट पर 12,000 से ज्यादा श्रमिक तैनात रहे। बाकि हिस्से का निर्माण आईआरबी इंफ्रास्ट्रक्चर ने बनाया है। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुसार यह एक्सप्रेसवे हर वर्ष 25,000-30,000 करोड़ रुपये की लॉजिस्टिक्स बचत करेगा, अगले एक दशक में लगभग तीन लाख रोजगार सृजित करेगा और राज्य के जीडीपी में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक का योगदान देगा। इसके साथ ही, यह फ्रेट वेलोसिटी को बढ़ाने और कई क्षेत्रों में इन्वेंट्री होल्डिंग लागत को कम करने में मदद करेगा। यह ट्रंक कॉरिडोर कृषि उत्पादों और अन्य वस्तुओं की तेज आवाजाही सुनिश्चित कर व्यापार प्रवाह को मजबूत करेगा। किसानों और छोटे कारोबारियों को बेहतर बाजार पहुंच और बेहतर मूल्य प्राप्ति में सहायता मिलेगी। गंगा एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश की औद्योगिक और कृषि कनेक्टिविटी को मजबूती देने के साथ करीब 8 करोड़ से अधिक लोगों को को फायदा पहुंचाएगा।

यूपी विधानसभा के विशेष सत्र की तैयारी

सियासी सरगर्मियां तेज हुई

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ महिला आरक्षण को लेकर सियासी घमासान होना तय
■ कांग्रेस भी अपने रुख को स्पष्ट करने की तैयारी में

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा का विशेष सत्र गुरुवार को आयोजित होने जा रहा है, जिसे लेकर सियासी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। एक ओर जहां विपक्ष अपनी रणनीति तय करने में जुटा है, वहीं सत्तारूढ़ एनडीए ने महिला आरक्षण के मुद्दे पर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को घेरने की पूरी तैयारी कर ली है।

साल 2027 के विधानसभा चुनाव से करीब 10 महीने पहले बुलाया गया यह विशेष सत्र सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच बड़े टकराव का मंच बन सकता है। प्रमुख विपक्षी दल समाजवादी पार्टी ने अपने विधायकों की बैठक बुलाकर रणनीति को अंतिम रूप देने की तैयारी की है। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय ने बताया कि पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने 29 अप्रैल की दोपहर बैठक बुलाई है, जिसमें इस मुद्दे पर आगे की रणनीति तय की जाएगी। वहीं कांग्रेस भी इस मुद्दे पर अपने रुख को स्पष्ट करने की तैयारी में है। कांग्रेस विधानमंडल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि पार्टी आज इस विषय पर निर्णय लेगी और बेहतर तालमेल के लिए समाजवादी पार्टी नेतृत्व से भी बातचीत की जाएगी। समा. जवादी पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि राज्य सरकार इस मुद्दे पर कोई प्रस्ताव सदन में लाएगी या नहीं, लेकिन पार्टी सरकार के रुख का जवाब देने के लिए रणनीति बना रही है। इधर, भारतीय जनता पार्टी विपक्ष को संसद में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक, 2026 पारित न होने देने के मुद्दे पर घेरने की तैयारी में है। इस संशोधन का उद्देश्य लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिला आरक्षण को तेजी से लागू करना और लोकसभा की सीटों की संख्या बढ़ाना है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में 'जन आक्रोश महिला पदयात्रा' का नेतृत्व किया था, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में महिला रैली कर इस मुद्दे को प्रमुखता दी है। इस बीच विधानसभा की कार्यमंत्रणा समिति की बैठक आज होगी, जिसमें विशेष सत्र की कार्यवाही का एजेंडा तय किया जाएगा। राज्य सरकार की ओर से महिला सशक्तिकरण पर व्यापक चर्चा के साथ-साथ बजट सत्र के बाद जारी छह अध्यादेशों को सदन में पेश किए जाने की संभावना है, जिनमें राजस्व संहिता (संशोधन) अध्यादेश, 2026 भी शामिल है। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में 30 अप्रैल को विधानसभा का विशेष सत्र बुलाया गया है। जिसको लेकर सरकार अपनी तैयारी में जुटी है।

राजनाथ ने पाकिस्तान को दी क्लीन चिट: कांग्रेस

नई दिल्ली, वार्ता

■ जयराम रमेश का दावा: ऐसा अमेरिका को खुश करने के लिए किया गया है

कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आतंकवाद के मामले में पाकिस्तान को 'क्लीन चिट' दे दी है और दावा किया कि ऐसा अमे. रिका को खुश करने के लिए किया गया है।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रभारी जयराम रमेश ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि निश्चित रूप से रक्षा मंत्री ने पीएम नरेंद्र मोदी की स्वीकृति और निर्देश पर ही किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन की बैठक में 'क्लीन चिट' दी है। उन्होंने इसे शर्मनाक बताया और सवाल किया कि सरकार को ये बताना चाहिए कि क्या पाकिस्तान आतंकवाद का केन्द्र नहीं है। उन्होंने सवाल किया, क्या वहां भारत के खिलाफ आतंकी शिविर नहीं चल रहे हैं और क्या मुंबई तथा पहलगाम जैसे हमलों की साजिश पाक से जुड़े आतंकियों ने नहीं रची थी। रमेश ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान के प्रति सरकार का यह रुख अमेरिका को खुश करने और चीन के सामने संतुलन साधने की नीति का हिस्सा है। उन्होंने 19 जून 2020 को चीन को लेकर दिए गए मोदी के बयान का हवाला देते हुए कहा कि सिंह का यह भी उसी तरह का चौंकाने वाला रुख है।

सामूहिक दुष्कर्म के आरोपी भाजपा नेता पर घोषित इनामी राशि हुई 50 हजार

फतेहपुर, वार्ता

उत्तर प्रदेश के खागा कोतवाली क्षेत्र में मंगेतर के सामने युवती से सामूहिक दुष्कर्म के चर्चित मामले में फरार आरोपी भाजपा नेता पर घोषित इनाम की राशि 25 हजार रुपये से बढ़ाकर 50 हजार रुपये कर दी गई है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस अधीक्षक ने सात टीमों का गठन किया है। इस घटना को लेकर जिले में सियासी पारा भी चरम पर पहुंच गया है।

पुलिस सूत्रों ने बुधवार को बताया कि मुख्य आरोपी गोलू ठाकुर की गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दी जा रही है। यदि शीघ्र गिरफ्तारी नहीं हुई, तो न्यायालय से आदेश लेकर कुर्की की कार्रवाई भी की जा सकती है। पुलिस अधीक्षक ने मामले में लापरवाही बरतने पर खागा इंस्पेक्टर और चौकी इंचार्ज को लाइन हाजिर कर दिया है। जानक. ारी के अनुसार खागा कोतवाली क्षेत्र में एक युवक अपनी मंगेतर से मिलने उसकी ससुराल पहुंचा था और उसे लेकर एक बाग में गया, जहां पहले से मौजूद तीन युवकों ने युवती के साथ उसके मंगेतर के सामने ही सामूहिक दुष्कर्म किया। घटना के बाद पीड़ति किसी तरह घर पहुंची और परिजनों को जानकारी दी। आरोप है कि परिजन जब पीड़ति को लेकर थाने पहुंचे तो पुलिस ने प्रारंभ में गंभीरता नहीं दिखाई। बाद में युवती की हालत बिगड़ने पर उसे अस्पताल ले जाया गया। घटना मीडिया में आने के बाद पुलिस ने भाजपा के मंडल उपाध्यक्ष बताए जा रहे गोलू ठाकुर समेत तीन लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया, जिनमें दो आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया, जबकि गोलू ठाकुर फरार है। मुख्य आरोपी की कुछ भाजपा नेताओं के साथ तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद पुलिस और भाजपा दोनों की किरकिरी बढ़ गई। भाजपा नेताओं ने अपने बचाव में बयान जारी कर कहा है कि गोलू ठाकुर पार्टी का पदा. धिकारी नहीं है, जबकि इससे पहले वह स्वयं को मंडल उपाध्यक्ष बताता रहा है। इस मामले को लेकर नेता प्रतिपक्ष और समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि आरोपी की गिरफ्तारी में देरी राजनीतिक संरक्षण और जातीय पक्षपात के कारण हो रही है। वहीं पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने 30 अप्रैल को पीड़िता के घर जाकर मुलाक. ात करने और आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है।

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

सेंसेक्स 77496.36
निफ्टी 24177.65

सोना 153594
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 250210
प्रति किलो

शेयर बाजारों में लौटी तेजी सेंसेक्स 609 अंक चढ़ा

मुंबई, वार्ता

घरेलू शेयर बाजारों में बुधवार को एक बार फिर तेजी लौट आई और बीएसई का सेंसेक्स 600 अंक से अधिक की बढ़त में बंद हुआ। सेंसेक्स की शुरुआत तेजी के साथ हुई और पूरे दिन यह हरे निशान में रहा। अंत में पिछले कारोबारी दिवस की तुलना में 609.45 अंक (0.79 प्रतिशत) चढ़कर 77,496.36 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी-50 सूचकांक 181.95 अंक यानी 0.76 फीसदी की मजबूती में 24,177.65 अंक पर बंद हुआ। वृहत बाजार में मझौली कंपनियों के सूचक. ांक लाल निशान में रहे, जबकि छोटी कंपनियों में लिवाली देखी गई। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 0. 06 प्रतिशत उतर गया। वहीं निफ्टी स्मॉलकैप-100 सूचकांक में 0.65 प्रतिशत की बढ़त रही। एफएमसीजी, रियलटी और ऑटो सेक्टरों के सूचक. ांक एक से दो प्रतिशत के बीच चढ़े। आईटी, तेल एवं गैस, धातु और रसायन समूहों में भी अच्छी तेजी रही। निजी बैंकों के सूचकांक जहां बढ़त में रहे वहीं सार्वजनिक बैंकों में बिकवाली का जोर रहा। वित्त और टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद समूहों के सूचकांक भी गिरावट में रहे। सेंसेक्स की कंपनियों में आईटीसी का शेयर चार प्रतिशत के करीब मजबूत हुआ। टेक महिंद्रा में तीन प्रतिशत से अधिक की तेजी रही। मारुति सुजुकी, रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल और महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर दो से तीन प्रतिशत तक चढ़े। सन फार्मा, एलएंडटी, अडानी पोर्ट्स, हिंदुस्तान यूनीलिवर, इंफोसिस, टीसीएस और बजाज फाइनेंस के शेयर एक से दो प्रतिशत तक ऊपर बंद हुए। कोटक महिंद्रा बैंक, एक्सिस बैंक, टाइटन, पावरग्रिड, टाटा स्टील और बीईएल के शेयर भी हरे निशान में बंद हुए। इंडिगो का शेयर ढाई फीसदी और एनटीपीसी का डेढ़ फीसदी के करीब टूट गया। बजाज फिनसर्व, आईसीआईसीआई बैंक, एशियन पेंट्स, ट्रेंट, एचडीएफसी बैंक और भारतीय स्टेट बैंक के शेयर भी नीचे बंद हुए।

सोने की आभूषण मांग से अधिक रही निवेश मांग: विश्व स्वर्ण परिषद

नई दिल्ली। इस साल 31 मार्च को समाप्त तिमाही में देश के सर्राफा बाजार में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला और पहली बार सोने की निवेश मांग ने आभूषण बनाने के लिए सोने की खरीद को पीछे छोड़ दिया है। विश्व स्वर्ण परिषद के अनुसार इस साल की पहली तिमाही में सिक्कों, बिस्कुट और एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) में मजबूत रुचि के कारण निवेश के लिए पीली धातु की खरीद में तेज बढ़ोतरी हुई। दूसरी तरफ, आभूषण मांग में गिरावट देखी गई। सोने की ऊंची कीमतों के कारण सर्राफा की मांग प्रभावित हुई। रिपोर्ट के अनुसार, इस तिमाही में निवेश मांग साल-दर-साल 52 प्रतिशत बढ़कर 82 टन हो गई।

चावल, गेहूं में टिकाव, चीनी नरम खाद्य तेलों, दालों में रही घट-बढ़

नई दिल्ली, वार्ता

घरेलू थोक जिंस बाजारों में बुधवार को चावल में टिकाव देखा गया। चावल के साथ गेहूं की कीमत भी कमोबेश स्थिर रही। चीनी के भाव घटे, जबकि दालों और खाद्य तेलों में घट-बढ़ रही। औसत दर्जे के चावल की औसत कीमत 3,835 रुपये प्रति क्विटंल पर लगभग स्थिर रही।

गेहूं 2,780 रुपये प्रति क्विटंल पर अपरिवर्तित रहा। आटे में भी टिकाव देखा गया। दाल-दलहनों में उतार.चढ़ाव रहा। चना दाल की औसत कीमत 10 रुपये और मसूर दाल की चार रुपये प्रति क्विटंल बढ़ गई। तुअर दाल 20 रुपये और उड़द दाल 13 रुपये सस्ती हुई। मूंग दाल भी नौ रुपये प्रति क्विटंल टूट गई। मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में जुलाई का पाम ऑयल वायदा 42 रिंगिट चढ़कर 4,578 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। जुलाई का अमेरिकी सोया तेल वायदा भी 1.24 प्रतिशत महंगा हुआ और 73.42 सेंट प्रति पौंड के भाव बोला गया। स्थानीय बाजारों में सरसों तेल औसतन 13 रुपये और वनस्पति पांच रुपये प्रति क्विंटल फिसल गया। सोया तेल 31 रुपये और मूंगफली तेल 17 रुपये महंगा हुआ। पाम ऑयल में 14 रुपये और सूरजमुखी तेल में 13 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी रही। मीठे के बाजार में आज गुड़ का औसत भाव तीन रुपये प्रति क्विटंल गिर गया। चीनी भी दो रुपये सस्ती हुई। दाल-दलहन: दाल चना 7673.63 रुपये, मसूर काली 8090.45 रुपये, मूंग दाल 10162. 80 रुपये, उड़द दाल 10805.51 रुपये, तुअर दाल 11246.19 रुपये प्रति क्विटंल रही। अनाज: गेहूं दड़ा 2780.11 रुपये और चावल 3835.44 रुपये प्रति क्विंटल और आटा (गेहूं) 3258.72 रुपये प्रति क्विटंल रहा। चीनी.गुड़: चीनी एस 4304 रुपये और गुड़ 5019.62 रुपये प्रति क्विटंल बोले गए। खाद्य तेल: सरसों तेल 17843.59 रुपये, मूंगफली तेल 18866.73 रुपये, सूरजमुखी तेल 17448.66 रुपये, सोया तेल 14892.32 रुपये, पाम ऑयल 13457.62 रुपये और वनस्पति 14910.02 रुपये प्रति क्विटंल के स्तर पर रहा।

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहजमी जॉन्डिस, फैटी लीवर, एल्कोहलिक लिवर डिजीज आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहें फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

भारतीय पर्यटकों को भा रही अनजान और शांत जगहें: रिपोर्ट

नई दिल्ली, वार्ता

■ प. एशिया संकट से लोगों ने अपने गंतव्य बदले

छुट्टियां बिताने के लिए पसंदीदा स्थान चुनने के भारतीय पर्यटकों के मानदंड बदल रहे हैं और अब वे एसी जगहों पर जाना चाहते हैं जहां कुछ नया अनुभव मिले और बहुत ज्यादा लोग न जाते हों। ब्रितानी सर्च एग्रीगेटर एवं ट्रेवल एजेंसी स्काईस्कैनर की यहां मंगलवार को जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि 81 प्रतिशत भारतीय पर्यटकों को नई जगहों पर जाने से कोई गुरेज नहीं है जबकि 60 प्रतिशत से अधिक लोग कम भीड़-भाड़ वाली शांत जगहों को पसंद करते हैं।

स्काईस्कैनर के भारतीय कारोबार के प्रमुख नील घोष ने यह रिपोर्ट जारी करते हुए कहा कि पहले जहां लोग ज्यादातर ऐसी जगहों पर जाना पसंद करते थे, जो प्रसिद्ध हों या लोकप्रिय हों, वहीं अब वे ऐसी जगहों को तरजीह दे रहे हैं जहां कम लोग जाते हैं, जहां कुछ नया अनुभव मिले और बिल्कुल अनजान जगहों पर जाने से भी नहीं कतराते हैं। उन्होंने बताया कि छोटे-छोटे और नए पर्यटन स्थलों के उभरकर सामने आने का एक कारण यह भी है कि पहले जहां ये जगहें दुर्गम थीं अब इनके लिए परिवहन सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हैं। श्री घोष का कहना है कि पश्चिम एशिया संकट के कारण लोगों ने अपने गंतव्य जरूर बदले हैं, लेकिन छुट्टियों पर बाहर जाना पूरी तरह टाला नहीं है। उन्होंने कहना है कि आम तौर पर भी अब पर्यटक अपने गंतव्य और समय को लेकर काफी लचीलापन दिखा रहे हैं। यही कारण है कि 48 फीसदी भारतीय पर्यटक अब नॉन-पीक टाइम यानी उन दिनों में भी सफर करने के लिए तैयार हैं, जब भीड़ ज्यादा नहीं होती। रिपोर्ट के अनुसार एक-तिहाई लोग छुट्टी रद्द करने की बजाय अपना गंतव्य बदलने के लिए तैयार हैं। रिपोर्ट लॉन्च के मौके पर होस्टल चेन जोस्टल और जो वर्ल्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अविरल गुप्ता ने बताया कि अब काफी पहले योजना बनाने की बजाय लोग अंतिम समय में यात्रा के लिए ज्यादा बुकिंग कर रहे हैं। लगभग आधे पर्यटक अब उसी दिन या यात्रा से एक दिन पहले बुकिग करते हैं। उन्होंने कहा कि अब यात्रा छुट्टियां मनाने के कहीं बढ़कर जीवनशैली में शामिल हो चुका है।

प्रदेश की समृद्धि का प्रमुख माध्यम साबित हो रहे एक्सप्रेसवे: योगी

हरदोई, वार्ता

देश के सबसे बड़े गंगा एक्सप्रेसवे के लोकार्पण अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि दिसंबर 2021 में प्रधानमंत्री द्वारा रखी गई आधारशिला आज साकार रूप ले चुकी है। 594 किलोमीटर लंबा यह एक्सप्रेसवे अन्नदाता किसानों की उन्नति, युवाओं के रोजगार, आस्था व संस्कृति के संरक्षण तथा उत्तर प्रदेश की समृद्धि का प्रमुख माध्यम साबित होगा।

मेरठ से प्रयागराज तक फैले इस आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर ने 12 जनपदों के एक लाख से अधिक किसानों के योगदान से आकार लिया है। एक्सप्रेसवे के साथ-साथ 27 स्थानों पर इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल क्लस्टर और लॉजिस्टिक हब विकसित किए जा रहे हैं, जो न केवल आवागमन को तेज करेंगे बल्कि नए निवेश और रोजगार के द्वार भी खोलेंगे। डबल इंजन सरकार की दूरदर्शिता का प्रतीक यह एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश को नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहा है। मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि डबल इंजन सरकार का संकल्प है कि जिस परियोजना का शिलान्यास होगा, उसका उद्घाटन भी सुनिश्चित किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कर-कमलों से प्रदेश के इस बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट 'गंगा एक्सप्रेसवे' का भव्य उद्घाटन आज संपन्न हो रहा है। प्रधानमंत्री ने दिसंबर 2021 में जिस एक्सप्रेसवे की आधारशिला रखी थी, आज वही परियोजना लोकार्पण के साथ साकार रूप ले रही है। योगी ने हरदोई की पावन धरती को भगवान विष्णु के परम भक्त प्रह्लाद और नरसिंह अवतार से जुड़ी आस्था की भूमि बताते हुए कहा कि इसी पवित्र स्थल पर यह एतिहासिक अवसर प्राप्त होना गौरव का विषय है। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के चुनौतीपूर्ण दौर में भी भूमि अधिग्रहण से लेकर निर्माण कार्यों को निरंतर गति देने और समयबद्ध तरीके से परियोजना को पूरा करने का जो विजन प्रधानमंत्री ने प्रदेश को दिया था, आज वह पूरी तरह साकार होकर हमारे सामने है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज जब देश 'नए भारत' की परिकल्पना को साकार होते देख रहा है, तब 'नए उत्तर प्रदेश' में विकसित हो रहा आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर न केवल आवागमन को सुगम बना रहा है, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी नई ऊंचाइयों तक ले जा रहा है। यह परिवर्तन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन को स्पष्ट नीति, साफ नीयत और प्रभावी क्रियान्वयन के साथ धरातल पर उतारने का परिणाम है। 2017 से पहले प्रदेश परिवारवाद, जातिवाद, दंगों, अराजकता, कर्फ्यू और माफिया राज के माहौल से जकड़ा हुआ था, जहां विकास, रोजगार और निवेश की कल्पना भी मुश्किल थी। लेकिन पिछले 9 वर्षों में डबल इंजन सरकार के प्रयासों से उत्तर प्रदेश में एक्सप्रेसवे, हाईवे, जिला मार्गों और ग्रामीण सड़कों का लगभग चार लाख किलोमीटर का विशाल नेटवर्क विकसित हुआ है। इसके साथ ही इंटरस्टेट कनेक्टिविटी को मजबूत करते हुए हर जिला मुख्यालय को चार लेन और प्रत्एक ब्लॉक व तहसील मुख्यालय को चार लेन व दो लेन सड़कों से जोड़ने का कार्य भी सफलतापूर्वक किया गया है। उन्होने कहा कि देश की पहली रैपिड रेल का दिल्ली-मेरठ के बीच उद्घाटन कर प्रधानमंत्री ने दूरियों को सिमटाने का एतिहा. सिक कार्य किया है। उत्तर प्रदेश की अपार संभावनाओं को आगे बढ़ाने के लिए किए गए प्रयास आज जमीन पर एक्सप्रेसवे, रैपिड रेल, इनलैंड वॉटरवेज, मेट्रो और रेलवे के डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के रूप में स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं, जो डबल इंजन सरकार की ताकत का प्रमाण हैं।

भारत की सभ्यता व संस्कृति को जोड़ने वाला लोकार्पण: प्रभारी मंत्री

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। बुधावार को जनपद हरदोई से मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 36,230 करोड से की लागत से तैयार 594 कि.मी. लम्बे गंगा एक्सप्रेसवे मेरठ-प्रयागराज का लोकार्पण किया गया। जिसका सीधा प्रसारण जनपद मेरठ के ग्राम बिजौली में मुख्य अतिथि मंत्री पशुधन एवं दुग्ध विकास, राजनैतिक पेंशन उप्र. प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह, व मेरठ के सत्ता पक्ष से जुड़े जनप्रतिनिधियो, अधिकारियो सहित आमजन द्वारा देखा गया। जिलाधिकारी व एसएसपी ने प्रभारी मंत्री व अन्य जनप्रति. निधियो का शॉल ओढाकर व पौधा भेंट कर स्वागत किया।

इस अवसर पर प्रभारी मंत्री ने गंगा एक्सप्रेसवे में अपनी जमीन देने वाले ग्राम प्रधान ब्लॉक अध्यक्ष को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सूचना विभाग की तरफ से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस दौरान सब ने देखा कि गंगा एक्सप्रेसवे यूपी के विकास की नई लाइफ लाइन कैसे बनेगा वहीं प्रभारी मंत्री ने कहा कि यह लोकार्पण कोई आम लोकार्पण नहीं है बल्कि भारत की सभ्यता सांस्कृतिक और उसकी आत्मा को जोड़ने का लोकार्पण है। एक और गंगा एक्सप्रेसवे का निर्माण पूरा हुआ है दूसरी ओर इसके विस्तार की योजना पर भी कार्य शुरू हो गया है, जल्द ही गंगा एक्सप्रेसवे मेरठ से आगे बढकर हरिद्वार तक पहुंचेगा। गंगा एक्सप्रेसवे से कम समय में बड़े बाजारो तक पहुंच मिलेगी यहां खेती के लिए जरूरी इन्फास्ट्रक्चर का विकास होगा, जिससे किसानो की आय बढेगी। गंगा एक्सप्रेसवे यूपी के एक छोर को दूसरे छोर से तो जोड़ता ही है यह एनसीआर की असीम संभावनाओ को भी करीब लायेगा। गंगा एक्सप्रेसवे पर गाड़ियां तो दौडेगी ही इसके किनारे नये औद्योगिक अवसर विकसित होंगे। उप्र. का औद्योगिक विकास भारत की सामरिक ताकत बन रहा है। प्रभारी मंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि आज का दिन ऐतिहासिक दिन है। वर्ष 2021 में प्रधानमंत्री के द्वारा गंगा एक्सप्रेसवे का शिलान्यास किया गया था और वर्ष 2026 में आज के दिन प्रधानमंत्री के द्वारा गंगा एक्सप्रेसवे का लोकार्पण किया जा रहा है। अब मेरठवासी मात्र 6 घंटे में मेरठ से प्रयागराज आसानी से पहुंच सकते है। मेरठ से लखनऊ मात्र 4 घंटे में पहुंच जायेंगे यह एक्सप्रेसवे मेरठवासियो को बहुत बड़ी सौगात है। उन्होने कहा कि हम भाग्यशाली है जो हमने उत्तर प्रदेश में जन्म लिया है। इस दौरान सांसद लक्ष्मीकांत बाजपेई, राज्यमंत्री ऊर्जा डा, सोमेन्द्र तोमर, महापौर हरिकान्त अहलूवालिया, जिला पंचायत गौरव चौधरी, विधायक कैंट अमित अग्रवाल, विधायक सिवालखास गुलाम मौहम्मद, महानगर अध्यक्ष विवेक रस्तौगी, जिलाध्यक्ष हरवीर पाल, जिलाधिकारी डॉ. वीके सिंह, एसएसपी अविनाश पांडे, सीडीओ नूपुर गोयल, नगर आयुक्त सौरभ गंगवार, सीएमओ डॉ. अशोक कटारिया, जिला सूचना अधिकारी सुमित कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारी, गणमान्य व्यक्ति, आमजन उपस्थित रहे।

महिला टीचर से दिनदहाड़े लूट करने वाले दो बदमाश मुठभेड़ में हुए लंगड़े

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। बीती 21 अप्रेल को महिला टीचर से थाना टीपी नगर में दिनदहाड़े चैन स्नैचिंग की वारदात को अंजाम देने वाले दो बदमाशों को पुलिस ने मुठभेड़ में लंगड़ा किया। दोनों बदमाशों को पुलिस ने न सिर्फ कानून का पाठ पढ़ा है बल्कि मुठभेड़ कर यह भी बता दिया कि अब लूटपाट का जमाना चला गया है अब लूटपाठ करने वाला सीधा जेल जाएगा और बड़ा अंजाम भुगतेगा।

बुधवार सुबह टीपी नगर थाना क्षेत्र में चेकिंग अभियान चलाया जा रहा था। इसी दौरान बाइक सवार दो संदिग्ध युवको को पुलिस ने रुकने का इशारा किया, लेकिन वे भागने लगे। पुलिस ने पीछा किया तो बदमाशों ने टीम पर फायरिंग शुरू कर दी। आत्मरक्षा में पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई की। जिसमें दोनों बदमाशों के पैर में गोली लग गई और वह मौके पर ही गिर पड़े। इसके बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान मोहसिन और राशिद, निवासी ब्रह्मपुरी, मेरठ के रूप में हुई है। पुलिस ने उनके कब्जे से दो अवैध तमंचे 315 बोर दो जिंदा कारतूस, दो खोखा कारतूस, बिना नंबर की काली स्प्लेंडर बाइक, छीनी गई सोने की चेन का टुकड़ा और 29,500 रुपये नकद बरामद किए हैं। यह वारदात 21 अप्रैल को हुई थी।

नंदन नगर निवासी हरमीत कौर, जो पेशे से टीचर हैं, स्कूल से घर लौट रही थीं। घर के पास स्कूटी खड़ी कर अंदर जाने के दौरान बाइक सवार दो बदमाशों ने उनके गले से सोने की चेन छीन ली और फरार हो गए थे। पीड़िता की शिकायत पर टीपी नगर पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश शुरू की थी। बुधवार तड़के मुखबिर की सूचना पर पुलिस को पता चला कि दोनों आरोपी मलियाना बंबा से मोहकमपुर पुलिया की ओर आने वाले हैं। सूचना के आधार पर पुलिस ने घेराबंदी कर चेकिंग शुरू की। जिसके दौरान यह मुठभेड़ हुई। सीओ सौम्या अस्थाना ने बताया कि गिरफ्तार दोनों आरोपियों के खिलाफ पहले से कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। पूछताछ में उन्होंने चेन स्नैचिंग की घटना कबूल कर ली है।

मलिन बस्तियों से गंदगी व कॉमर्शियल टैक्स हटाने की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग मेरठ इकाई ने नगर आयुक्त को ज्ञापन सौंपकर शहर की मलिन, दलित एवं अल्पसंख्यक बस्तियों में सफाई व्यवस्था सुधारने और लघु उद्योगों पर लगाए जा रहे कॉमर्शियल टैक्स को समाप्त करने की मांग की है। ज्ञापन में पार्षद रिजवान अंसारी बताया कि इन बस्तियों में रहने वाले लोग छोटे-छोटे घरों में रहकर चप्पल निर्माण, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी का काम, सिलाई-कढ़ाई, बुनाई आदि से अपने परिवार का पालन-पोषण करते हैं। ऐसे में उन पर कॉमर्शियल टैक्स का बोझ अनुचित है।

उन्होंने आरोप लगाया कि कई क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था पूरी तरह चरमराई हुई है। नालियों की नियमित सफाई नहीं हो रही, कूड़ा समय पर नहीं उठाया जाता, जिससे गंदगी के ढेर लग रहे हैं और बरसात में जलभराव की समस्या बढ़ने की आशंका है। संगठन ने नगर निगम से जल्द प्रभावी कार्रवाई करते हुए सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने और छोटे कामगारों को राहत देने की मांग की है।

स्मार्ट मीटर उखाड़कर प्रदर्शन करने वाली महिलाओं पर एफआईआर

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। दो दिन पहले बिजली कटौती से परेशान और विद्युत विभाग द्वारा कोई भी सुनवाई न करने से परेशान मोहनपुर की महिलाओं ने अपने घरों पर लगे स्मार्ट मीटर उखाड़ कर बिजली घर पर प्रदर्शन करते हुए उन्हें फेंक दिए थे इसके बाद बिजली विभाग में हड़कंप बज गया था महिलाओं ने आरोप लगाया था कि बिजली विभाग अंधाधुंध बिजली कटौती कर रहा है बिजली का बिल भी बहुत ज्यादा आ रहा है लेकिन विभाग कोई भी सुनवाई करने को तैयार नहीं है इसलिए वह मजबूर होकर प्रदर्शन करने आई थी। वहीं बिजली मीटर उखाड़ कर फेंकने की घटना को बिजली विभाग ने गंभीरता से लिया और थाना सिविल लाइन में प्रदर्शन करने वाली महिलाओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। सभी के खिलाफ सरकारी काम में बंधा और सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाने के आरोप लगे हैं। पीवीवीएनएल के मुख्य अभियंता वितरण मेरठ रजनीकांत मिश्रा ने कहा कि मीटर उखाड़कर इन लोगों ने सरकारी काम में बांधा डाली है। एक तरह से सरकारी संपत्ति को नुकसान पहुंचाया है जो अपने आप में गंभीर मामला है। ऐसे में अब पुलिस अपना काम करेगी। जिन लोगों ने मीटर उखाड़कर फेंके हैं, उनको चिह्नित कर लिया गया है। उनकी समस्त डिटेल जुटा ली गई है। मुकदमे पर विवेचना शुरू हो गई है। बतादें कि इससे पहले महिलाओं ने बिजली विभाग पहुंच कर बिजली घर पर बाहर से ताला डाल दिया था। जो चर्चा का विषय बना रहा।

भारत – न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता मानव क्षमता निर्माण का भी आधर बने : कुंवर शेखर

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ/ दिल्ली। भारत न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौते के अवसर पर भारत मंडपम नई दिल्ली में आयोजित सेक्टोरल राउंड टेबल में अपने विचार व्यक्त करते हुए शोभित विश्वविधालय के कुलाधिपति एवम् एसोचैम राष्ट्रीय शिक्षा परिषद के अध्यक्ष कुंवर शेखर विजेंद्र ने कहा कि राष्ट्रों के बीच सबसे मजबूत समझौते केवल इस आधार पर याद नहीं रखे जाते कि उन्होंने व्यापार को कितना उदार बनाया, बल्कि इस आधार पर कि उन्होंने मानव क्षमता निर्माण में कितना योगदान दिया।

उन्होंने कहा कि व्यापार समझौतों का मूल्यांकन सामान्यत: शुल्क, बाजार पहुंच और आर्थिक लाभ तक सीमित कर दिया जाता है, जबकि किसी भी महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौते की वास्तविक शक्ति तब सामने आती है जब वह ज्ञान, संस्थागत विश्वास और मानव संसाधन के सुविचारित आदान-प्रदान को दिशा देता है।

उन्होंने कहा कि कृषि, डेयरी विज्ञान, खाद्य प्रसंस्करण, स्वास्थ्य सेवाएं और पर्यावरणीय प्रणालियां ऐसे क्षेत्र हैं जहां भारत और न्यूजीलैंड के बीच व्यावहारिक सहयोग नए परिणाम दे सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि इस समझौते में योग और आयुष को स्थान मिलना विशेष महत्व रखता है। यह इस बात की स्वीकृति है कि भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियां आज वैश्विक स्वास्थ्य, निवारक चिकित्सा और समेकित स्वास्थ्य चिंतन में उपयोगी भूमिका निभा सकती हैं। कुंवर शेखर विजेंद्र ने इस महत्वपूर्ण समझौते को उद्देश्यपूर्ण स्पष्टता और उल्लेखनीय गति के साथ अंतिम रूप देने के लिए भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल तथा न्यूजीलैंड के व्यापार एवं कृषि मंत्री टॉड मैक्ले के प्रति सम्मान व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि समझौते मेजों पर हस्ताक्षरित होते हैं, पर उनका वास्तविक मूल्य कक्षाओं, प्रयोगशालाओं, खेतों और अस्पतालों में निर्मित होता है।

लापता किशोर का शव मिला, ग्रामीणों का प्रदर्शन

नागल। थाना क्षेत्र के गांव जौला से तीन दिन पहले लापता हुए किशोर अजय सैनी का शव सीडकी झबरेडा मार्ग पर गांव बोहडुपुर के निकट सड़क किनारे गड्ढे मे पडा मिला। किशोर की हत्या कर शव यहां डालने का आरोप लगाकर ग्रामीणों ने थाने पर प्रर्दशन कर मामले का खुलासा कर हत्यारोपियों को पकडने की मांग की। मिली जानकारी के मुताबिक गांव के निवासी सागर सैनी का पुत्र अजय सैनी रविवार शाम को उस समय लापता हो गया था जब वह नागल सामान लेने आया था। परिजनों ने गुमशुदगी की तहरीर स्थानीय पुलिस को दी थी और अपने स्तर पर भी उसकी खोज में लगे थे। बताया जाता है कि बीती रात पुलिस ने परिजनों को फोन कर सूचित किया कि अजय का शव बोहडुपुर गांव के निकट निर्माणाधीन पुल के पास पडा है। सूचना पाकर परिजन घटनास्थल पर पहुंचे और शिनाख्त की। पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। सुबह होने पर जब अजय की मौत की खबर ग्रामीणों को पता चली तो महिलाओ सहित थाने मे आ गये और प्रर्दशन कर पुलिस पर मामले मे लापरवाही का कथित आरोप लगाकर रोष व्याप्त करने लगे। उनकी मांग थी कि मामले का खुलासा कर दोषियों को कडी सजा दी जाये। थाने में पंहुच कर देवबंद थानाध्यक्ष रोजन्त त्यागी ने ग्रामीणों को समझाया और आश्वासन दिया कि पुलिस मामले का खुलासा करने मे लगी है और शीघ्र ही दोषियों को गिरफ्तार कर कडी से कडी सजा दिलवाई जायेगी।

शोभित विवि ने नैसकॉम यूचर स्किल प्राइम के साथ एमओयू पर किए हस्ताक्षर

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। शोभित विश्वविद्यालय ने उद्योग और अकादमिक जगत के बीच समन्वय को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए नैसकॉम फ्यूचर स्किल प्राइम इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार की एक पहल के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस सहयोग का उद्देश्य औपचारिक शिक्षा को उद्योग-प्रासंगिक कौशलों के साथ जोड़ना तथा छात्रों की रोजगार क्षमता को बढ़ाना है।

इस एमओयू पर नैसकॉम की ओर से कामना जैन एवं शोभित विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव डॉ. गणेश भारद्वाज ने हस्ताक्षर किए। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. वी.के. त्यागी, डीन अकादमिक्स प्रो. अशोक कुमार, निदेशक प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट डॉ. अभिषेक कुमार डबास , निदेशक डॉ. संदीप

कुमार, निदेशक आउटरीच डॉ. नेहा वशिष्ठ, डॉ. लोमस तोमर, प्रो. दिव्य प्रकाश, प्रो. डॉ. अनिल शर्मा, प्रो. आर.के. जैन सहित विभिन्न विभागों के निदेशक एवं संकाय सदस्य उपस्थित रहे। यह साझेदारी शोभित विश्वविद्यालय की उस प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इस पहल के अंतर्गत छात्रों को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्र एवं उभरती प्रौद्योगिकियों से संबंधित पाठ्यक्रमों का लाभ मिलेगा। जिससे वह अपने शैक्षणिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक दक्षताओं का भी विकास कर सकेंगे। एमओयू हस्ताक्षर समारोह के उपरांत कामना जैन ने छात्रों के साथ एक इंटरैक्टिव ओरिएंटेशन सत्र आयोजित किया। उद्योग-मान्यता प्राप्त प्रमाणपत्रों के महत्व पर प्रकाश डाला और बताया कि इस प्रकार की पहल छात्रों के करियर निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने यह भी समझाया कि ये प्रमाणपत्र छात्रों के लिए गेम चेंजर सिद्ध हो सकते हैं तथा उन्हें रोजगार योग्य बनाने में अत्यंत सहायक हैं। यह पहल एक भविष्य-उन्मुख और कौशल-आधारित शिक्षण प्रणाली को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो छात्रों को बदलती औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करेगी।

जनगणना से जुड़े पहलुओं को बताया

अम्बेहटा। नगर पंचायत कार्यालय में भारत की जनगणना 2027 की तैयारियों को लेकर प्रगणकों और पर्यवेक्षकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। प्रशिक्षण के दूसरे दिन प्रतिभागियों को जनगणना से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं की विस्तार से जानकारी दी गई। ट्रेनर मेजेंद्र कुमार गौड़ और संजीव कुमार शर्मा के निर्देशन में प्रगणकों को घर-घर जाकर मकान सूचीकरण, मकानों की गणना और जनसंख्या से संबंधित आंकड़े एकत्र करने की प्रक्रिया समझाई गई। इस दौरान प्रतिभागियों को बताया गया कि सही और सटीक जानकारी जुटाना जनगणना की सफलता के लिए बेहद आवश्यक है।

विमस के डॉक्टरों ने 18 वर्षीय अयान को दिया नया जीवन

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित वेंक्टेश्वरा विश्वविद्यालय संस्थान के मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पीटल ''विम्स'' के अस्थि रोग विभाग के चिकित्सको ने बिजनौर के एक 18 वर्षीय युवक अयान को बहुत जटिल टोटल हिप रिप्लेसमेंट टीएचआर की सफल सर्जरी द्वारा नया जीवन दे दिया।

सर्जरी करने वाले चिकित्सको की टीम ने बताया कि वैसे तो प्रतिवर्ष अपने हॉस्पीटल में सैकडों ''कूल्हा एवं टुटना प्रत्यारोपण'' होते है पर इस केस में युवक की कूल्हे के आस-पास की सभी हड्डियां एवं मासपेशियां पूरी तरह खराब हो चुकी थी। हड्डी रोग विभाग की इस शानदार उपलब्धि से गदगद समूह अध्यक्ष सुधीर गिरि ने सभी को शुभकामनाऐं देते हुए पश्चिमी यूपी के लोगों को सबसे सस्ती विश्वस्तरीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सीय सेवाऐं देने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है।

टोटल हिप रिप्लेसमेन्ट सम्पूर्ण कूल्हा प्रत्यारोपण टीएचआर की इस सफल जटिल सर्जरी के बारे में विस्तार से बताते हुए वेंक्टेश्वरा के प्रतिकुलाधिपति एवं संस्थापक अध्यक्ष सुधीर गिरि के आधिकारिक प्रतिनिधि डॉ. राजीव त्यागी एवं इस सफल सर्जरी को अंजाम देने वाले वरिष्ठ आर्थो सर्जन डॉ. अल्ताफ ने बताया कि आमतौर पर बीस वर्ष की आयु से पहले कूल्हा प्रत्यारोपण बहुत ही दुर्लभ होता है। अयान की कूल्हे की हड्डी के साथ-2 आस-पास की छोटी हड्डी व मासपेशियां बहुत ही विकृत खराब हालत में थी, एवं यह दिल्ली व गुरूग्राम के नामचीन हॉस्पीटल से ईलाज कराकर वापस निराश लौटा था। मरीज पूरी तरह से स्वस्थ है एवं कुछ दिनों में पूरी तरह चलने फिरने लगेगा। सबसे बड़ी बात कि आयुष्मान के अर्न्तगत यह बिल्कुल मुफ्त हुई है। टीएचआर की इस जटिल सफल सर्जरी करने वालो की टीम में एचओडी डॉ. नजमुल हुदा के निर्देशन में वरिष्ठ हड्डी रोग डॉ. अल्ताफ, डॉ. अरविन्द, डॉ. सचिन टूटू, एनस्थीसिया के डॉ. विपिन एवं डॉ. सुखविन्दर सूक्कू आदि लोग उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों ने कलात्मक कौशल का किया प्रदर्शन

शाह टाइम्स ब्यूरो

देवबन्द। आरके पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन हुआ।

इसमें बच्चों ने उत्साह से भाग लेते हुए अपने कलात्मक कौशल का प्रदर्शन किया। आरके पब्लिक स्कूल प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में कक्षा छह से आठ तक के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसके तहत विद्यार्थियों ने लेबर डे के उपलक्ष्य में विभिन्न पोस्टर बनाए।

कक्षा नौ से 11 तक के छात्रों के लिए राइटिंग स्किल्स पर आधारित गतिविधि हुई। इसमें माता विषय पर बच्चों ने अपने भावनात्मक विचारों को लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया। कक्षा प्ले से यूकेजी के बच्चों ने भी विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस दौरान बच्चों ने मधुर गीतों की भी प्रस्तुति दी। विद्यालय की प्रधानाचार्या मोनिका कपूर एवं शिक्षकों ने सभी विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की गतिविधियां बच्चों के मानसिक, शारीरिक एवं रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सुभारती पॉलिटेक्निक कॉलेज का पूर्व छात्र सम्मेलन 20026 संपन्न

शाह टाइम्स संवाददाता

मेरठ। स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ के सुभारती पॉलिटेक्निक कॉलेज के पूर्व छात्र संघ द्वारा हपूर्व छात्र सम्मेलन 2026 का भव्य एवं सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य ऐसा सशक्त मंच तैयार करना था, जहां पूर्व छात्र अपने पेशेवर अनुभव साझा कर सकें तथा वर्तमान विद्यार्थियों को कैरियर योजना, रोजगार अवसरों और कौशल विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकें। सम्मेलन में विभिन्न विभागों के बड़ी संख्या में पूर्व छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूर्व छात्रों से पुन: संपर्क स्थापित करने, उनकी उपलब्धियों का सम्मान करने तथा विश्वविद्यालय से उनके निरंतर जुड़ाव का उत्सव मनाने के उद्देश्य से इस वार्षिक आयोजन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय की मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रो. डॉ. शल्या राज ने अपने संदेश में कहा कि पूर्व छात्र किसी भी शिक्षण संस्थान की अमूल्य धरोहर होते हैं। उनकी उपलब्धियां विश्वविद्यालय की पहचान को राष्ट्रीय और अंत. रराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करती हैं। विद्यार्थियों को पूर्व छात्रों के अनुभवों से प्रेरणा लेकर अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए सम्मेलन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन एवं शुभारंभ प्रो. डॉ. सुभाष चंद्र तिवारी प्रधानाचार्य के निर्देशन में हुआ। इस दौरान विभागाध्यक्षों के साथ इंजीनियर कुंवर आरिफ अली, इंजीनियर रीना सिंह और इंजीनियर रितु शर्मा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, की पूर्व छात्र विश्वविद्यालय की असली रीढ़ हैं और इसकी प्रगति, प्रतिष्ठा और विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

सम्मेलन में संवादात्मक सत्र, मनोरंजक खेल और रोचक गति. विधियों का आयोजन किया गया। जिनका सभी प्रतिभागियों ने भरपूर आनंद लिया। पूर्व छात्रों ने अपने छात्र जीवन की यादें साझा करते हुए रोजगार के अवसरों, करियर उन्नति तथा भविष्य की संभावनाओं पर बहुमूल्य सुझाव दिए। कार्यक्रम का सफल आयोजन पूर्व छात्र ट्रस्ट की अध्यक्ष डॉ. नूपुर कौशिक तथा इंजी. नियर कुमारी उज्जवल के मार्गदर्शन में किया गया। आयोजन टीम में इंजी. नियर कुंवर आरिफ अली, इंजीनियर इब्रान खान, इंजीनियर संदीप कुमार, और इंजीनियर राहुल कुमार का विशेष योगदान रहा। पूर्व छात्र सम्मेलन 2026 का समापन आनंदमय, भावनात्मक और यादगार वातावरण में हुआ, जिसने पूर्व छात्रों और उनके शिक्षण संस्थान के बीच आजीवन संबंधों को और अधिक मजबूत कर दिया।

विधायक उमर अली खान की मेहनत लाई रंग

शिवालिक पहाडियों पर ईको टूरिज्म पार्क व हथनीकुंड बैराज पर एडवेंचर पार्क को शासन से मंजूरी

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। समाजवादी पार्टी के बेहट विधायक उमर अली खान के प्रयासों से शिवालिक पहाडियों में ईको टूरिज्म पार्क व हथनी कुंड बैराज पर एडवेंचर पार्क स्थापना को शासन से मंजूरी मिल गई है। इसके साथ ही उन्हें हैंडीक्राफ्ट म्यूजियम बनवाने का आश्वासन भी मिला है।

विधायक उमर अली खान आज लखनऊ में पर्यटन स्थायी समिति की बैठक में शामिल हुए। जहां पर्यटन मंत्री द्वारा यह शासन स्तर से मंजूरी की बात कही गई। विधायक उमर अली खान ने हाल ही में पर्यटन महानिदेशक को पत्र लिखकर यह मांग की गई थी। उन्होंने अवगत कराया था कि हथनीकुंड बैराज बेहट विधानसभा क्षेत्र में स्थित है और प्राकृतिक सौंदर्य एवं यमुना नदी के उदम स्थल व पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यदि पर्यटन विभाग द्वारा यहां एक आधुनिक एडवेंचर पार्क की स्थापना की जाये तो यह क्षेत्र पर्यटन मानचित्र पर एक प्रमुख आकर्षण केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है। इस एडवेंचर पार्क के माध्यम से स्थानीय युवाओं को रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे। साथ ही क्षेत्रीय व्यापार एवं आर्थिक गतिविधियों में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त यह स्थान साहसिक खेलों के लिये भी विकसित किया जा सकता है। जिससे देश विदेश से पर्यटकों का आगमन बढेगा। उन्होंने यह भी कहा कि शिवालिक की पहाडियों का एक विस्तृत एवं प्राकृतिक रूप से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र स्थित है, जो अपनी जैव विविधता, प्राकृतिक सौंदर्य एवं पर्यावरणीय महत्व के लिये जाना जाता है। यह क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत संभावनाशील है। इसलिये शिवालिक पहाडी क्षेत्र में एक इको टूरिज्म पार्क की स्थापना की जाये।

पर्यटन समिति की बैठक में पर्यटन मंत्री ने विधायक को दिया हैंडीक्राफ्ट म्यूजियम बनवाने का आश्वासन

विधायक उमर अली खान ने बताया कि बैठक में दोनो ही मांगों को शासन ने मानकर उनके लिये स्वीकृति प्रदान की है। इसके साथ ही पर्यटन मंत्री की ओर से लकड़ी उद्योग को और अधिक आधुनिक बनाने के लिए हैंडीक्राफ्ट म्यूजियम का आश्वासन भी मिला है।

जयंत की रैली में करें बडी भागेदारीः चौ.नीरपाल

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। राष्ट्रीय लोकदल खेल प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष व उत्तराखंड प्रदेश प्रभारी चौ नीरपाल सिंह ने कहा कि 2 मई को उत्तराखंड में राष्ट्रीय लोकदल की अलख जगाने युवा हृदय सम्राट केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी गुरुकुल नारसन के हरजौली जट्ट में आ रहे है। जयंत चौधरी एक बड़ी जनसभा के माध्यम से पार्टी कार्यकर्ताओं को बहुत बड़ा संदेश देकर जायेंगे।

चौधरी नीरपाल सिंह ने क्षेत्र के सभी किसान, मजदूर, नौजवान भाईयों से अपील करते हुए कहा कि अपने प्रिय नेता जयंत चौधरी के विचारों को सुनने के लिए अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर अपने नेता का सम्मान, स्वागत करे। जिलाध्यक्ष राजीव चौधरी एवं क्षेत्रीय अध्यक्ष शारिक चौधरी ने कहा कि चौधरी साहब की मूर्ति का अनावरण ऐतिहासिक पल है।इस सुनहरे पल को यादगार पल बनाना है।

इस दौरान गांव नंगला सलारू के प्रधान रोहित चौधरी, चौ राज. कुमार, देवराज चौधरी, डॉ यशवीर, राजदीप राणा, रमेश कुमार, मोहित कुमार, प्रवेश कुमार, देवा राणा, पुलकित चौधरी आदि उपस्थित रहे।

छात्र-छात्राओं को आग से बचाव के बताये तरीके

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। आईटीएस एकेडमी कंप्यूटर संस्थान में अग्निशमन विभाग द्वारा छात्र-छात्राओं के लिए विशेष आग से बचाव प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभाग के अधिकारियों ने छात्रों को आग लगने के कारणों और उससे बचाव के तरीकों की विस्तृत जानकारी दी।

माधो नगर स्थित संस्थान में अग्निशमन अधिकारियों ने बताया कि 'छोटी-सी लाप. रवाही भी बड़े हादसे में बदल सकती है, इसलिए सतर्कता ही सबसे बड़ा बचाव है।' उन्होंने समझाया कि आग के प्रकार के अनुसार उसे बुझाने के तरीके भी अलग-अलग होते हैं। प्रशिक्षण में बताया गया कि 'गैस सिलेंडर, तेल या शॉर्ट सर्किट से लगी आग को बुझाने की सही तकनीक और जानकारी ही जान बचा सकती है'। पानी से बिजली की आग बुझाने पर करंट का खतरा बढ़ जाता है। छात्रों को फायर एक्सटिंग्विशर चलाने का लाइव डेमो भी दिया गया।

कार्यक्रम में फायर एक्सटिंग्विशर समेत विभिन्न अग्निशमन उपकरणों की कार्यप्रणाली और उपयोग के बारे में बताया गया। छात्रों ने खुद उपकरण चलाकर अभ्यास भी किया। संस्थान के सेंटर मैनेजर मो. फरहान अंसारी ने कहा कि 'समाज में ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों की बहुत जरूरत है। छात्र अगर जागरूक होंगे तो घर-परिवार को भी सुरक्षित रख पाएंगे।'

इस अवसर पर पायल, कीर्ति, निशू, वंश, विनय, ललित, अली सहित संस्थान के कई छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

समारोह को लेकर सैनी समाज का विचार विमर्श

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। सम्राट अशोक शिलालेश की परिक्रमा एवं बुद्ध वंदना, बौद्धिक प्रवचन भव्य समारोह को सफल बनाने के लिए गणमान्य लोगों की बैठक सम्पन्न हुई।

वैष्णवी धाम कालोनी में रवि सैनी के आवास पर आयोजित बैठक में कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आहवान किया गया। साथ ही वक्ताओं ने गौतम बुद्ध की जीवनी पर प्रकाश डाला।

बैठक में पंकज सैनी, शिव कुमार सैनी, दीप चंद, बंटी सैनी, डा. अमरीश सैनी, पदम नगली, धीर सिंह सैनी, राजवीर सैनी, ओमव. ीर, लालू सैनी, अंकित सैनी, धीरज सैनी, नवीन सैनी, डा. राजीव सैनी, अमित सैनी, धर्मवीर सैनी, बबलू प्रधान, रामकुमार प्रधान, गुलशन प्रधान, प्रमोद प्रधान आदि मौजूद रहे। अध्यक्षता ओमपाल सैनी व संचालन डा. किशोर सैनी ने किया।

फरहाद ने सैदपुरा में चलाया स्कूल चलो अभियान

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। स्कूल चलो अभियान के तहत समाजवादी पार्टी के नेता फरहाद आलम ने नकुड विधानसभा के सरसावा ब्लॉक स्थित ग्राम सैदपुरा में गाँव की गलियों में जाकर अभिभावकों से सीधा संपर्क किया। चौपाल से लेकर घर-आंगन तक हर जगह एक ही संदेश दिया गया।

अभियान के दौरान फरहाद आलम को कई ऐसे अभिभावक मिले जो मजबूरी या जानकारी के अभाव में बच्चों को स्कूल नहीं भेज पा रहे थे। उनसे संवाद कर शिक्षा के महत्व को समझाया गया और विश्वास दिलाया गया कि विद्यालय उनके बच्चों के बेहतर भविष्य की पहली सीढ़ी है। फरहाद आलम ने कहा कि आइए हम सब मिलकर संकल्प लें कि हमारे गाँव का कोई भी बच्चा अब स्कूल से दूर नहीं रहेगा। गाँव की तरक्की का रास्ता शिक्षा से होकर ही जाता है। इस दौरान बच्चों के चेहरे की मुस्कान और अभिभावकों की सहमति ने यह साबित कर दिया कि अगर सही मार्गदर्शन मिले तो गाँव का हर घर शिक्षा से जुड़ सकता है। अभिभावकों ने बच्चों को नियमित स्कूल भेजने का संकल्प लिया।

इस दौरान अली पघान, अदनान, इकराम पधान, गालिब सैफी, नोमान सैफी, सोएब सलमानी, शमशाद सैफी, महबूब सैफी, हसीब नयाब, अनस अहमद, साजिद सैफी, अहसान सैफी, ऐश्वर्या नौटियाल, तालिब सैफी, मांगा सैनी, सोयब जर्राह, अबूबकर आदि मुख्य रूप से मौजूद रहे।

मुस्लिम हितों की अनदेखी न होः सोनू

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। अल्पसंख्यक कांग्रेस कमेटी के निर्वतमान प्रदेश उपाध्यक्ष सोनू पठान ने कहा कि लोकसभा एवं विधानसभाओं की सीटों का परिसीमन सच्चर कमेटी की सिफारिशो के अनुरूप ही होना चाहिए ताकि मुस्लिम हितों की अनदेखी न हो।

सोनू पठान ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व वाली यूपीए सरकार में मुसलमान के सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक पिछड़े पन के अध्ययन के लिए बनाई गई सच्चर कमेटी ने सन 2006 में जारी अपनी रिपोर्ट में सुझाव दिया था कि चुनाव क्षेत्र की परिसीमन प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रखना रखा जाना चाहिए कि अल्पसंख्यक बहुल क्षेत्र को अनुसूचित वर्ग के लिए आरक्षित न किया जाए, सच्चर कमेटी की सिफारिशो की समर्थक सेकुलर राजनीतिक पार्टियों को आगामी प्रस्तावित परिसीमन पर सच्चर कमेटी की सिफारिशों के अनुरूप स्टैंड लेना चाहिए यदि इस मुद्दे पर चुप्पी साधी गई तो मुसलमानों के लिए विधानसभा एवं लोकसभा में पहुंच पाना मुश्किल हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि सच्चर कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में यह तथ्य रखा था की मुस्लिम बहुल सीटों को अनुसूचित वर्ग के लिए सुरक्षित करके मुसलमानों के जनप्रतिनिधि बनने के अवसरों को बाधित कर दिया जाता है जिसके कारण वह अपनी आबादी के अनुपात में सदन में नहीं पहुंच पाते। उन्होंने नगीना सुरक्षित लोकसभा सीट का उदाहरण देते हुए कहा कि नगीना में 22 परसेंट अनुसूचित आबादी हैं और मुसलमानों की आबादी 46% है लेकिन दोगुनी से ज्यादा आबादी होने के बावजूद वह अपना जन प्रतिनिधि नहीं चुन सकते ।

पार्षदों की जुबानी जंग के बीच कूदी फर्नीचर एसोसिएशन

पदाधिकारियों ने कहा- अगस्त 2025 में डीएम व नगर आयुक्त को पत्र भेजने के बाद शुरू हुई थी सडक निर्माण प्रक्रिया

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। खाताखेडी क्षेत्र में सडक निर्माण को लेकर पार्षदों के बीच वाहवाही लूटने की होड मचने के चलते पार्षद और पार्षद प्रति. निधि आरोपों के साथ आमने सामने है। वहीं वुड कार्विंग फर्नीचर एसोसिएशन ने अपने स्तर से सडक बनवाने दावा किया है। साथ ही दोनो पक्षों से संयम बरतने की अपील की।

वार्ड 43 के पार्षद मंसूर बदर तथा वार्ड 56 के पार्षद प्रतिनिधि भूरा मलिक और वार्ड 36 के पार्षद प्रतिनिधि डॉ. एहतेशाम के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है, जिससे क्षेत्र का माहौल गर्मा गया है। बताया जा रहा है कि पार्षद मंसूर बदर ने सड़क निर्माण का श्रेय अपने प्रयासों को देते हुए अन्य पक्षों पर तीखी टिप्पणी की, वहीं भूरा मलिक पक्ष ने भी पलटवार करते हुए आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग किया। दोनों पक्षों के बीच चल रहे इस वाक् युद्ध से स्थानीय लोगों में नाराजगी देखी जा रही है। इसी विवाद को लेकर खाता खेड़ी क्षेत्र के राज कॉलोनी स्थित परवेज मलिक के आवास पर खाता खेड़ी वुड कार्विंग फर्नीचर एसोसिएशन की बैठक आयोजित की गई। बैठक में दोनों पक्षों को अनावश्यक बयानबाजी से बचने की हिदायत दी गई और स्पष्ट कहा गया कि सड़क निर्माण का श्रेय लेने की होड़ गलत है एसोसिएशन पदाधिकारियों ने बताया कि सड़क निर्माण की प्रक्रिया उनके द्वारा 26 अगस्त 2025 को जिलाधिकारी और 27 अगस्त 2025 को नगर आयुक्त को भेजे गए पत्र के बाद शुरू हुई थी। इसके बाद नगर आयुक्त शिपू गिरी ने टीम के साथ मौके का निरीक्षण कर निर्माण का आश्वासन दिया था। ज्ञात हो कि यह सड़क वर्ष 2013 में नगर निगम द्वारा बनाई गई थी, लेकिन कुछ समय बाद इसका एक हिस्सा क्षतिग्रस्त होकर बारिश के दौरान जलभराव का कारण बनने लगा। इस मार्ग से देश-विदेश के खरीदारों का आना-जाना रहता है, जिससे शहर की छवि पर भी असर पड़ता है। एसोसिएशन ने दोनों पार्षद पक्षों द्वारा झूठी वाहवाही लेने की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि जनहित के कार्यों को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का माध्यम न बनाया जाए। बैठक में अब्दुल कयूम साबरी, सलीम चौधरी, इकबाल मंसूरी, नजर मोहम्मद उर्फ बुरा दीवान, हैदर रऊफ सिद्दीकी, परवेज मलिक, हाजी शहीद, नवील अहमद, फुरकान मलिक और खालिद समेत कई सदस्य मौजूद रहे।

पार्षद मंसूर बदर ने कराई रिपोर्ट दर्ज

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। नगर निगम क्षेत्र में सड़क निर्माण को लेकर शुरू हुआ विवाद अब गंभीर रूप लेता जा रहा है। पार्षद मंसूर बदर और पार्षद प्रति. निधि भूरा मलिक के बीच हुए विवाद के बाद मामला थाने तक पहुंच गया है।

बताया जा रहा है कि विवाद के दौरान पार्षद मंसूर बदर के खिलाफ पार्षद प्रतिनिधि भूरा मलिक द्वारा अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया गया। आरोप है कि इस दौरान भड़काऊ टिप्पणियां की गईं और बिरादरी को लेकर भी अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल करते हुए खुलेआम धमकी दी गई। घटना के बाद पार्षद मंसूर बदर ने थाना कुतुबशेर में तहरीर देकर भूरा मलिक के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है। साथ ही, उन्होंने पार्षदों के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ एसपी सिटी व्योम बिंदल से मुलाकात कर वायरल वीडियो के आधार पर आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने जांच शुरू कर दी।

नालियां बीमारियों को दी रही न्यौता

शाह टाइम्स संवाददाता

चिलकाना। ग्राम पंचायत दुमझेडी के गांव बैंगनी में सफाई व्यवस्था ठप्प होने के चलते मलबे और कूड़े से लबालब नालियां सीधा सीधा बीमारियों को न्यौता दे रही हैं।

ग्राम निवासी शिकायतकर्ता ने जनसुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराते हुए वर्तमान ग्राम प्रधान द्वारा अपने कार्यकाल में सफाई व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था व स्वच्छता अभियान के तहत निक. ाली गयी धनराशि व धरातल पर किये गये कार्यों की जांच करायें जाने की मांग की है। आरोप है कि बैंगनी गांव में महीनों से साफ सफाई न होने के चलते बहुत सी नालियां मलबे से लबालब भर चुकी हैं। गंदगी और रुके हुए पानी के कारण गांव में संक्रामक बीमा. रियों के फैलने का खतरा बढ़ गया है। वहीं गांव में लगे कूड़े के ढेर श्स्वच्छ भारत मिशनश के दावों पर सवालिया निशान भी लगा रहे हैं।शिकायतकर्ता का कहना है कि स्वच्छता अभियान सिर्फ कागजों में सिमट कर रह गया है।

प्रशिक्षण के बाद हो रहा गन्ना सर्वेः ओपी सिंह

शाह टाइम्स ब्यूरो

सहारनपुर। उप गन्ना आयुक्त ओ. पी. सिंह ने बताया कि गन्ना सर्वे में लगने वाले कर्मचारियों का प्रशिक्षण के बाद ही सर्वे कार्य किया जा रहा है।

उप गन्ना आयुक्त मण्डल में फील्ड निरीक्षण करते हुए किसानों से वार्ता कर रहे थे। उन्होंने किसानों को अवगत कराया कि गन्ना आयुक्त उत्तर प्रदेश के द्वारा पूरे प्रदेश के लिए पेराई सत्र 2026-27 के लिए गन्ना सर्वेक्षण नीति जारी कर दी गयी है। सर्वेक्षण कार्य 01 मई से प्रारम्भ कर 30 जून तक पूर्ण किया जायेगा। गन्ना उत्पादन के सही आंकलन के लिये सर्वेक्षण कार्य में शुद्धता, पारदर्शिता एवं गन्ना किसानों की समस्याओं के निस्तारण के लिये गन्ना सूचना प्रणाली एवं स्मार्ट गन्ना किसान के अन्तर्गत एंड्रॉयड बेस्ड मशीन के माध्यम से जी.पी.एस. सर्वे कराया जायेगा। गन्ना किसानों द्वारा बोये गये गन्ना क्षेत्रफल के सम्बन्ध में वेबसाइट पर गन्ना कृषकों के घोषणा-पत्र उपलब्ध होंगे तथा सम्बन्धित किसानों को अपना घोषणा पत्र स्वयं ऑनलाइन भरना होगा। जिन किसानों के द्वारा ऑनलाइन घोषणा पत्र उपलब्ध नहीं कराये जायेंगे, ऐसे गन्ना कृषकों का सट्टा आगामी पेराई सत्र 2026-27 में विभाग द्वारा

कभी भी बन्द किया जा सकता है।

सर्वे नीति में पारदर्शिता के दृष्टिगत सर्वे टीम के खेत पर पहुं. चने की तिथि, सर्वे टीम के इंचार्ज के नाम व मोबाइल नम्बर की सूचना सम्बन्धित टीम द्वारा एस. एम. एस. के माध्यम से 3 दिन पूर्व किसानों को प्रेषित कर दी जायेगी। गन्ना सर्वेक्षण कार्य संयुक्त टीम के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा, इस टीम में राजकीय गन्ना पर्यवेक्षक, चीनी मिल कार्मिक के साथ साथ सम्बन्धित सर्किल के किसान की उपस्थिति अनिवार्य होगी। जिन गन्ना परिषदों में गन्ना सर्वेक्षण हेतु बनाई गई अस्थायी सर्किलों के सापेक्ष राजकीय गन्ना पर्यवेक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता नहीं होगी, केवल उन्हीं परिषदों में राजकीय गन्ना पर्यवेक्षकों की कमी के सापेक्ष उतनी ही संख्या में समिति कर्मचारी लगाये जा सकेंगे, प्रत्येक सर्किल हेतु एक सर्किल इन्चार्ज नियुक्त किया जायेगा। गन्ना सर्वेक्षण कार्य से पूर्व चीनी मिल जोन स्तर पर सर्वे कार्य में लगाये गये कार्मिकों को प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। किसी भी गन्ना कृषक के सर्वेक्षित भूमि का सत्यापन राजस्व विभाग की वेबसाइट से किया जा सकता है। चीनी मिलें गन्ना सर्वेक्षण के अन्तिम आंकड़ें सीधे विभागीय वेबसाइट पर ऑनलाइन पोर्ट करेंगी तथा अपनी वेबसाइट पर प्रदर्शित करेंगी। पौधे गन्ने का सर्वे खेत की चारो भुजाओं को नापते हुए क्षेत्रफल का आगणन किया जायेगा। गन्ना सर्वेक्षण में जी.पी. एस. का प्रयोग करते समय प्रथम पेड़ी, द्वितीय पेड़ी एवं तृतीय पेड़ी का कम्प्यूटरीकृत केन सर्वे रजिस्टर में दर्ज किया जायेगा तथा कम्प्यूटरीकृत गश्ती केन रजिस्टर के प्रत्येक पृष्ठ पर सर्वे टीम द्वारा हस्ताक्षर भी किये जायेंगे।

पुलिस और दूतावास की सक्रियता से मौत के मुंह से सुरक्षित लौटा अर्पित

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। विदेश में नौकरी के सपने लेकर गए युवक को अपहरणकर्ताओं ने बंधक बनाकर भारी फिरौती की मांग की थी। सहारनपुर पुलिस, उच्च अधिकारियों और भारतीय दूतावास की त्वरित और समन्वित कार्रवाई के चलते युवक को मौत के मुंह से सुरक्षित वापस लाया गया है।

गाँव नौसरहेड़ी निवासी अरविंद शर्मा ने बताया कि उनका पुत्र अर्पित 20 अप्रैल को वीजा लगवाकर अजरबैजान गया था। वहाँ पहुँचने की सूचना देने के कुछ दिन बाद ही परिजनों के पास एक अज्ञात नंबर से कॉल आई। अपहरणकर्ताओं ने अर्पित को बंधक बनाने का दावा करते हुए उसकी रिहाई के बदले 20 लाख रुपये की फिरौती मांगी। परिजनों के अनुसार, बदमाश लगातार नंबर बदलकर कॉल कर रहे थे और वीडियो कॉल के जरिए अर्पित की पिटाई का लाइव दृश्य दिखाकर परिवार पर दबाव बना रहे थे। घटना की गंभीरता को देखते हुए थाना फतेहपुर प्रभारी निरीक्षक वीरेन्द्र सिंह राणा ने तत्काल उच्च अधिकारियों को सूचित किया। मामला विदेश से जुड़ा होने के कारण एलआईयू के माध्यम से जानकारी जुटाई गई और तुरंत अजरबैजान स्थित भारतीय दूतावास को अवगत कराया गया। स्थानीय पुलिस की इस त्वरित सक्रियता और दूतावास के सहयोग का परिणाम यह रहा कि अर्पित को सकुशल रिहा करा लिया गया। घर पहुँचने के बाद अर्पित शर्मा ने अपनी आपबीती साझा करते हुए बताया कि वह अपने जम्मू निवासी साथी सचिन शर्मा के साथ अजरबैजान एयरपोर्ट पर थे। वहाँ से गंतव्य तक पहुँचने के लिए जब वे ऑनलाइन टैक्सी की तलाश कर रहे थे, तभी कुछ ठगों ने उन्हें अपनी टैक्सी में बैठा लिया। अर्पित ने बताया गाड़ी में बैठाने के बाद हमें नशीला पदार्थ देकर बेहोश कर दिया गया और एक तहखाने में कैद कर लिया गया। अपहरणकर्ता लगातार मारपीट कर रहे थे और परिवार से पैसे माँग रहे थे। सौभाग्य से, वहाँ की स्थानीय पुलिस को इस गिरोह की जानकारी थी। पुलिस की छापेमारी के दौरान ही मुझे सुरक्षित छुड़ाया गया। उस समय मैं पुलिस की सुरक्षा में ही था, तभी भारतीय दूतावास को मेरे अपहरण की सूचना मिली।

अर्पित की सकुशल वापसी से गाँव नौसरहेड़ी और परिजनों में खुशी का माहौल है। अर्पित और उनके पिता ने सहारनपुर पुलिस, थाना प्रभारी वीरेन्द्र सिंह राणा और भारतीय दूतावास का आभार व्यक्त किया है, जिनके प्रयासों से एक अनहोनी टल गई और अर्पित सही सलामत अपने घर वापस लौट आया।

सुनी समस्याएं

सहारनपुर। पुलिस उपमहा. निरीक्षक सहारनपुर परिक्षेत्र अभिषेक सिंह द्वारा परिक्षेत्र कार्यालय में जनसुनवाई का आयोजन किया गया।

इस दौरान परिक्षेत्र के विभिन्न जनपदों से आए फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना गया। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण, निष्पक्ष, पारदर्शी एवं प्रभावी निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए। डीआईजी अभिषेक सिंह ने कहा कि प्रत्येक शिकायत को संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ लेते हुए उसका निस्तारण सुनिश्चित करें।

बेटियों को गुड टच-बैड टच की दी जानकारी

शाह टाइम्स संवाददाता

छुटमलपुर। थाना फतेहपुर पुलिस द्वारा महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण के उद्देश्य से एक सराहनीय पहल की गई है थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कस्बा छुटमलपुर में पुलिस टीम द्वारा एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका मुख्य केंद्र बिंदु महिला सुरक्षा और सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन था।

इस अभियान का नेतृत्व महिला उप निरीक्षक मिथिलेश राठौर ने किया उनके साथ महिला रिक्रूट आरक्षी संस्था यादव और रिक्रूट आरक्षी अंकित भी मौजूद रहे पुलिस टीम ने कस्बे की महिलाओं और बालिकाओं से सीधा संवाद किया। पुलिस टीम ने किशोरियों को गुड टच और बैड टच के बीच का अंतर बेहद सरल और व्यावहारिक भाषा में समझाया।

इस जन जागरूकता अभियान के माध्यम से पुलिस ने 1090 और 112 जैसी महिला हेल्पलाइन नंबरों की उपयोगिता भी समझाई ताकि किसी भी आपातकाल. ीन स्थिति में महिलाएं बिना डरे सहायता प्राप्त कर सकें पुलिस का यह प्रयास स्थानीय लोगों के बीच सुरक्षा और विश्वास की भावना को मजबूत करने वाला रहा।

सरकार किसानों और ब्राह्मणों के हितों पर नहीं दे रही ध्यानः पाण्डेय

सिंगोली तगा गांव में किया गया साजवादी पार्टी द्वारा भाईचारा जनसभा का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

खेकड़ा। क्षेत्र के सिंगोली तगा गांव में साजवादी पार्टी द्वारा एक भाईचारा जनसभा का आयोजन किया। इस जनसभा को बलिया से सपा सांसद सनातन पाण्डेय ने संबो. धित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सपा प्रदेश सचिव संजीव त्यागी ने की, जबकि संचालन रविशंकर शर्मा ने किया। जनसभा के दौरान 360 खाप के चौधरी नरेश शर्मा ने सरकार को चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि यदि ब्राह्मण समाज का सम्मान नहीं किया गया, तो इसके गंभीर राजनी. तिक परिणाम हो सकते हैं। चौधरी नरेश शर्मा ने यह भी कहा कि ब्राह्मण समाज में सरकार बनाने और बदलने की ताकत है। उन्होंने यूजीसी सहित अन्य मुद्दों पर भी सरकार की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए। मुख्य अतिथि सांसद सनातन पाण्डेय ने अपने संबोधन से पूर्व जनसभा में उपस्थित देहाती कलाकारों से रागनी की फरमाइश की। अपने भाषण में सांसद पाण्डेय ने केंद्र और राज्य सरकारों पर किसानों की अनदेखी का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों और ब्राह्मणों के हितों पर ध्यान नहीं दे रही है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जिक्र करते हुए कहा कि वे हमेशा किसानों के हक के लिए लड़ते रहे। यदि वे आज जीवित होते, तो किसानों की मौजूदा स्थिति देखकर बहुत दुखी होते। पाण्डेय ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि को अपर्याप्त बताया। उन्होंने कहा कि 2000 रुपये की सहायता से किसानों की समस्याएं हल नहीं हो सकतीं। उन्होंने आरोप लगाया कि किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य नहीं मिल रहा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही है। सांसद पाण्डेय ने पश्चिम बंगाल चुनावों का भी उल्लेख किया। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा वहां प्रशासनिक मशीनरी के सहारे जीत हासिल करना चाहती है और मतदाताओं को डराने का प्रयास कर रही है। उन्होंने उत्तर प्रदेश में बुलडोजर कार्रवाई पर भी सरकार को घेरा। पाण्डेय ने कहा कि असली माफियाओं पर कार्रवाई नहीं हो रही है, बल्कि गरीब और कमजोर वर्गों को निशाना बनाया जा रहा है।

इस अवसर पर सपा जिलाध्यक्ष रविन्द्र देव, पूर्व जिलाध्यक्ष बिल्लू प्रधान, रवि बैसला, राहुल यादव, नंदकिशोर त्यागी (फौजी), कृष्णवीर त्यागी (सामाजिक कार्यकर्ता), 360 खाप के चौधरी उमेश शर्मा सहित कई गणमान्य व्यक्ति मंच पर उपस्थित थे। जनसभा में सपा नेताओं ने एकजुट होकर सरकार की नीतियों के खिलाफ आवाज उठाई।

24 घंटों से बिजली आपूर्ति बाधित, ग्रामीणों ने बिजली विभाग के खिलाफ आक्रोश

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। टुकाली गांव में पिछले 24 घंटों से बिजली आपूर्ति बाधित होने के कारण ग्रामीणों ने बिजली विभाग के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। ग्रामीणों ने उच्च अधिका. रियों से शकायत भी दर्ज कराई है।

फुलैरा बिजली घर से जुड़े टुकाली गांव के निवासियों ने आरोप लगाया कि 24 घंटे से बिजली न होने के कारण उन्हें भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण मनोज ने बताया कि पूरी रात बिजली न होने के कारण ग्रामीणों को जागकर रात काटनी पड़ी। देशराज ने कहा कि गर्मी में लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा, जबकि बाबूराम ने बताया कि बिजली कटौती के कारण बच्चे रात भर परेशान रहे। इन समस्याओं को लेकर ग्रामीण एकजुट हुए और बिजली विभाग के खिलाफ हंगामा करते हुए प्रदर्शन किया। उन्होंने उच्च अधिकारियों से बिजली आपूर्ति तुरंत सुचारू करने की मांग की। प्रदर्शन करने वालों में देवराज, दीपक, बाबूराम, राजेंद्र, मनोज, मीना, सुशीला, नीतू, टेकचंद और बालकिशन सहित कई ग्रामीण शामिल थे। फुलैरा बिजली घर के ऑपरेटर आदेश शर्मा ने बताया कि लाइनमैन को मौके पर भेजकर बिजली फाल्ट को ठीक करा दिया गया है। उन्होंने पुष्टि की कि गांव में बिजली आपूर्ति सुचारू रूप से बहाल कर दी गई है।

जिलाधिकारी ने किया 25.33 करोड रुपए से निर्माणाधीन परियोजना कंपोजिट विद्यालय का निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। अब बागपत के बच्चों को बेहतर पढ़ाई के लिए दिल्ली की बस पकड़ने की मजबूरी धीरे-धीरे खत्म होने जा रही है। जिले में एक ऐसा शैक्षिक परिसर आकार ले रहा है, जो न सिर्फ सुविधाओं के मामले में बड़े शहरों को टक्कर देगा, बल्कि गांव-कस्बों के बच्चों के सपनों को भी यहीं पंख देगा। करीब 19,460 वर्गमीटर में विकसित हो रहा यह अत्याधुनिक संस्थान शिक्षा के उस मॉडल की झलक दे रहा है, जिसकी कमी लंबे समय से महसूस की जा रही थी। लगभग 6,100 वर्गमीटर में बन रहा मुख्य भवन, तीन मंजिला संरचना और एक ही परिसर में पढ़ाई से लेकर खेल और तकनीक तक की पूरी व्यवस्था-यह सब मिलकर बागपत के शैक्षिक नक्शे को बदलने की तैयारी कर रहे हैं। जिलाधिकारी अस्मिता लाल ने आज 25.33 करोड रुपए से निर्माणाधीन परियोजना कंपोजिट विद्यालय बालैनी का निरीक्षण किया और कार्यदाई संस्था को समय अंतर्गत कार्य गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के निर्देश दिए।

अभी तक जिले के सैकड़ों परिवार अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा दिलाने के लिए बाहर भेजने को मजबूर रहे हैं। समय, पैसा और सुरक्षा-तीनों की चिंता अलग। ऐसे में यह संस्थान एक बड़े समाधान के रूप में सामने आ रहा है, जहां 16 से अधिक आधुनिक कक्षाएं स्मार्ट क्लास के रूप में तैयार की जा रही हैं। यहां पढ़ाई सिर्फ ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि डिजिटल स्क्रीन, इंटरैक्टिव लर्निंग और प्रैक्टिकल अप्रोच के जरिए बच्चों को सिखाया जाएगा।

खेल सुविधाओं को भी नहीं किया गया नजरअंदाज

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, मैथ्स और आईसीटी की अलग-अलग लैब इस बात का संकेत हैं कि अब शिक्षा रटने से आगे बढ़कर समझने और करने की दिशा में जाएगी। इस पूरे प्रोजेक्ट की सबसे दिलचस्प कड़ी है। प्रस्तावित रोबोटिक लैब, जो बागपत जैसे जिले में तकनीकी शिक्षा के नए दरवाजे खोलेगी। आज के दौर में जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑटोमेशन तेजी से बढ़ रहे हैं, वहां यह सुविधा छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने में अहम भूमिका निभा सकती है। यानी जो बच्चे अब तक किताबों में विज्ञान पढ़ते थे, वे अब उसे अपने हाथों से बना और समझ भी सकेंगे। संस्थान की योजना सिर्फ पढ़ाई तक सीमित नहीं रखी गई है। यहां आर्ट एंड क्राफ्ट, म्यूजिक, डांस और योगा के लिए अलग-अलग कक्ष बनाए जा रहे हैं, जिससे बच्चों को अपनी रुचियों के अनुसार आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। खेल सुविधाओं को भी नजरअंदाज नहीं किया गया है। ओपन जिम, रेस ट्रैक, वॉलीबॉल और बैडमिंटन कोर्ट यह बताते हैं कि शिक्षा के साथ फिटनेस और अनुशासन को भी बराबर महत्व दिया जा रहा है। छात्रों की बुनियादी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए मिड-डे मील के लिए किचन और डाइनिंग हॉल की व्यवस्था की जा रही है, जहां एक साथ 150 से अधिक छात्र भोजन कर सकेंगे। इसके साथ ही बाल वाटिका की स्थापना छोटे बच्चों के लिए मजबूत शुरुआत का आधार बनेगी। छात्रावास (डार्मिटरी) और स्टाफ आवास की व्यवस्था यह सुनिश्चित करेगी कि दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले बच्चों को भी किसी तरह की असुविधा न हो।

एक नजर

बागपत प्रशासन की पहलः अब गर्मी में कोई बेजुबान पशु पक्षी नहीं रहेगा प्यासा

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। झुलसाती गर्मी और बढ़ते जल संकट के बीच बागपत से एक ऐसी पहल सामने आई है, जो न सिर्फ प्यासे पशु-पक्षियों को राहत दे रही है, बल्कि समाज को करुणा और जिम्मेदारी का संदेश भी दे रही है। जिला. धिकारी अस्मिता लाल की प्रेरणा से शुरू हुआ अभियान एक सकोरा-जीवन के नाम अब जन-आंदोलन का रूप लेने लगा है।

जिलाधिकारी की इस संवेदनशील पहल से प्रेरित होकर आज एनिमल वेलफेयर वॉलंटियर्स ने प्रशासन के सहयोग से 50 सकोरे प्राप्त किए। इन सकोरों को स्वयंसेवक जिम्मेदारी के साथ अभियान चलाकर निराश्रित और बेजुबान पशु-पक्षियों के लिए अलग-अलग स्थानों पर स्थापित करेंगे, ताकि भीषण गर्मी में उन्हें पानी की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। इस अभियान के तहत एनिमल वेलफेयर वॉलंटियर्स टीम से स्वयंसेवक अमन कुमार के नेतृत्व में युवाओं ने आगे बढ़कर मिसाल पेश की। शाहपुर बड़ौली से आकाश तोमर, मुजफ्फरपुर पोइस से कपिल कुमार, रमाला से मनीष, फैजपुर निनाना से गौरव कुमार और बागपत कस्बे से वैशाली, शिकोहपुर से वंश समेत कई युवाओं ने सकोरे लेने की पहल की। ये सभी अपने-अपने गांव और कस्बों में बढ़ती गर्मी को देखते हुए इन्हें स्थापित करेंगे। दरअसल, एक सकोरा-जीवन के नाम अभियान सिर्फ एक जल पात्र रखने की पहल नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच टूटते संतुलन को फिर से जोड़ने का एक प्रयास है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण, घटते जल स्रोतों और लगातार बढ़ते तापमान के बीच यह पहल एक मजबूत संदेश देती है-विकास के साथ-साथ अन्य जीवों के प्रति हमारी जिम्मेदारी भी उतनी ही जरूरी है। इस अभियान की सबसे बड़ी ताकत इसकी सरलता और सहभागिता है। इसमें न कोई औपचारिक पंजीकरण, न कोई खर्च और न ही कोई जटिल प्रक्रिया-बस एक सकोरा, थोड़ी सी पानी की मात्रा और नियमित देखभाल। इतनी सी पहल किसी प्यासे पक्षी या भटके जानवर के लिए जीवनदान बन सकती है। यही सहजता इसे आमजन के बीच तेजी से लोकप्रिय बना रही है। प्रशासन की ओर से भी आम लोगों से अपील की गई है कि वे अपने घरों, दुकानों, कार्यालयों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थानों पर जल पात्र रखें। यह छोटा-सा कदम न केवल पशु-पक्षियों को राहत देगा, बल्कि समाज में सहअस्तित्व, संवे. दनशीलता और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करेगा।

शाह टाइम्स
स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजड़ू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं 77/3 गर्ग कॉम्पलेक्स ई.के. रोड निकट एन.ए.एस. कालिज, मेरठ (उप्र) से प्रकाशित।
सम्पादकः
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
☎0121-4005303, 4007303
मुख्यालयः
मोबाइल-9720007290
UPHIN/2007/20661
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

पुलिस मुठभेड़ के दौरान घायलावस्था में लुटेरा गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। शहर कोतवाली पुलिस ने चेकिंग अभियान के दौरान हुई मुठभेड़ में एक लुटेरे को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 24 घंटे से भी कम समय में लूट की इस वारदात का सफल अनावरण किया। मुठभेड़ में घायल लुटेरे को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

गिरफ्तार लुटेरे के पास से बिना नंबर प्लेट की एक मोटरसाइकिल, लूटा गया मोबाइल फोन, 1700 रुपये नकद, एक अवैध तमंचा, एक जिंदा कारतूस और दो खोखा कारत. ूस बरामद हुए हैं। पीड़ित ने 28 अप्रैल को कोतवाली पर शिकायत दर्ज कराई थी। अमरोहा जनपद कानपुर निवासी अमर पुत्र अब्दुल सलाम ने शहर कोतवाली में तहरीर दी थी। उन्होंने बताया कि जब वे अपने भांजे आरिफ और सागर के साथ बागपत से काठा खेकड़ा मार्ग से जा रहे थे, तभी अंधेरे का फायदा उठाकर बाइक सवार अज्ञात बदमाशों ने उनके साथ मारपीट की औरफोन व नकदी लूट ली। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत मुकदमा दर्ज किया और जंगल में घेराबंदी शुरू कर दी। चेकिंग के दौरान एक बाइक पर आता हुआ व्यक्ति दिखाई दिया। पुलिस ने उसे रोकने का प्रयास किया, लेकिन चालक ने रफ्तार बढ़ा दी। इस दौरान हुई मुठभेड़ में पाली, बागपत निवासी अभिषेक को गिरफ्तार किया गया। उसके पैर में गोली लगने से वह घायल हो गया। अभिषेक के कब्जे से लूट में इस्तेमाल की गई बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल, तमंचा, कारत. ूस, 1700 रुपये और लूटा गया मोबाइल बरामद हुआ है। पुलिस अब उसके अन्य साथियों की तलाश कर रही है। सीओ विजय चौधरी ने बताया कि लूट के आरोपी से मुठभेड़ हुई, जिसमें आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और मामले की छानबीन जारी है। घायल आरोपी का उपचार अस्पताल में चल रहा है।

दिव्यांगजनों के लिए रैंप

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। सुरक्षा और सुगमता के मोर्चे पर भी यह संस्थान पीछे नहीं है। पूरे परिसर को सीसीटीवी निगरानी में रखा जाएगा, वहीं दिव्यांगजनों के लिए रैंप और आसान पहुंच की व्यवस्था इसे समावेशी बनाती है। अलग-अलग स्टाफ रूम, टॉयलेट्स और कंट्रोल रूम जैसी व्यवस्थाएं यह संकेत देती हैं कि संचालन को व्यवस्थित और आधुनिक तरीके से डिजाइन किया गया है। परिसर का विकास सिर्फ भवनों तक सीमित नहीं है। इंटरलॉकिंग रोड, सीसी रोड, ड्रेनेज सिस्टम, ट्यूबवेल जैसी बुनियादी सुविधाओं के साथ इसे एक पूर्ण विकसित कैंपस के रूप में तैयार किया जा रहा है। वहीं सोलर प्लांट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग और आरओ सिस्टम जैसी व्यवस्थाएं इसे पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार भी बनाती हैं। यानी यह संस्थान केवल पढ़ाई का केंद्र नहीं, बल्कि सतत विकास का भी उदाहरण बनने की ओर बढ़ रहा है। इस परियोजना का असर केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहेगा। स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़ेंगे, आसपास के इलाकों में आर्थिक गतिविधियां तेज होंगी और जिले में एक सकारात्मक विकास का माहौल बनेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि अब अभिभावकों को अपने बच्चों को दूर भेजने की चिंता से राहत मिलेगी और बच्चे अपने ही जिले में बड़े सपने देखने और उन्हें पूरा करने का अवसर पा सकेंगे। आने वाले वर्षों में यही परिसर उन बच्चों की कहानियां गढ़ेगा, जो कभी बेहतर शिक्षा के लिए शहरों की ओर देखते थे, और अब अपने ही जिले से आगे बढ़कर देश-दुनिया में पहचान बनाएंगे।

अपैरल मेड-अप्स एंड होम फर्निशिंग सेक्टर स्किल काउंसिल के चेयरमैन बने प्रेमल उदानी

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। देश के ग्रामीण युवाओं को आधुनिक तकनीक से जोड़ने और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बागपत में एक बड़ी शुरुआत हुई थी। हाल ही में चौधरी अजीत सिंह सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिजाइन एंड फैशन टेक्नोलॉजी का उद्घाटन किया था। इस केंद्र की स्थापना अपैरल मेड-अप्स एंड होम फर्निशिंग सेक्टर स्किल काउंसिल द्वारा की गई थी।

कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय के अधीन कार्यरत अपैरल मेडअप्स एंड होम फर्निशिंग सेक्टर स्किल काउंसिल ने इंडस्ट्री लीडर प्रेमल उदानी को फिर से अपना नया चेयरमैन नियुक्त किया है। उन्होंने पद्मश्री डा.ए.सक्थिवेल का स्थान लिया है, जिन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान क्षेत्र में स्किलिंग पहलों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रेमल उदानी के पास परिधान और कपड़ा उद्योग में 40 से अधिक वर्षों का व्यापक अनुभव है। वे देश की सबसे पुरानी और अग्रणी गारमेंट मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों में से एक केटी कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड के प्रमुख हैं। निवर्तमान चेयरमैन डा.ए. सक्थिवेल ने उदानी पर पूरा भरोसा जताते हुए कहा कि वैश्विक सप्लाई चेन की उनकी गहरी समझ काउंसिल को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगी और उद्योग में स्किल गैप को पाटने का काम करेगी। कहा कि अगले दो वर्षों में हमारा ध्यान स्किलिंग पहलों को और व्यापक बनाने पर होगा। हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक प्रशिक्षु आधुनिक वैश्विक ब्रांडों की जरूरतों के अनुसार कुशल हो। काउंसिल के सीईओ आशीष श्रीवास्तव ने इस नियुक्ति का स्वागत करते हुए कहा कि हम प्रेमल उदानी का चेयरमैन के रूप में स्वागत करते हुए बेहद उत्साहित हैं। उनका अद्वितीय अनुभव और रणनीतिक विजन हमारे कौशल विकास प्रयासों को और मजबूती प्रदान करेगा। साथ ही हम डा.ए. शक्तिवेल के उत्कृष्ट नेतृत्व और परिषद के प्रति उनके अमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करते हैं।

विद्या जीवन व्यवहार में दिखाई देनी आवश्यक

शाह टाइम्स संवाददाता

बडौत। आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा जून माह में चौधरी केहर सिंह पब्लिक स्कूल बड़ौत में आयोजित होने वाले आवासीय संस्कार शिविर के लिए शांति देवी कन्या इंटर कॉलेज फजलपुर सुंदर नगर में सभा के मंत्री रवि शास्त्री ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा आपने विद्या शिक्षा पाकर जो डिग्री प्राप्त की है, यदि वह आपके जीवन व्यवहार में दिखाई नहीं देती है, अर्थात आपके अन्याय पूर्ण व्यवहार में यदि दूसरे लोग दुखी होते हैं, तो समझ लीजिए, कि आपकी डिग्री का मूल्य, कागज के एक टुकड़े से अधिक नहीं है। यदि ऊंची ऊंची डिग्रियां प्राप्त करके आप उसे विद्या का सदुपयोग करते हैं, दूसरों के दुख दूर करते हैं, दूसरों को सुख भी देते हैं, तब तो आपकी डिग्री मूल्यवान एवं सार्थक है। अन्यथा वह व्यर्थ और रद्दी की टोकरी में डालने योग्य है। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि पढ़ाई नहीं करनी चाहिए। मैं तो यह कहना चाहता हूं कि पढ़ाई अवश्य करें। परंतु उसके साथ-साथ जीवन को अच्छा बनाएं। अपनी मेहनत केवल डिग्री प्राप्त करने और जैसे तैसे बेईमानी से धन कमाने तक सीमित न रहे। आपकी मेहनत, कार्यो से दूसरों का दुख भी दूर होना चाहिए। उनको सुख भी मिलना चाहिए। आपकी शिक्षा से मानव कल्याण के कार्य होने चाहिए। तभी अच्छे राष्ट्र का निर्माण होगा। संस्कार शिविर में भाग लेने हेतु विद्यार्थियों के लिए रामहेर सिंह पब्लिक स्कूल बुढेडा, श्री नेहरू स्मारक इंटर कॉलेज बुढेडा, ज्ञानस्थली पब्लिक स्कूल बिचपडी, अभिषेक कटारिया मेमो. रियल इंटर कॉलेज नगला बिजवाड़ा, ओमेगा वर्ल्ड सीनियर सेकेंडरी स्कूल तितरौदा,आर्य विद्यालय इंटर कॉलेज तेडा, गुरुकुल ग्वालीखेडा आदि में जनसंपर्क किया गया।

कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी बिनौली (बागपत)

पत्रांक 64/क्षेत्र पंचायत/2026-27 दिनांक 29.04.2026

सूचना

अधोहस्ताक्षरी कार्यालय के पत्र संख्या 57 / क्षेत्र पंचायत / 2026-2027 दिनांक 25.04.2026 के द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य वित्त/केन्द्रीय वित्त आयोग मद में प्रस्तावित निर्माण कार्य कराने हेतु शासकीय विभाग में पंजीकृत फर्मो से निविदा आमंत्रित की गयी थी। उक्त पत्र में त्रुटिवश क्रमांक संख्या 07 पर ग्राम पंचायत आदमपुर में मन्दिर के पास, के स्थान पर ग्राम पंचायत ईदरीशपुर में हरिजन चौपाल के पास अंकित हो गया है। निविदा प्रकाशन में अंकित क्रमांक संख्या 07 पर ग्राम पंचायत ईरीशपुर में हरिजन चौपाल के स्थान पर ग्राम पंचायत आदमपुर में मन्दिर के पास पढा जाये।

खण्ड विकास अधिकारी
बिनौली(बागपत)

लोकदल की रैली की तैयारियों के लिए किया प्रचार

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। 3 मई को बालैनी में होने वाली राष्ट्रीय लोकदल की रैली की तैयारियों के लिए आज गाँव मवीखुर्द, मवीकलां, पुरा महादेव एवं मतान्तनगर में प्रचार हुआ। हर किसी का ट्रैक्टर और हर घर से महिला पुरूष रैली की भव्यता बढाएंगें। इस अवसर पर राष्ट्रीय लो. कदल के राष्ट्रीय सचिव डा.कुलद. ीप उज्जवल ने कहा कि हर कोई अपने नेता चौधरी जयन्त सिंह के विचार सुनने के लिए जिम्मेदारी के साथ कार्यक्रम का हिस्सा बनेगा। पूर्व जिला पंचायत सदस्य एवं राला. ेद के वरिष्ठ नेता धीरज उज्ज्वल ने कहा कि जनता अपने लीडर से प्रेम करती है। इसलिए रैली नहीं बल्कि रैला होगा। जयन्त चौधरी सर्व समाज के नेता है। इस अवसर पर राजू तोमर सिरसली, कृष्णपाल प्रधान, रविन्द्र प्रधान, धर्मवीर मलिक, शोवीर मलिक, विपिन उज्ज्वल, ईश्वर प्रधान, सचिन पंडित विनोद मलिक करणसिंह प्रधान, सतवीर प्रधान, देवेंद्र, सुनील, राजेन्द्र प्रधान आदि लोग उपस्थित रहे।

यातायात नियमों का उल्लंघन बुलेट सवार को पड़ा भरी, 34 हजार का हुआ चालान

शाह टाइम्स संवाददाता

बागपत। बुधवार को यातायात नियमों के उल्लंघन को लेकर पुलिस ने सख्त रुख अपनाते हुए जनपद के प्रमुख चौराहों पर चलाए जा रहे विशेष चेकिंग अभियान के दौरान ट्रैफिक पुलिस ने एक बुलेट का 34 हजार रुपये का भारी चालान किया है और वाहन चालकों नियामों का पालन करने की सख्त हिदायत दी।

चेकिंग के दौरान ट्रैफिक पुलिस ने एक संदिग्ध बुलेट को रोककर उसकी जांच की। जांच के दौरान पाया गया कि बाइक में मॉडिफाइड साइलेंसर लगा हुआ था, जिससे तेज और कानफोड़ू आवाज निकल रही थी। इसके अलावा बाइक पर निर्धारित मानकों के अनुसार नंबर प्लेट भी नहीं लगी थी। जब चालक से वाहन के कागजात मांगे गए, तो वह वैध बीमा और प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र (PUC) भी प्रस्तुत नहीं कर सका। इन सभी उल्लंघनों को गंभीरता से लेते हुए ट्रैफिक पुलिस ने मोटर व्हीकल एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत कुल 34 हजार रुपये का चालान किया। जानकारी के अनुसार, बाइक चालक दिव्यांग था, लेकिन नियमों के उल्लंघन पर पुलिस ने किसी प्रकार की रियायत नहीं दी। इस संबंध में यातायात प्रभारी सत्येंद्र सिंह ने बताया कि सड़क सुरक्षा को लेकर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मॉडिफाइड साइलेंसर और गलत नंबर प्लेट जैसे उल्लंघन आम लोगों के लिए परेशानी और दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। यातायात पुलिस ने वाहन चालको से अपील की है कि वे अपने वाहनों के सभी आवश्यक दस्तावेज पूरे रखें और यातायात नियमों का पालन करें, ताकि ऐसी कार्रवाई से बचा जा सके और सड़कों पर सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इस मौके पर यातायात पुलिस टीएसआई योगेश कुमार, टीएसआई बिजेन्द्र सिंह, नितेश भुल्लर, कुलदीप भाटी आदि यातायात पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

सूचना

मेरे पुत्र का आचरण ठीक नहीं है गलत आचरण के चलते मै अपने पुत्र विक्रांत व पुत्रवधू अन्जू से सम्बंध विच्छेद करते हुए अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं भविष्य में अपने किसी भी कृत्य के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे।
राजू कश्यप पुत्र देवी सिंह निवासी कोर्ट रोड़ कश्यप कालोनी बागपत, थाना बागपत जनपद बागपत।

सूचना

मेरे पुत्र का आचरण ठीक नहीं है गलत आचरण के चलते मै अपने पुत्र इरफान व पुत्रवधू फरजाना से सम्बंध विच्छेद करते हुए अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल करता हूं भविष्य में अपने किसी भी कृत्य के लिए वे स्वयं जिम्मेदार होंगे।
उसमान पुत्र अजमु निवासी ग्राम शबगा मांडी थाना छपरौली जनपद बागपत।

प्रधानमंत्री ने प्रदेश के सबसे बड़े गंगा एक्सप्रेसवे का किया लोकार्पण

प्रधानमंत्री ने दिया प्रदेश को सबसे बड़ा एक्सप्रेसवे, हापुड़ में लाइव प्रसारण देख उमड़ा उत्साह

शाह टाइम्स संवाददाता

हापुड़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को हरदोई से प्रदेश के सबसे बड़े गंगा एक्सप्रेसवे का लोकार्पण किया। इस अवसर पर हापुड़ जनपद के बहादुरगढ़ स्थाना रोड स्थित कार्यक्रम स्थल पर लोकार्पण समारोह का सीधा प्रसारण दिखाया गया, जिसे बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और आमजन ने देखा और सुना। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनपद के प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने की।

प्रधानमंत्री द्वारा बटन दबाकर मेरठ से प्रयागराज तक बनने वाले 594 किलोमीटर लंबे गंगा एक्सप्रेसवे का शुभारंभ किया गया। यह एक्सप्रेसवे मेरठ जनपद के बिजौली गांव से शुरू होकर प्रयागराज तक जाएगा और उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा एक्सप्रेसवे माना जा रहा है। इसके शुरू होने से पश्चिमी उत्तर प्रदेश से पूर्वांचल तक की यात्रा अब पहले की तुलना में काफी आसान और तेज हो जाएगी। प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने कहा कि पहले मेरठ से प्रयागराज तक की यात्रा पूरी करने में 12 से 14 घंटे तक का समय लगता था, लेकिन गंगा एक्सप्रेसवे के शुरू होने के बाद यही दूरी अब 6 से 7 घंटे में पूरी की जा सकेगी। इससे यात्रियों को समय की बचत होगी और सफर अधिक सुरक्षित, सुगम और आरामदायक बनेगा। कपिल देव अग्रवाल ने बताया कि गंगा एक्सप्रेसवे आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित है।

इसमें सुरक्षा व्यवस्था के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, वहीं आपातकालीन परिस्थितियों और रक्षा जरूरतों को ध्यान में रखते हुए लड़ाकू विमानों की लैंडिंग के लिए एयर स्ट्रिप भी बनाई गई है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश लगातार विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। कार्यक्रम के अंत में प्रभारी मंत्री ने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह ऐतिहासिक परियोजना प्रदेश के लाखों लोगों के जीवन को आसान बनाएगी और उत्तर प्रदेश को विकास की नई दिशा देगी। इस दौरान सदर विधायक विजयपाल आढ़ती, गढ़मुक्तेश्वर विधायक हरेंद्र तेवतिया, जिला पंचायत अध्यक्ष रेखा नागर, क्षेत्रीय अध्यक्ष विकास अग्रवाल, गढ़ नगर पालिका अध्यक्ष राकेश बजरंगी, पिलखुवा नगर पालिका अध्यक्ष विभु बंसल, जिलाधिकारी कविता मीणा, पुलिस अधीक्षक कुंवर ज्ञानेंजय सिंह, मुख्य विकास अधिकारी श्रुति शर्मा तथा बड़ी संख्या में आमजन मौजूद रहे।

गंगा में डूबे मेरठ के युवक का शव बरामद, परिवार में मचा कोहराम

शाह टाइम्स संवाददाता

हापुड़। गढ़मुक्तेश्वर कोतवाली क्षेत्र के ब्रजघाट में गंगा स्नान के दौरान डूबे मेरठ निवासी 21 वर्षीय युवक का शव दो दिन बाद बुधवार को बरामद कर लिया गया। गोताखोरों ने लगातार तलाश अभियान चलाते हुए शव को ब्रजघाट से करीब एक किलोमीटर दूर गंगानगर क्षेत्र के सामने गंगा से बाहर निकाला। युवक का शव मिलने के बाद परिवार में मातम छा गया। पुलिस के अनुसार मेरठ के जागृति विहार निवासी दिव्यांश अपनी मौसी शिवांकी के साथ ब्रजघाट गंगा स्नान के लिए आया था। स्नान के दौरान अचानक उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी की ओर चला गया था। देखते ही देखते युवक तेज बहाव में डूब गया। सूचना मिलते ही स्थानीय गोताखोर तुरंत गंगा में उतरे और युवक की तलाश शुरू कर दी। सोमवार से लगातार सर्च अभियान चलाया जा रहा था, लेकिन पहले दो दिन तक उसका कोई पता नहीं चल सका। बुधवार को गोताखोरों ने फिर से तलाश अभियान तेज किया, जिसके बाद युवक का शव गंगानगर के सामने गंगा में दिखाई दिया। काफी मशक्कत के बाद शव को बाहर निकाला गया। सूचना मिलते ही परिजन भी मौके पर पहुंच गए। बेटे का शव देखते ही परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया। कोतवाली प्रभारी देवेंद्र बिष्ट ने बताया कि युवक के गंगा में डूबने की सूचना के बाद पुलिस और गोताखोरों की टीम लगातार तलाश में जुटी थी। बुधवार को शव बरामद कर लिया गया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और मामले में आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है।

साइबर फ्रॉड पर पुलिस का बड़ा प्रहार, ठगों के 129 खाते किए सीज

शाह टाइम्स संवाददाता

हापुड़। साइबर अपराधों की रोकथाम, आर्थिक धोखाधड़ी के मामलों में त्वरित कार्रवाई और पीड़ितों को शीघ्र राहत दिलाने के उद्देश्य से मेरठ परिक्षेत्र में लगातार प्रभावी अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस उपमहानिरीक्षक मेरठ परिक्षेत्र कलानिधि नैथानी के निर्देशन में एक जनवरी 2026 से 15 अप्रैल 2026 तक साइबर अपराधों के विरुद्ध व्यापक कार्रवाई की गई, जिसमें हापुड़ जनपद में भी उल्लेखनीय कार्य हुआ।

समीक्षा के दौरान बताया गया कि राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर दर्ज शिकायतों के आधार पर हापुड़ में 180 मोबाइल नंबर बंद कराए गए, जबकि 196 आईएमईआई नंबर भी ब्लॉक किए गए। इसके अलावा साइबर ठगी में प्रयुक्त 129 म्यूल बैंक खातों को डेबिट फ्रीज कराया गया, ताकि ठगी की रकम को रोका जा सके और पीड़ितों को राहत मिल सके। पांच लाख रुपये या उससे अधिक धनराशि से जुड़े मामलों में हापुड़ में पांच प्राथमिकी दर्ज की गईं। वहीं राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर दर्ज कुल 285 शिकायतों का निस्तारण किया गया। आमजन को जागरूक करने के लिए जनपद में 113 साइबर जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

मेरठ परिक्षेत्र के चार जनपदों मेरठ, बुलंदशहर, बागपत और हापुड़ में कुल 1962 मोबाइल नंबर बंद किए गए, 4106 आईएमईआई नंबर ब्लॉक हुए, 960 म्यूल बैंक खातों को डेबिट फीज कराया गया तथा 3426 शिकायतों का निस्तारण किया गया। साथ ही 1310 साइबर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित कर लोगों को ऑनलाइन ठगी से बचने के उपाय बताए गए। पुलिस उपमहानिरीक्षक कलानिधि नैथानी ने सभी थाना प्रभारियों और साइबर सेल को निर्देश दिए हैं कि राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर प्राप्त प्रत्येक शिकायत का समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। थानों पर आने वाले लोगों को साइबर ठगी से बचाव के उपाय बताए जाएं और हेल्पलाइन नंबर 1930 का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जाए। डीआईजी ने बताया कि कोई भी नागरिक साइबर ठगी का शिकार होने पर राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल या हेल्पलाइन नंबर 1930 के माध्यम से तुरंत शिकायत दर्ज करा सकता है, जिससे समय रहते धनराशि को रोका जा सके और अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई संभव हो सके।

बैसाख पूर्णिमा पर स्नान-दान का महापुण्य, 1 मई को विशेष संयोग

शाह टाइम्स संवाददाता

हापुड़। नृसिंह जयंती एवं मां छिन्नमस्ता जयंती 30 अप्रैल गुरुवार को रवि योग में मनाई जाएगी, जबकि बैसाख पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती और ऋषि भृगु जयंती 1 मई शुक्रवार को सिद्धि योग में श्रद्धा और विधि-विधान के साथ मनाई जाएगी। भारतीय ज्योतिष कर्मकांड महासभा के अध्यक्ष ज्योतिर्विद पंडित के.सी. पाण्डेय काशी वाले ने यह जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि स्कंदपुराण के अनुसार बैसाख पूर्णिमा का विशेष धार्मिक महत्व है। पूर्णिमा तिथि 30 अप्रैल की रात्रि 9 बजकर 12 मिनट से प्रारंभ होकर 1 मई की देर रात्रि 10 बजकर 52 मिनट तक रहेगी। पंडित के.सी. पाण्डेय ने बताया कि भविष्य पुराण में उल्लेख है कि बैसाख पूर्णिमा के दिन गंगा या किसी पवित्र नदी में स्नान करने के बाद योग्य ब्राह्मण को दान अवश्य करना चाहिए। इस दिन सोना, तिल, मधु, घी, भोजन, जल और जलपात्र का दान अत्यंत शुभ माना गया है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए यह दिन विशेष आस्था और श्रद्धा का पर्व है। इसके साथ ही इसी दिन ज्योतिष फलादेश के प्रमुख ग्रंथ भृगु संहिता के रचयिता महर्षि भृगु की जयंती भी मनाई जाती है। ज्योतिर्विद पंडित के.सी. पाण्डेय ने श्रद्धालुओं से अपील की कि वे इस पावन अवसर पर स्नान, दान, व्रत और पूजा-पाठ कर पुण्य लाभ प्राप्त करें तथा धार्मिक परंपराओं का पालन करते हुए समाज में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करें।

15 मुकदमें है एक तेरे नाम का भी सही

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। हैलो मैं,,,,,, बोल रहा हूं तु बहुत नेता बनता है। मेरे पर 15 मुकदमें पहले ही एक मुकदमा तेरे नाम का ही सही वो तो सुधर जा वरना जान से मार दूंगा। यह धमकी गांव खिलवाई निवासी युवक को उसके ही गांव निवासी दो भाईयों ने फोन पर दी है। धमकी से भयभीत पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

गांव निवासी आंकित ने बताया कि उसके फोन पर गांव निवासी एक युवक का फोन आया। उसके बाद उसने अपने भाई के साथ मिलकर उसको जान से मारने की धमकी दी है। पीड़ित ने बताया कि आरोपियों के खिलाफ पूर्व में कई मुकदमें दर्ज है इसको लेकर वह धमकी देते है और वह जिला बदर है। पीड़ित ने बताया कि आरोपियों की धमकी से वह भयभीत है। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

जुआ खेलने से किया मना तो दे दिया तीन तलाक

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। क्षेत्र के एक गांव में पत्नी द्वारा जुआ खेलने से मना करने पर पति ने तीन तलाक दे दिया। उसके बाद पीड़िता का घर से निकाल दिया। पीड़िता ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

गांव निवासी महिला ने बताया कि उसका पति निकाह के बाद से ही जुआ खेलने का काम करने लगा। इसको लेकर कई बार उसने मना किया तो आरोपी ने उसके साथ पिटाई शुरू कर दी। कई बार दोनों पक्षों के बीच वार्ता भी लेकिन पति की आदत में सुधार नहीं आया। पीड़िता ने बताया कि अब उसने पति को जुआ खेलने से मना किया तो आरोपी ने उसको तीन तलाक दे दिया। उसने ऐसा करने से मना किया तो आरोपी ने अपने परिवार के लोगों के साथ मिलकर उसको पीटकर घर से निकाल दिया। पीड़िता ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

बालाजी दरबार मंदिर में राधा-कृष्ण की मूर्तियों की स्थापना

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। नगर के मोहल्ला नक्का कुंआ मार्ग पर बुधवार को स्थित बालाजी दरबार मंदिर में राधा-कृष्ण की मूर्तियों की स्थापना की गई। इस अवसर पर नगर में एक भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसके बाद मूर्तियों को मंदिर में विधि-विधान से स्थापित किया गया।

शोभायात्रा बालाजी दरबार मंदिर से शुरू हुई। डोली में राधा-कृष्ण की मूर्तियों को लेकर भक्तगण घर-घर के आगे से गुजरे, जहां लोगों ने श्रद्धापूर्वक पैसे चढ़ाए और प्रसाद ग्रहण किया। शोभायात्रा के दौरान महिलाओं ने अपने सिर पर कलश भी रखा हुआ था। शोभायात्रा में शामिल माताएं, बहनें और अन्य भक्तगण रंग-गुलाल और फूलों की वर्षा करते हुए राधा रानी के जयकारे लगा रहे थे। पूरा वातावरण भक्तिमय नारों से गूंज उठा। भक्तगण भजनों पर झूमते और नाचते हुए आगे बढ़ रहे थे, जिससे उत्सव का माहौल बना रहा। यह शोभायात्रा मंदिर से शुरू होकर पुराना बाजार से होते हुए परिक्रमा मार्ग से गुजरी। इसके बाद मंदिर पहुंची। मंदिर पहुंचने पर मूर्तियों को विधि-विधान से विराजमान करने का कार्य शुरू किया गया। इस दौरान प्रसाद वितरण और भंडारे का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में मुख्य यजमान अमित वर्मा ने अपने परिवार के साथ पूजन किया। इस अवसर पर सीता राम पहलवान, मदन पाल चौधरी, धनवंत जैन, विष्णु नागर, अशोक शर्मा दाता, टोनू पहलवान, संजीव कुमार, दीपक वर्मा आदि मौजूद रहे।

उधार के रुपये मांगने पर धमकी दी

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। क्षेत्र के गांव अल्लाबख्शपुर निवासी नैपाल सिंह ने बताया कि उसने खादर क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक को शादी के फर्नीचर के लिए 40 हजार रुपये दिए थे। आरोपी ने उन रुपये को कुछ माह में वापस देने की बात कहीं, लेकिन एक साल होने के बाद उनके रुपये वापस नहीं मिल सके हैं। पीड़ित ने उनसे रुपये मांगे तो आरोपी ने अभद्रता की। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

एक नजर

गाड़ी को रुकवाकर दो भाईयों को पीटा

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। नगर के चटाई वाला मोहल्ला निवासी गौरव ने बताया कि वह अपने भाई आशीष के साथ गाड़ी से सवार होकर दिल्ली पालम के लिए जा रहा था। मीरा रेती पहुंचने पर नगर निवासी दो लोगों ने उनकी गाड़ी को रोक कर गाली गलौज की। विरोध करने पर आरोपियों ने उन पर हमला कर घायल कर दिया। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

भाकियू नेताओं को घर पर किया अरेस्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। गंगा एक्सप्रेस-वे को सफल बनाने के लिए पुलिस ने उच्च अधिकारियों के आदेश पर किसान नेताओं को घर पर ही नजर बंद कर दिया गया। कार्यक्रम खत्म होने के बाद सभी के घरों से पुलिस को हटाया गया।

बुधवार को क्षेत्र के गांव सदरपुर में गंगा एक्सप्रेस-वे के शुभारंभ का सीधा प्रसारण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जनपद के प्रभारी मंत्री कपिलदेव अग्रवाल समेत अन्य नेता मौजूद रहें। कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का विघन न हो इसलिए सुबह को ही पुलिस ने भाकियू भानू के नेताओं को उनके घर पर हाउस अरेस्ट कर लिया गया। कार्यक्रम को खत्म होने के बाद उनके घर से पुलिस को हटाया गया।

अस्पताल स्टाफ पर लगाया खेत में कचरा डालने का आरोप

शाह टाइम्स संवाददाता

गढ़मुक्तेश्वर। क्षेत्र के गांव दौताई निवासी सलमान ने बताया कि उनका खेत के पास एक प्राइवेट अस्पताल संचालित है। उस अस्पताल का कचरा उनके खेत में डाला जा रहा है। उस कचरे में रोज स्टाफ द्वारा आग लगा दी जाती है। पीड़ित ने बताया कि कचरे में आग लगने से उनके नलकूप के तार जल गया। उन्होंने स्टाफ से कचरा न डालने के लिए कहा तो आरोपियों ने उनके साथ अभद्रता की। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई करने की मांग की है। पुलिस ने तहरीर पर मामले की जांच शुरू कर दी है।

दिन दहाड़े महिला से कुंडल छीन कर भागे बदमाश

eFkjkA नगर में अपराधियों के हौसले बुलंद नजर आ रहे हैं। बुधवार को दिनदहाड़े एक बुजुर्ग महिला से कुंडल लूट की वारदात सामने आई, जिससे क्षेत्र में दहशत फैल गई। जानकारी के अनुसार, आर्य समाज के प्रधान व चिकित्सक डॉ. प्रकाश आर्य की वृद्ध माता बाजार से घरेलू सामान लेकर पैदल आर्य नगर स्थित अपने घर लौट रही थी। इसी दौरान घर के समीप पीछे से आए बाइक सवार अज्ञात नकाबपोश बदमाशों ने दिन दहाड़े उनके कानों पर झपट्टा मारकर कुंडल छीन लिए। छीना-झपटी के दौरान महिला सड़क पर गिर गई, जिससे उनके कान में गंभीर चोट आई और खून बहने लगा। शोर गुल की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर आग गये और उन्हें तत्काल निजी अस्पताल में भर्ती कराया. जहां उनका उपचार चल रहा है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू की। पुलिस के अनुसार फुटेज में कुछ संदिग्ध दिखाई दिए हैं, जिनकी पहचान के प्रयास किए जा रहे हैं। उधर, घटना की जानकारी मिलते ही मंत्री प्रतिनिधि नरदेव चौधरी पीड़ित परिवार से मिलने पहुंचे और पुलिस अधिकारियों से आरोपितों की शीघ्र गिरफ्तारी तथा गश्त बढ़ाने की मांग की।

बिजली कर्मचारियों की चेतावनी, निजीकरण पर भी कड़ा विरोध

'kkg VkbEl lokmnkrk

eFkjkA प्रदेश के बिजली कर्मचारियों ने ऊर्जा निगम प्रबंधन के खिलाफ तीखा रुख अपनाते हुए कड़ी चेतावनी दी है।

विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति, उत्तर प्रदेश के केंद्रीय पदाधिकारियों ने कहा कि भीषण गर्मी में कर्मचारी दिन रात मेहनत कर उपभोक्ताओं और किसानों को निर्बाध बिजली आपूर्ति दे रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद उनके साथ दमन और उत्पीड़न की कार्यवाहियां की जा रही हैं, जो पूरी तरह अस्वीकार्य है। समिति ने स्पष्ट किया कि यदि कर्मचारियों पर हो रही दमनात्मक कार्रवाइयां तत्काल प्रभाव से वापस नहीं की गईं, तो प्रदेश के ऊर्जा निगमों में औद्योगिक अशांति की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिसकी पूरी जिम्मेदारी प्रबंधन की होगी। पदाधिकारियों ने पनकी और जवाहरपुर ताप विद्युत गृहों के संचालन एवं अनुरक्षण कार्य को आउटसोर्स करने के निर्णय का भी विरोध किया।

नगर निगम को पता ही नहीं था कि पार्किंग उसकी है

शिकायतों के बाद निगम ने पार्किंग को अपने कब्जे में लिया

'kkg VkbEl lokmnkrk

eFkjkA नगर निगम ने बुधवार को बेहद चौंकाने वाली कार्यवाही की। नगर निगम की पार्किंग पर अवैध कब्जा कर नगर निगम की बजाय अन्य लोग निजी पार्किंग का संचालन कर रहे थे।

नगर निगम को इस बात की जानकारी तक नहीं थी। कुछ विवाद होने और आलाधिकारियों तक लगातार शिकायत पहुंचने के बाद नगर निगम की ओर से कार्यवाही की गई। नगर निगम की पार्किंग पर अवैध रूप से कब्जा कर उसे निजी पार्किंग के तौर पर संचालित करने वालों के

बेदखल कर नगर निगम ने अपने कब्जे में ले लिया अब नगर निगम इस पार्किंग का खुद संचालन करेगा।

वृन्दावन में स्थित बांके बिहारी कॉम्प्लेक्स में नगर निगम मथुरा वृन्दावन की पार्किंग पर अवैध रूप से कब्जा कर उसका संचालन किये जाने प्रकरण पर संज्ञान लिया गया है। बुधवार को नगर निगम द्वारा कार्रवाई कर पार्किंग स्थल से अवैध कब्जा हटाया गया तथा स्थल को नगर निगम के अधीन लेकर पार्किंग के मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया गया है। कार्यवाही के दौरान अपर नगर आयुक्त सौरभ सिंह, मुख्य कर निर्धारण अधिकारी नरेंद्र सिंह यादव, कर निर्धारण अधिकारी अरविंद कुमार, कर अधीक्षक हरिकृष्ण गुप्ता, राजस्व निरीक्षक मुकेश कुमार एवं ई.डी.एफ. के जवान उपस्थित रहे। गोवर्धन चौराहे पर पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली इससे पहले हाल ही में गोवर्धन चौराहे पर पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली का मामला सामने आया। पार्किंग के नाम पर बाकायदा 50 रुपये की पर्ची जबरन ऑटो और ई रिक्शा चाल. कों की काटी जा रही थी। इतना ही नहीं यह पर्ची ऑटो और ई रिक्शा चालाकों को थमाई भी जा रही थी।

धर्म नगरी में देह व्यापार पर कडा प्रहार, गेस्ट हाउस पर छापा 9 हिरासत में

'kkg VkbEl lokmnkrk

eFkjkA धर्मनगरी मथुरा में अवैध देह व्यापार के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए चौकी बाग बहादुर क्षेत्र स्थित श्री गिर्राज गेस्ट हाउस में चल रहे सेक्स रैकेट का भंडाफोड़ किया। इस हाई प्रोफाइल ऑपरेशन का नेतृत्व अपनी सख्त कार्यशैली के लिए चर्चित आईपीएस अधिकारी आशना चौधरी ने किया। इस छापेमारी से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया।

पुलिस टीम ने गेस्ट हाउस में दबिश देकर मौके से 5 युवकों और 4 महिलाओं को हिरासत में लिया। कार्रवाई के दौरान संदिग्ध गतिविधियों से जुड़े कई अहम सबूत भी पुलिस के हाथ लगे हैं। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि गेस्ट हाउस की आड़ में लंबे समय से देह व्यापार का संगठित नेटवर्क संचालित किया जा रहा था। सूत्रों के अनुसार, पुलिस को इस अवैध कारोबार की लगातार शिकायतें मिल रही थीं, जिसके बाद गुप्त सूचना के आधार पर योजनाबद्ध तरीके से छापा मारा गया। अचानक हुई कार्रवाई से मौके पर अफरा तफरी मच गई और कई लोग बचने की कोशिश करते दिखे, लेकिन पुलिस ने पूरे परिसर को घेरकर सभी संदिग्धों को पकड़ लिया। आईपीएस आशना चौधरी ने स्पष्ट संदेश दिया कि मथुरा में कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा। इस कार्रवाई के बाद स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली है और पुलिस की सख्ती की सराहना की है। फिलहाल पुलिस हिरासत में लिए गये लोगों से पूछताछ कर रही है और इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश में जुटी है। गेस्ट हाउस संचालकों की भूमिका भी जांच के दायरे में हैं। माना जा रहा है कि जांच आगे बढ़ने पर कई और बड़े खुलासे हो सकते हैं। मथुरा में हुई यह कार्रवाई सिर्फ एक छापा नहीं, बल्कि अवैध कारोबारियों के लिए सख्त चेतावनी है कि धार्मिक नगरी की मर्यादा को कलंकित करने वालों पर पुलिस का शिकंजा लगातार कसता रहेगा।

बीएसए को तीन स्कूलों में मिली खामियां

तीनों हेड मास्टरों से मांगा स्पष्टीकरण

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। बीएसए डा. मोनिका ने तीन स्कूलों में अनियमित्ताएं मिलने पर हेड मास्टरों को स्पष्टीकरण तलब किया है।

बुधवार को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डा. मोनिका ने ब्लाक के कम्पोजिट विद्यालय खेड़ा का निरीक्षण किया जहां इस वर्ष खेल सामग्री नहीं क्रय की गयी पुरानी खेल सामग्री दिखाई गयी तथा कम्पोजिट बिल वाउचर नहीं दिखाये गये। आंगनवाड़ी में स्टेशनी भी नहीं मिली। परिचालक गेट पर बेठने के बजाए कक्षा कक्ष में बैठे मिले जबकि छात्र छात्राएं गेट के बाहर घूम रहे थे। डीसीएफ भी नहीं भरा मिला। अध्यापक फोटोफ्रेम नहीं बनाये गये। जिस पर उन्होने नाराजगी जतायी तथा हेड मास्टर से तीन दिन में स्पष्टीकरण तलब किया। प्राथमिक विद्यालय मिठनपुर कलां के निरीक्षण में 135 उपस्थित संख्या बतायी गयी जबकि मौके पर मात्र 97 छात्र छात्राएं मिलीं। इसके अलावा विद्यालय में कई खामियां मिलीं। जिस पर हेड मास्टर से तीन दिन में स्पष्टीकरण मांगा गया है। इसके अलावा प्राथमिक विद्यालय मिठनपुर कलां के निरीक्षण में शैक्षिक स्तर अत्यंत न्यूनतम पाया गया। मिड्डेमील में खाना का सैम्पिल विद्यालय में नही मिला। जिस पर हेड मास्टर से तीन दिन में स्पष्टीकरण देने के निर्देश दिये गये हैं।

अति पिछड़ा वर्ग लम्बे समय से उपेक्षा का शिकार

अति पिछड़े दलित व वंचित वर्गो के हकों की लड़ाई लड़ रही सुभासपाः राजभर

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। कैबिनेट मंत्री एवं सुहैलदेव समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि अति पिछड़ा समाज लंबे समय तक उपेक्षा का शिकार रहा है, लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। सरकार की को. शिश है कि योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।

कैलसा बाईपास रोड स्थित ताज गार्डन बैंक्वेट हॉल में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) द्वारा आयोजित अति पिछड़ा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन को संबोधित करते हुए ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि अति पिछड़ा समाज लंबे समय तक उपेक्षा का शिकार रहा है, लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। सरकार की कोशिश है कि योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से गांव-गांव जाकर लोगों को जागरूक करने और संगठन को मजबूत बनाने की अपील की। वहीं अरविंद राजभर ने कहा कि सुभासपा हमेशा से अति पिछड़े, दलित और वंचित वर्गों की लड़ाई लड़ती आई है और आगे भी यह संघर्ष जारी रहेगा। उन्होंने कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने और आने वाले चुनावों के लिए पूरी तैयारी में जुटने का आह्वान किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामपाल मांडी, दयाराम भार्गव शक्ति सिंह, बलराज सिंह प्रजापति, जिलाध्यक्ष सत्यपाल तोमर राजपाल सिंह, रवि चौधरी, आदेश अमरोही, सुरेंद्र सिंह प्रधान, जसवीर सिंह, अतीकुर्रहमान, मोहम्मद शराफत, विनीत चौहान सहित कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खेत से लोट रहे किसान के परिवार पर हमला

चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो

नौगांवा सादात। खेत से घर लौट रहे किसान समेत परिवार के लोगों पर हमला करने के मामले में पुलिस ने चार आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

थाना क्षेत्र के गांव बीबड़ा खुर्द निवासी किसान पुष्पेंद्र की ओर से दर्ज कराई गई एफआईआर के मुताबिक मंगलवार दोपहर वह अपने खेत पर गन्ने की बुआई कर घर लौट रहा था, साथ में माता-पिता व परिवार के अन्य लोग भी थे। आरोप है कि रास्ते में गांव के ही रहने वाले गजेंद्र, उसकी पत्नी गीता के अलावा सुरेश सिंह व सौराज ने घेर लिया। आरोपियों ने गाली-गलौज शुरू कर दी, विरोध करने पर मारपीट कर घायल कर दिया। हमले में गुम चोटें आने से गंभीर घायल पुष्पेंद्र बेहोश होकर सड़क पर गिर पड़ा। चीख पुकार सुनकर जमा लोगों ने आरोपियों से बचाते हुए घायलों को घर तक पहुंचाया। आरोप है कि आरोपी पक्ष की ओर से लगातार जान से मारने धमकी दी जा रही है। प्रभारी निरीक्षक बालेंद्र कुमार ने बताया कि मामले में तहरीर के आधार पर चारों आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। घटना की जांच की जा रही है। आरोपियों को जल्दी गिरफ्तार कर चालान किया जाएगा।

सफाई कर्मियों ने मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

सेवा नियमावली व सुविधाओं की मांग

शाह टाइम्स संवाददाता

अमरोहा। ग्राम पंचायत राज सफाई कर्मचारी संघ ने अपनी विभिन्न लंबित मांगों को लेकर पंचायती राज विभाग के कैबिनेट मंत्री को ज्ञापन सौंपा है। संघ का कहना है कि प्रदेश में वर्ष 2008 में भर्ती हुए लगभग 1.08 लाख ग्रामीण सफाई कर्मचारी आज भी मूलभूत सुविधाओं और स्पष्ट सेवा नियमावली के अभाव में कार्य कर रहे हैं। ज्ञापन में प्रमुख रूप से सफाई कर्मचारियों की सेवा नियमावली लागू करने, पदोन्नति की व्यवस्था सुनिश्चित करने, ग्राम पंचायत अधिकारी व अन्य पदों पर प्रोन्नति का अवसर देने, तथा सफाई कर्मियों के लिए अलग से "पंचायत सेवक" पद सृजित करने की मांग की गई है। इसके अलावा कर्मचारियों को नियमित रूप से सफाई उपकरण उपलब्ध कराने, महिला कर्मियों को 5 किमी से अधिक दूरी पर ड्यूटी से राहत देने और लंबित पास. बुक जारी करने की भी मांग उठाई गई है। संघ ने यह भी आरोप लगाया कि कई कर्मचारियों के नाम व विवरण पोर्टल पर गलत दर्ज हैं, जिससे उन्हें सेवा संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञापन में इन त्रुटियों को जल्द सुधारने की मांग की गई है। संघ के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुमार भारती और प्रदेश महामंत्री कमल सिंह ने कहा कि कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर कई बार शासन स्तर पर अनुरोध किया जा चुका है, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो संगठन आंदोलन के लिए बाध्य होगा।

बायोगैस के उपयोग से घरेलू ईंधन की बचत संभव

शाह टाइम्स संवाददाता

गजरौला। गाँव देहरा कादर बख्श में समेकित सतत डेयरी, पशुपालन एवं जैविक खेती विकास परियोजना के अंतर्गत स्पर्श सोशल फाउंडेशन द्वारा स्थापित स्टेबल एवं बायोगैस यूनिट का उद्घाटन संस्था के निदेशक कपिल कौल ने किया।

बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्रीय किसानों के साथ जागरूकता एवं परामर्श बैठक में डेयरी प्रबंधन, स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग तथा जैविक खेती के माध्यम से किसानों की आय वृद्धि के विभिन्न आयामों पर विस्तृत चर्चा की गई। कार्यक्रम में उपस्थित किसानों को परियोजना के उद्देश्य, संभावित लाभ एवं आगामी कार्ययोजना के संबंध में समुचित जानकारी दी की गई। एस. आनन्द एवं कृष्ण गोपाल ने बायोगैस यूनिट के महत्व एवं उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बायोगैस के उपयोग से घरेलू ईंधन (रसोई गैस) की बचत संभव है तथा इससे प्राप्त स्लरी का उपयोग उच्च गुणवत्ता की जैविक खाद के रूप में किया जा सकता है।

VASTU HOUSING FINANCE

वास्तु हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

यूनिट 203 और 204, द्वितीय तल, 'ए' विंग, नवभारत एस्टेट, ज़कारिया बंदर रोड, सेवरी (पश्चिम), मुंबई 400015, महाराष्ट्र, सीआईएन संख्या : U65922MH2005PLC272501

सेक्युरिटाइज़ेशन अधिनियम 2002 की धारा 13(2) के तहत मांग नोटिस

जबकि, वास्तु हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने अपने मुख्य कार्यालय मुंबई से, निम्नलिखित उधारकर्ताओं/गारंटरों/बंधकदाता को नोटिस जारी किया है कि वे VHFCL से ली गई क्रेडिट सुविधाओं का मूलधन और ब्याज का भुगतान करने में चूक गए हैं और उक्त सुविधाएं अब गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA) बन गई हैं। उन्हें सेक्युरिटाइज़ेशन और वित्तीय परिसंपत्तियों के पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित के प्रवर्तन अधिनियम, 2002 की धारा 13(2) के तहत उनके ज्ञात पते पर नोटिस भेजा गया था, लेकिन वे वापस आ गए। इसलिए, उन्हें इस सार्वजनिक नोटिस के माध्यम से सूचित किया जाता है।

ऋणी का नाम, सह-ऋणी और [illegible]	धारा के अंतर्गत मांग नोटिस की तिथि और राशि। 13(2)	बंधक संपत्ति का विवरण
राहुल (आवेदक), अनीता (सह-आवेदक), रोशन (सह-आवेदक) MLP000000257102	20/04/2026 तक, 16/04/2026 की स्थिति के अनुसार ₹783117, जिस पर आगे और ब्याज तथा शुल्क लागू होंगे।	आवासीय मकान संख्या 800, क्षेत्रफल 144 वर्ग गज (यानी 120.40 वर्ग मीटर), जो पुरानी आबादी, ग्राम [illegible], परगना [illegible], तहसील और जिला मेरठ, उत्तर प्रदेश - 250001 में स्थित है। उत्तर - 15 फुट चौड़ा रास्ता; दक्षिण - भूपेंद्र का मकान; पूर्व - भूपेंद्र का मकान; पश्चिम - [illegible] सिंह का मकान।

नोटिस की प्रतिस्थापन सेवा के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। उपरोक्त उधारकर्ताओं, सह-उधारकर्ताओं और/या उनके गारंटरों (जहां भी लागू हो) को सलाह दी जाती है कि वे इस नोटिस के प्रकाशन की तिथि से 60 दिनों के भीतर बकाया राशि का भुगतान करें, अन्यथा वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के प्रावधानों के अनुसार इस नोटिस की तिथि से 60 दिनों की समाप्ति के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। कृपया सूचित किया जाए कि उक्त नोटिस धारा 13(13) के तहत भी है, जिसमें उधारकर्ताओं/गारंटरों/बंधककर्ताओं को सूचित किया गया है कि उक्त बंधक संपत्ति को बेचा/पट्टे पर दिया/हस्तांतरित नहीं किया जाना चाहिए।

दिनांक : 30.04.2026
स्थान : मेरठ

प्राधिकृत अधिकारी,
वास्तु हाउसिंग फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

बस में कालेज के छात्र से मारपीट

चार आरोपियों पर रिपोर्ट

शाह टाइम्स संवाददाता

जोया। डिडौली कोतवाली क्षेत्र में कॉलेज छात्र के साथ बस में मारपीट का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर चार आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गजरौला थाना क्षेत्र के गांव मोहम्मदाबाद निवासी सुहेल पुत्र अब्दुल्ला ने बताया कि वह 23 अप्रैल 2026 को आईएफटीएम यूनिवर्सिटी से बस द्वारा अपने घर लौट रहा था। आरोप है कि बस जैसे ही डिडौली थाना क्षेत्र के गांव चौधरपुर पहुंची, तभी प्रशांत पुत्र रविंद्र निवासी इसापुर, अमन पुत्र राजीव सिंह निवासी डुकिया, प्रशांत पुत्र आलोक निवासी अटारी मुरादपुर और सालार निवासी पक्का पुल गजरौला ने दबंगई दिखाते हुए उसे सीट से उठाने का प्रयास किया। विरोध करने पर आरोपियों ने उसके साथ मारपीट शुरू कर दी और जान से मारने की नीयत से गला दबाने का भी प्रयास किया। बस में मौजूद अन्य छात्र-छात्राओं ने बीच-बचाव कर किसी तरह सुहेल को बचाया। पीड़ित का कहना है कि मारपीट का वीडियो भी उसके पास मौजूद है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर चारों आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बिना प्लॉट छोड़े होगा, गन्ने का सर्वे

शाह टाइम्स संवाददाता

मंडी धनौरा। आगामी गन्ना सर्वे को लेकर धनोरा चीनी मिल परिसर में गन्ना विभाग और यूपी मिल स्टाफ की ओर से संयुक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इसमें धनोरा, अमरोहा और चांदपुर क्षेत्र के राजकीय गन्ना पर्यवेक्षकों को गन्ना सर्वे का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान अधिकारियों ने बताया कि गन्ना सर्वे पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ किया जाएगा, ताकि किसानों को किसी तरह की परेशानी न हो। गन्ना विकास निरीक्षकों ने सर्वे टीम को जरूरी दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि गांव में एक छोर से दूसरे छोर तक सभी गन्ना खेतों का सही तरीके से सर्वे किया जाए और कोई भी प्लॉट न छूटे। चीनी मिल के मुख्य महाप्रबंधक ने बताया कि सर्वे कार्य रोजाना सुबह छह बजे से शुरू होगा।

लोटे में फंसा बंदर के बच्चे का सिर, छतों पर जमा हुए बंदर

शाह टाइम्स संवाददाता

मंडी धनौरा। नगर के मोहल्ला गांधी नगर में बुधवार दोपहर एक अजीबो-गरीब घटना से अफरा-तफरी का माहौल बन गया। यहां एक बंदर के बच्चे का सिर लोटे में फंस गया, जिसके बाद वह इधर-उधर भागता और छटपटाता दिखाई दिया। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

वायरल वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि बंदर का बच्चा लोटे में सिर फंसने के कारण बेहद परेशान है। वह कभी छत पर दौड़ता तो कभी दीवारों पर चढ़ने की को. शिश करता नजर आया। बच्चे की हालत देखकर आसपास के लोग भी चिंतित हो गए। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में बंदर आसपास की छतों पर जमा हो गए। मोहल्ले के लोगों के मुताबिक बंदरों का झुंड काफी देर तक इलाके में मंडराता रहा। कई बंदर लगातार शोर मचाते रहे, जिससे लोगों में डर का माहौल बन गया। सुरक्षा के चलते कई लोगों ने अपने घरों के दरवाजे बंद कर लिए। स्थानीय लोगों ने बताया कि बंदर के बच्चे की मदद करने की को. शिश की गई, लेकिन आक्रामक बंदरों के कारण कोई भी उसके पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा सका। लोगों का कहना है कि नगर में बंदरों की संख्या लगातार बढ़ रही है और आए दिन बंदर लोगों के घरों में घुसकर नुकसान पहुंचाते हैं। मोहल्लेवासियों ने वन विभाग और संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों से मांग की है कि बंदरों को पकड़ने के लिए अभियान चलाया जाए।

रिश्तेदारी को लेकर विवाद में मारपीट

जोया। डिडौली थाना के गांव पायंती कला में रिश्तेदारी को लेकर हुए विवाद में मारपीट का मामला सामने आया है। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर पांच आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कार्यालय क्षेत्रीय प्रबन्धक, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम, मेरठ।

पत्रांक- 1430/मेरठ/क्षे0प्र0/जी-सफाई-बस स्टेशन/विज्ञप्ति/26 दिनांक 29.04.2026

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरठ डिपो कार्यशाला की सफाई का ठेका आवंटन के लिये दिनांक 12.04.2026 तक किसी भी कार्यालय दिवस व कार्य समय में निविदा फीस रु0-236 जीएसटी0 सहित क्षेत्रीय प्रबन्धक कार्यालय मेरठ में जमा कराकर निविदा फार्म प्राप्त कर सकते हैं। दिनांक 13.04.2026 को समय 14:00 बजे क्षेत्रीय प्रबन्धक मेरठ के कार्यालय में रखे बोक्स में निविदा डाली जायेंगी। निविदा की पूर्ण शर्तें निविदा सूचना में अंकित हैं। उ0प्र0 राज्य सड़क परिवहन निगम की वेबसाईट tender@upsrtc.com पर भी देख सकते हैं।

क्षेत्रीय प्रबन्धक मेरठ।

सिक्योरिटाईजेशन एंड रिकन्स्ट्रक्शन ऑफ फाइनेंशियल एसेट्स एंड एन्फोर्समेंट ऑफ सिक्योरिटी इंटरेस्ट एक्ट, 2002 (अधिनियम) की धारा 13(2) के अंतर्गत सूचना

अनु. क्र.	कर्जदाता (ओं) का नाम (ए)	गिरवी संपत्ति(यों) का विवरण (बी)	एन.पी.ए की तारीख (सी)	बकाया राशि (रु.) (डी)
1.	कर्ज खाता क्र. HLLAALI00565926 1. मोहम्मद कासिफ (प्रोपराइटर) मैसर्स जेनर्स फिटिंग 2. जेबा 3. इशरत जहां	संपत्ति नंबर 1 प्लॉट के सभी भाग और खंड, जिसका कुल माप 330 वर्ग मीटर, 394.60 वर्ग गज के बराबर है, जो खेत/खसरा नंबर 220 का हिस्सा है, मौजा सरसौल में स्थित है, (बाहर चुंगी) परगना और तहसील कोल, जिला अलीगढ़-202202, उत्तर प्रदेश। संपत्ति नंबर 2 प्लॉट के सभी भाग और खंड, जिसका कुल माप 131 वर्ग मीटर, 156.66 वर्ग गज के बराबर है, जो खेत/खसरा नंबर 220 का हिस्सा है, मौजा सरसौल में स्थित है, (बाहर चुंगी) परगना और तहसील कोल, जिला अलीगढ़-202202, उत्तर प्रदेश। संपत्ति नंबर 3 प्लॉट के सभी भाग और खंड, जिसका कुल माप 220 वर्ग गज, यानी 183.95 वर्ग मीटर है, जो खेत/खसरा नंबर 220 का हिस्सा है, मौजा सरसौल में स्थित है, (बाहर चुंगी) परगना और तहसील कोल, जिला अलीगढ़-202202, उत्तर प्रदेश।	05.04.2026	रु. 2,77,04,167.72/- (रुपए दो करोड़ सतहत्तर लाख चार हजार एक सौ सड़सठ और बहत्तर पैसे मात्र) 15.04.2026 के अनुसार

कि ऊपर लिखे नाम वाला उधार लेने वाला(ले) ने ऋण खाते के वित्तीय अनुशासन को बनाए रख पाने में असफल रहे हैं तथा कंपनी द्वारा अपनी आम बिजनेस चर्या में रखे जाने वाले खातों के अनुसार प्रत्येक उधार पाने वाले (लों) के नाम के आगे स्तंभ डी में विनिर्दिष्ट धनराशि बकाया बनी हुई है।

उधार लेने वाले(लों) की ओर से ऋण धनराशि का पुनर्भुगतान में लगातार चूक होने के कारण उधार लेने वाले(लों) के ऋण खाते को कंपनी द्वारा सीमांकित मापदंडों के भीतर निष्पादनेतर परिसंपत्तियों (स्तंभ सी में तारीख के अनुसार) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। परिणामस्वरूप प्रत्येक उधार लेने वाले को अधिनियम की धारा 13(2) के अंतर्गत सूचनाएं भी जारी की गई हैं।

उपर्युक्त को दृष्टिगत रखते हुए कंपनी एतद्द्वारा ऊपर लिखे नाम वाले उधार लेने वाले(लों) का आह्वान करती है कि, वे इस सूचना के प्रकाशित होने के दिन से 60 दिन के भीतर अद्यतन ब्याज, लागतें, तथा शुल्कों सहित ऊपर स्तंभ डी में विनिर्दिष्ट संपूर्ण बकाया देयताओं का भुगतान करके कंपनी के प्रति बनने वाले अपने / उनके पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करें, ऐसा न करने पर कंपनी ऊपर के स्तंभ बी में उल्लिखित बंधक रखी गई संपत्ति को अधिग्रहीत करने के लिए कंपनी पात्र होगी।

कृपया ध्यान दें कि सरफेसी कानून की धारा 13 की उप-धारा (8) के प्रावधानों के अनुसार, "कर्जदार सार्वजनिक नीलामी द्वारा, कोटेशन आमंत्रित करते हुए, सार्वजनिक निविदा या निजी समझौते द्वारा सुरक्षित आस्तियों की बिक्री के लिए सूचना के प्रकाशन के दिनांक तक केवल सिक्योर्ड क्रेडिटर द्वारा किए गए सभी खर्चों, लागतों और प्रभारों के साथ संपूर्ण बकाया देय राशि अदा कर सकता है, इसके अलावा यह भी ध्यान दें कि उपरोक्त विधिक रूप से निर्धारित समयावधि के अंदर सुरक्षित आस्ति का मोचन करने में कर्जदार विफल रहने पर कर्जदार संपत्ति का मोचन करने के लिए पात्र नहीं हो सकता"

सरफेसी अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (13) के प्रावधान के संदर्भ में, आप इस प्रकार बिक्री, पट्टे के माध्यम से अन्यथा नोटिस में उल्लिखित अपनी सुरक्षित संपत्तियों में से कोई भी (अपने व्यापार के सामान्य पाठ्यक्रम के अलावा) सुरक्षित लेनदार की पूर्व लिखित सहमति के बिना स्थानांतरित करने से प्रतिबंधित हैं।

स्थान : अलीगढ़

कृते सम्मान फिनसर्व लिमिटेड
(पहले इंडियाबुल्स कमर्शियल क्रेडिट लिमिटेड के नाम से जाना जाता था)
प्राधिकृत अधिकारी

HDFC BANK

एचडीएफसी बैंक लिमिटेड

शाखा : द कैपिटल कोर्ट, मुनिरका, आउटर रिंग रोड, ओलोफ पाल्मे मार्ग, नई दिल्ली-67
फोन : 011-41596568, कॉर्पोरेट पहचान संख्या : एल65920एमएच1994पीएलसी080618, वेबसाइट : www.hdfcbank.com

कब्जा सूचना

चूंकि, **एचडीएफसी बैंक लिमिटेड** (इससे पूर्व एचडीएफसी लिमिटेड जिसका माननीय एनसीएलटी-मुंबई के 17 मार्च 2023 दिनांकित आदेश से अनुमोदित समामेलन की एक योजना के तहत एचडीएफसी बैंक लिमिटेड में विलय हो गया है) **(एचडीएफसी)** के प्राधिकृत अधिकारी ने वित्तीय परिसम्पत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण और प्रतिभूति हित अधिनियम, 2002 के प्रवर्तन के अधीन प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अंतर्गत प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए अधिनियम की धारा 13(2) के अधीन निम्नलिखित कर्जदारों/कानूनी उत्तराधिकारियों/कानूनी प्रतिनिधियों/बंधककर्ताओं को एक मांग सूचना जारी की जिसमें उनके नामों के सम्मुख दर्शाई गई राशि और कथित सूचना में दर्शाये गए विवरण के अनुसार लागू दर पर ब्याज तथा भुगतान की तिथि और/या वसूली तक प्रासंगिक व्यय, लागत एवं प्रभार आदि के साथ राशि को कथित मांग सूचना की तिथि से 60 दिनों के भीतर भुगतान करने के लिए कहा गया।

क्र. सं.	कर्जदारों/कानूनी उत्तराधिकारियों/कानूनी प्रतिनिधियोंका नाम	बकाया राशि	मांग सूचना की तिथि	प्रतिकात्मक कब्जा करने की तिथि	अचल सम्पत्ति/प्रतिभूत परिसम्पत्ति का विवरण
1.	श्री चांद श्री	30 नवम्बर 2025 को बकाया रु 9,10,450/- (नौ लाख दस हजार चार सौ पचास रुपये मात्र)	02-दिसम्बर-2025	24-अप्रैल-2026	रो हाउस 384-385, ब्लॉक एम, एमडीए गंगा नगर, गंगा नगर कॉलोनी, मेरठ, उत्तर प्रदेश और उस पर वर्तमान और भविष्य में होने वाला निर्माण भी शामिल है।
2.	श्री धर्मवीर सिंह और श्रीमती राजेश देवी	31 अक्टूबर 2025 को बकाया रु 17,52,679/- (सत्रह लाख बावन हजार छह सौ उनासी रुपये मात्र)	29-नवम्बर-2025	24-अप्रैल-2026	फ्लैट -एस-12, प्लॉट नंबर ए 116, मंजिल-2, एपेक्स सिटी फ्लोर्स, क्रम संख्या खसरा नंबर 252 का हिस्सा, बागपत रोड, विद्या नॉलेज पार्क से पहले, रामपुर (V), मेरठ, उत्तर प्रदेश के साथ निचली भूमि का अविभाजित आनुपातिक हिस्सा शामिल है।
3.	श्री आशु, श्री जय पाल सिंह और गीता देवी	30 नवम्बर 2025 को बकाया रु 21,19,720/- (इक्कीस लाख उन्नीस हजार सात सौ बीस रुपये मात्र)	18-दिसम्बर-2025	24-अप्रैल-2026	अपार्टमेंट एल-414, आनंद विहार आवासीय योजना, योजना 232, हापुड़, उत्तर प्रदेश के साथ निचली भूमि का अविभाजित आनुपातिक हिस्सा शामिल है।
4.	श्री विशाल राणा सिंह और श्रीमती आशा राणा	30 नवम्बर 2025 को बकाया रु 16,65,728/- (सोलह लाख पैंसठ हजार सात सौ अट्ठाईस रुपये मात्र)	03-दिसम्बर-2025	24-अप्रैल-2026	फ्लैट नंबर जी-82, दूसरी मंजिल, खसरा नंबर 293ए, सरस्वती वाटिका कॉलोनी, नूर नगर, मेरठ, उत्तर प्रदेश के साथ निचली भूमि का अविभाजित आनुपातिक हिस्सा शामिल है।
5.	श्री पुनीत कुमार और श्रीमती कुसुम शर्मा	31 मई 2025 को बकाया रु 4,31,244/- (चार लाख इकत्तीस हजार दो सौ चवालीस रुपये मात्र)	05-जून-2025	24-अप्रैल-2026	फ्लैट नंबर 1116, 10वीं मंजिल, सुपरटेक ग्रीन विलेज, ब्लॉक एफ, खसरा नंबर 239, 253, 243, 253एम, 253/5, गाँव नूर नगर और नागल शरखान, मेरठ-हापुड़ बाईपास, उत्तर प्रदेश के साथ निचली भूमि का अविभाजित आनुपातिक हिस्सा शामिल है।

*भुगतान और/या वसूली की तिथि तक उपार्जित जैसा भी लागू अनुसार आगे ब्याज, प्रासंगिक व्यय, लागतें, प्रभार आदि के साथ।

तथापि, उपरोक्त वर्णित कर्जदार बकाया राशि का भुगतान करने में असफल रहे हैं, इसलिए विशेषतः उपरोक्त वर्णित कर्जदारों और आम जनता को एतद्द्वारा सूचित किया जाता है कि एचडीएफसी के प्राधिकृत अधिकारियों ने अधिनियम की धारा 13(4) के पठित कथित अधिनियम के नियम 8 के अधीन प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करते हुए उपरोक्त दर्शाई गई तिथि से उपरोक्त वर्णित **क्रम सं0 1 से 5 की अचल सम्पत्तियों/प्रतिभूत परिसम्पत्तियों पर प्रतिकात्मक कब्जा** ले लिया है।

विशेषकर यहाँ उपरोक्त वर्णित कर्जदारों और आम जनता को एतद्द्वारा सावधान किया जाता है कि उपरोक्त वर्णित अचल सम्पत्तियों/प्रतिभूत परिसम्पत्तियों के साथ लेनदेन न करें और कथित अचल सम्पत्तियों/प्रतिभूत परिसम्पत्तियों पर कोई भी लेनदेन एचडीएफसी के बंधक के अधीन होगा।

अधिनियम की धारा 13 की उप-धारा (8) के प्रावधानों के अनुसरण में, उपरोक्त वर्णित कर्जदारों को प्रतिभूत परिसम्पत्तियों के विमोचन के लिए उपलब्ध समय के संबंध में आकृष्ट/आमंत्रित किया जाता है/जाते हैं।

लिखित जारी पंचनामा और बनाई गई मालसूची की प्रतियाँ अधोहस्ताक्षरी के पास उपलब्ध हैं, और कथित कर्जदारों से अनुरोध है कि वे किसी भी सामान्य कार्य दिवस पर कार्यालय अवधि के दौरान अधोहस्ताक्षरी से संबंधित प्रतियाँ प्राप्त कर लें।

स्थानः मेरठ
दिनांकः 29-अप्रैल-2026

कृते एचडीएफसी बैंक लिमिटेड
ह0/-
प्राधिकृत अधिकारी

पंजीकृत कार्यालयः एचडीएफसी बैंक हाउस, सेनापति बापट मार्ग, लोअर परेल (पश्चिम), मुंबई - 400013

धामपुर में महिलाओं ने पुतला फूंका

संसद में महिला आरक्षण के पक्ष में वोट न देने पर जताया आक्रोश

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। सुमंगलम फार्म हाउस में भारतीय जनता पार्टी के बैनर तले जन आक्रोश महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया।

सम्मेलन में विधायक अशोक राणा ने कहा कि विपक्षी दलों के कारण महिलाओं को मिलने वाले आरक्षण में बाधा उत्पन्न हो रही है और इसके लागू होने में अनावश्यक देरी हो रही है। उन्होंने केंद्र सरकार की विभिन्न महिला कल्याणकारी योजनाओं का उल्लेख करते हुए महिलाओं को जागरूक रहने का आह्वान किया।

भाजपा जिला अध्यक्ष भूपेंद्र चौहान बाँधी ने कहा कि संगठन में महिलाओं को विशेष महत्व दिया जा रहा है और पार्टी उन्हें 33 प्रतिशत आरक्षण दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री रश्मि शर्मा रावल ने कहा कि विपक्ष के षड्यंत्र के चलते संसद में नारी शक्ति वंदन बिल पारित नहीं हो सका। जिसके विरोध में महिलाओं को सड़कों पर उतरना चाहिए।

कार्यक्रम प्रभारी एवं महिला मोर्चा की जिला उपाध्यक्ष योजना गुप्ता के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में जिला मंत्री मिथिलेश सिंह, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष महेंद्र धनौरिया, ग्राम प्रधान संगठन की अध्यक्ष संध्या चौधरी सहित कई वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन भाजपा नगर अध्यक्ष दीपक अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष राजू गुप्ता, डॉ. एनपी सिंह, डॉ. विनीत देवरा, जितेंद्र गोयल, सरदार सतमीत सिंह मनी, सरदार जसप्रीत सिंह रांकी, सुमित माहेश्वरी, मलखान सिंह, दीप सौरभ सिंह पाथ, अनिल कुमार, सीमा शर्मा, सोनिका अग्रवाल, ज्योति, शीला देवी, सुमन देवी, आशा रानी, वैशाली, संतोष, ममता सैनी, रितिका अग्रवाल सहित अनेक महिलाएं मौजूद रहीं। सम्मेलन के बाद रैली निकाली गई, जो पुलिस सुरक्षा में नगीना चौराहे तक पहुंची। जहां अखिलेश यादव व राहुल गांधी का पुतला दहन किया गया।

रोडवेज बस-ट्रैक्टर ट्राली की टक्कर

आधा दर्जन से अधिक गंभीर रूप से घायल

शाह टाइम्स संवाददाता

नजीबाबाद। जलालाबाद में बीती रात करीब दो बजे एक रोडवेज बस और ट्रैक्टर-ट्रॉली की आमने-सामने की टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में बस चालक, परिचालक, ट्रैक्टर चालक और कई यात्रियों सहित आधा दर्जन से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

बिजनौर से आ रही रोडवेज बस की टक्कर सामने से गलत दिशा से आ रही ट्रैक्टर-ट्रॉली संख्या यूके 17 डी 2358 से हुई। ट्रैक्टर-ट्रॉली में भैंस के बच्चे भरे हुए थे। घायलों को तत्काल पुलिस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र समीपुर भेजा गया। नजीबाबाद थाना प्रभारी अमित कुमार ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि सभी घायलों का उपचार जारी है। मामले में अभी तक कोई तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। घायलों में नगीना निवासी अनिल कुमार पुत्र प्रताप सिंह, कोतवाली देहात निवासी बस चालक सुमित कुमार पुत्र तेजपाल, कोटद्वार गढ़वाल निवासी संतोषी रावत पत्नी अरविंद रावत, पावोक गढ़वाल निवासी धर्मेंद्र पुत्र करण सिंह, कोटद्वार गढ़वाल निवासी संदीप नेगी पुत्र दलबीर सिंह, कोटद्वार गढ़वाल निवासी नसीम पुत्र नाजिम, पवोक गढ़वाल निवासी बलवंत सिंह पुत्र कल्याण सिंह, सतपुली निवासी रोशन जोयल पुत्र श्याम सिंह जोयल, कनखल हरिद्वार उत्तराखंड निवासी अभिषेक तिवारी पुत्र विजेंद्र तिवारी और चमोली निवासी त्रिलोक रावत पुत्र खेम सिंह शामिल हैं।

एक नजर

सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

स्योहारा। नगर क्षेत्र में शांति एवं कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के उद्देश्य से थाना स्योहारा पुलिस द्वारा थाना प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार के नेतृत्व में फ्लैग मार्च निकाला गया। फ्लैग मार्च के माध्यम से पुलिस प्रशासन ने आमजन में सुरक्षा का भरोसा मजबूत करने के साथ-साथ असामाजिक तत्वों को सख्त संदेश दिया। फ्लैग मार्च नगर के प्रमुख बाजारों मुख्य मार्गों एवं संवेदनशील क्षेत्रों से होकर गुजरा। इस दौरान पुलिस बल ने पैदल मार्च करते हुए लोगों से संवाद स्थापित किया तथा नागरिकों से शांति व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग की अपील की। थाना प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार ने कहा कि क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखना पुलिस की प्राथमिकता है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को दें ताकि समय रहते आवश्यक कार्रवाई की जा सके। पुलिस अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि नगर में शांति भंग करने या कानून व्यवस्था बिगाड़ने का प्रयास करने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी। फ्लैग मार्च के दौरान बाजारों में सुरक्षा व्यवस्था का भी जायजा लिया गया, जिससे आमजन में सुरक्षा की भावना और मजबूत होती दिखाई दी। फ्लैग मार्च के चलते नगर में पुलिस की सक्रियता साफ नजर आई और लोगों ने पुलिस की इस पहल की सराहना की।

आवारा कुत्तों का बढ़ता आतंक

स्योहारा। नगर के गुरुद्वारे के आसपास इन दिनों आवारा कुत्तों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है, जिससे क्षेत्रवासियों में भय और चिंता का माहौल बना हुआ है। आए दिन राहगीरों और विशेष रूप से स्कूल आने-जाने वाले मासूम बच्चों पर कुत्तों के झुंड द्वारा हमला किए जाने की घटनाएं सामने आ रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि जिन परिवारों के छोटे-छोटे बच्चे हैं। वे सबसे ज्यादा परेशान हैं। अभिभावकों को हर समय यह डर बना रहता है कि कब रास्ते से गुजरते समय आवारा कुत्ते हमला कर दें और उनका बच्चा किसी हादसे का शिकार हो जाए। इसी वजह से बच्चे डर के माहौल में स्कूल आने-जाने को मजबूर हैं। हाल ही में हुई एक घटना सीसीटीवी कैमरे में भी कैद हुई, जिसमें स्कूल से लौट रहे बच्चों की ओर कुत्तों ने दौड़ लगा दी। आसपास मौजूद लोगों की सतर्कता से बच्चों को सुरक्षित बचा लिया गया, जिससे बड़ा हादसा टल गया घटनाओं के बाद मोहल्लेवासियों में चिंता बढ़ गई है। लोगों ने नगर पालिका प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द अभियान चलाकर आवारा कुत्तों को पकड़ा जाए और क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि आम नागरिकों और बच्चों को राहत मिल सके।

तेज धूप व लू ने बढ़ाई मुश्किलें

स्योहारा। क्षेत्र में पड़ रही भीषण गर्मी और तेज धूप से जनजीवन प्रभावित होने लगा है। बढ़ते तापमान और लू के खतरे को देखते हुए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ. बी.के. स्नेही ने शासन से प्राप्त एडवाइजरी जारी कर लोगों से सतर्क रहने की अपील की है। बुधवार को सुबह मौसम में हल्का बदलाव रहा, लेकिन दोपहर में तेज धूप और गर्म हवाओं ने लोगों को परेशान कर दिया। बाजारों व सड़कों पर लोग छाता और गमछा लेकर निकलते नजर आए। स्कूल से लौटते बच्चे भी धूप से बचाव करते दिखाई दिए। मौसम विभाग के अनुसार मई माह में तापमान 44 से 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने तथा लू चलने की संभावना है। डॉ. बी.के. स्नेही ने बताया कि लू से बचने के लिए अधिक पानी पिएं, हल्के सूती कपड़े पहनें, धूप में निकलते समय छाता या सिर ढककर निकलें तथा बासी भोजन से बचें, लू के लक्षण दिखाई देने पर व्यक्ति को तुरंत छांव में ले जाकर ठंडा करें और चिकित्सकीय परामर्श लें। उन्होंने बताया कि सीएचसी स्योहारा में हीट वेव से प्रभावित मरीजों के उपचार हेतु पांच बेड आरक्षित किए गए हैं। साथ ही जनता से अपील की कि शासन की एडवाइजरी का पालन करें और किसी भी स्वास्थ्य समस्या होने पर तुरंत अस्पताल पहुंचकर उपचार लें।

कृष्णा का परीक्षाफल घोषित

बिजनौर। एमजेपी रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली द्वारा एमएससी तृतीय सेमेस्टर गृह विज्ञान फूड एण्ड न्यूट्रिशियन के घोषित परिणाम में कृष्णा कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड इन्फॉर्मेशन टैक्नोलॉजी की छात्राओं का परीक्षाफल शत प्रतिशत रहा। एमएससी तृतीय सेमेस्टर गृह विज्ञान फूड एण्ड न्यूट्रिशियन की छात्रा प्राची ने 8.23 एसजीपीए प्रथम, आंचल ने 7.92 एसजीपीए द्वितीय तथा स्वाति ने 7.54 एसजीपीए प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। महाविद्यालय परिवार इन सभी विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना करता है। कृष्णा कॉलेज के प्रबन्धक मनोज कुमार ने सभी उत्तीर्ण छात्राओं को बधाई देते हुए कहा कि कृष्णा कॉलेज का परिणाम सदैव ही अत्युत्तम रहा है। हमारा निरन्तर यही प्रयास रहता है कि छात्राओं को कॉलेज में आधुनिक व शैक्षिक वातावरण मिले। जिससे कि वह प्रोफेशनल एजुकेशन को बेहतर रूप से समझ सकें। कॉलेज के संस्थापक निद. शक राजीव कुमार, प्रबन्धक मनोज कुमार, निदेशक पवन कुमार, कॉलेज प्राचार्या डॉ. सीमा शर्मा तथा गृह विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. शालिनी शर्मा, सहायक प्रवक्ता श्रीमती ज्योति चौहान, श्रीमती प्रीति चौहान, श्रीमती मुक्ता चौधरी, सायमा खानम ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

शुगर मिल टीम का निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। धामपुर शुगर मिल के उपाध्यक्ष श्री आशीष शर्मा एवं विभागाध्यक्ष गन्ना विकास करुण अग्रवाल ने जॉन नहटौर के अंतर्गत फतेहपुर असल, सीकरी और फुलसन्दा गांवों में बर्सातकालीन गन्ना बुवाई एवं पेड़ी गन्ने की फसल का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान पेड़ी गन्ने में वाटर शूट अधिक मात्रा में पाए गए, जिस पर अधिकारियों ने संबंधित कर्मचारियों को उन्हें कटवाने के निर्देश दिए। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि गन्ने की फसल में टॉप बोरर के प्रकोप को कम करने के लिए सीटीपीआर, कोरागन, नेटजन एवं बोलियम की ड्रैंचिंग अवश्य कराई जाए।

इस दौरान फील्ड सुपरवाइजर नृपेन्द्र कुमार भी मौजूद रहे। अधिकारियों ने किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए जागरूक करते हुए फसल की बेहतर देखभाल पर जोर दिया।

भाजपा ने विपक्ष का पुतला फूंका

'जनाक्रोश' पदयात्रा कर जताया विरोध

शाह टाइम्स संवाददाता

नजीबाबाद। भाजपा कार्यकर्ताओं और महिलाओं ने महिला आरक्षण बिल (131वां संविधान संशोधन) का समर्थन न करने पर विपक्ष के खिलाफ प्रदर्शन किया। केंद्र सरकार द्वारा लाए गए इस बिल के विरोध में भाजपा ने 'जनाक्रोश महिला पदयात्रा' निकाली और विपक्ष के रवैये को महिला विरोधी बताते हुए नारेबाजी की।

यह पदयात्रा नगर के संतोषी माता मंदिर से शुरू हुई। इसमें भाजपा महिला मोर्चा की पदाधिकारी और कई कार्यकर्ता हाथों में तख्तियां लिए हुए थे। पदयात्रा चौक बाजार से होते हुए कल्लूगंज पहुंची, जहां एक जनसभा आयोजित की गई और उसके बाद विपक्ष का पुतला दहन किया गया।

इस अवसर पर राज्य महिला आयोग की सदस्य संगीता जैन अग्रवाल ने विपक्ष की आलोचना की। उन्होंने कहा 33 प्रतिशत महिला आरक्षण बिल जैसे ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण मुद्दे पर विपक्ष का अड़ियल रवैया देश की आधी आबादी के साथ अन्याय है। विपक्ष ने संशोधन प्रस्ताव को गिराकर अपनी मानसिकता स्पष्ट कर दी है, लेकिन देश की महिलाएं और भाजपा कार्यकर्ता इस अपमान को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

प्रदर्शन के दौरान बलराज त्यागी, नगर अध्यक्ष नकुल अग्रवाल, मोनिका यादव, मनीष सैनी, सुनीता अग्रवाल, सुविधा भटनागर, गायत्री निराला, इंदु राजपूत, गीता राज, बिट्टू भटनागर, अभिषेक यादव, हार्दिक अग्रवाल और हिमांशु तायल सहित कई भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

पदयात्रा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल भी तैनात किया गया था।

विवेक विश्वविद्यालय में बीवीएससी एंड एएच कोर्स का होगा संचालन

एमबीबीएस के बाद पशु चिकित्सक के इस कोर्स की सबसे अधिक मांग

शाह टाइम्स ब्यूरो

बिजनौर। शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करते हुए विवेक विश्वविद्यालय अब बैचलर ऑफ वेटरिनरी साइंस एंड एनिमल हसबेंडरी कोर्स का संचालन करेगा। अब तक उत्तर प्रदेश में यह कोर्स मुख्यत: केवल सरकारी विश्वविद्यालयों में ही संचालित होता था, उत्तर प्रदेश के अनेकों छात्र सीट्स कम होने के कारण प्रवेश से वंचित रह जाते थे। ऐसे में निजी क्षेत्र में इस कोर्स की शुरुआत प्रदेश के विद्यार्थियों के लिए एक बड़ा अवसर साबित होगी। सभी प्रवेश नीट की मेरिट के आधार पर किए जाएंगे।

इस प्रतिष्ठित कोर्स के संचालन हेतु वेटरिनरी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा विश्वविद्यालय को अनुमति प्रदान की गई है, जो संस्थान की गुणवत्ता, संसाधनों और शैक्षणिक मानकों पर मुहर लगाती है। चिकित्सा क्षेत्र में एमबीबीएस के बाद बीवीएससी एंड एएच कोर्स देश के सबसे अधिक मांग वाले प्रोफेशनल कोर्सेज में से एक है, जिसमें रोजगार और स्वरोजगार की व्यापक संभावनाएं उपलब्ध हैं। पशु चिकित्सक, पशुपालन, डेयरी, पोल्ट्री, अनुसंधान एवं सरकारी सेवाओं में इस कोर्स के छात्रों की लगातार बढ़ती मांग है।

विवेक विश्वविद्यालय द्वारा इस कोर्स की शुरुआत से न केवल क्षेत्र के छात्रों को अपने ही जिले में उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा, बल्कि यह कदम पशुपालन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। विश्वविद्यालय कुलाधिपति अमित कुमार गोयल ने बताया कि आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, अनुभवी फैकल्टी और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाएगी। प्रवेश के लिए पंजीकरण प्रारम्भ हो चुके हैं। यह पहल विवेक विश्वविद्यालय को शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

धामपुर पब्लिक स्कूल में एनसीसी चयन प्रक्रिया का आयोजन

छात्राओं ने अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्साह के साथ प्रतिभा का किया प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। पब्लिक स्कूल में नई छात्राओं के लिए एनसीसी चयन प्रक्रिया का आयोजन किया गया। इस चयन में बड़ी संख्या में छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

यह चयन टीम 9 यूपी गर्ल्स बटालियन एनसीसी मुरादाबाद से विद्यालय में पहुंची थी। चयन प्रक्रिया के अंतर्गत छात्राओं की शारीरिक दक्षता लिखित परीक्षा, ऊंचाई एवं वजन का परीक्षण किया गया। सभी छात्राओं ने अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्साह के साथ अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

इस चयन प्रक्रिया को सफल बनाने में सेकेंड ऑफिसर कंचन रानी का विशेष योगदान रहा। चयन के लिए आए सुबेदार विकास कुमार एवं हवलदार चंदर पाल सिंह ने पूरी प्रक्रिया को निष्पक्ष एवं सुव्यवस्थित रूप से संपन्न कराया।

इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बबीता गुप्ता ने छात्राओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि एनसीसी न केवल अनुशासन और नेतृत्व क्षमता विकसित करता है, बल्कि यह देश सेवा की भावना को भी मजबूत बनाता है। उन्होंने चयनित छात्राओं को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस चयन प्रक्रिया के माध्यम से योग्य छात्राओं का चयन किया गया। जो आगे चलकर एनसीसी की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगी।

भजनों के माध्यम से बाबा बजरंगबली का गुणगान

शाह टाइम्स संवाददाता

धामपुर। सात बार सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। उसके बाद भजनों के माध्यम से बजरंगबली बाबा का गुणगान किया गया।

कालागढ़ रोड स्थित भारतीय स्टेट बैंक वाली गली में स्थित डॉ. एके सक्सेना के आवास पर श्रीमद् हनुमत भक्ति प्रचार मंडल द्वारा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया। उसके बाद भजनों के माध्यम से बजरंगबली बाबा का गुणगान किया गया। भजन मां अंजनी के लाल तेरी नहीं कोई मिसाल, बालाजी तेरा नाम मोहे अच्छा लगे रे। यह भजन सबको खूब पसंद आया। सब ने तालियां बजा कर उत्साहवर्धन किया। अंत में आयोजक परिवार को राम दरबार का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। आयोजक परिवार में डॉ. एके सक्सेना, नीलम सक्सेना रवि मोहन भटनागर, डॉ. करिस्मा सक्सेना, डॉ. कुशाग्र सक्सेना, नितिन सक्सेना, प्रणव सक्सेना, वेदांत सक्सेना, रूदांश सक्सेना आदि शामिल रहे। श्रीमद् हनुमत भक्ति विचार मंडल के अध्यक्ष अरुण अग्रवाल श्रीश्री 108 महामंडलेश्वर आचार्य डॉक्टर दिनेश चंद्र भारद्वाज, महंत राहुल अग्रवाल, मनोज रस्तोगी राम प्रकाश वर्मा, प्रीतम सैनी, नरेश वत्स, नंदकिशोर रस्तोगी, संदीप भारद्वाज, निखिल अरोड़ा आदि शामिल रहे। अंत में बालाजी की आरती कर प्रसाद वितरित किया गया। सब ने प्रसाद ग्रहण कर धर्म लाभ उठाया।

रोडवेज बस की टक्कर से टैम्पू पलटा, चालक घायल

शेरकोट। ग्राम खुराड़ा निवासी छत्रपाल पुत्र रामसिंह अपने खाली मालवाहक टैम्पो से धामपुर से शेरकोट की ओर जा रहा था। जैसे ही वह बस स्टॉप के पास पहुंचा, तो पीछे से आ रही तेज रफ्तार रोडवेज बस ने उसे साइड मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि टैम्पो अनियंत्रित होकर सड़क पर पलट गया। हादसे में चालक छत्रपाल घायल हो गया और मौके पर ही दर्द से कराहने लगा। आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत उसकी मदद की और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल को एंबुलेंस के जरिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाया। जहां उसका इलाज जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बस चालक की लापरवाही और तेज रफ्तार इस हादसे का मुख्य कारण मानी जा रही है।

अवैध कब्जे की शिकायत पर कार्रवाई

राजस्व विभाग की टीम ने की भूमि की पैमाइश

शाह टाइम्स संवाददाता

नहटौर। चामुंडा देवी मंदिर की भूमि पर अवैध कब्जे की शिकायत के बाद राजस्व विभाग की टीम ने आज मौके पर पहुंचकर पैमाइश की। यह कार्यवाही चामुंडा देवी मंदिर ट्रस्ट की शिकायत पर की गई।

प्राप्त समाचार के अनुसार पीर की चुंगी के पास स्थित चामुंडा देवी मंदिर ट्रस्ट ने मंदिर की जमीन पर अवैध कब्जे की शिकायत दर्ज कराई थी। ट्रस्ट के अध्यक्ष चेतराम सिंह के अनुसार मंदिर की कुछ भूमि पर अवैध रूप से निर्माण व कब्जे का प्रयास किया जा रहा है। शिकायत का संज्ञान लेते हुए राजस्व विभाग की एक टीम दोपहर करीब तीन बजे मौके पर पहुंची।

टीम में कानूनगो ओमवीर सिंह, हल्का लेखपाल ब्रह्म सिंह रवि आदि शामिल थे। टीम ने विवादित स्थल का निरीक्षण किया और फीते से पूरी जमीन की पैमाइश की।

इस दौरान मौके पर काफी भीड़ जमा रही और अधिकारियों ने संबंधित पक्षों से जानकारी भी जुटाई। कानूनगो ओमवीर सिंह ने बताया कि पैमाइश कर ली गई है। इसकी रिपोर्ट उच्च अधिकारियों को भेजी जाएगी।

आत्महत्या नहीं, ऑनर किलिंग! घर के अंदर रची गई हत्या की खौफनाक साजिश

मां निकली बेटी की कातिल! नाबालिग बेटे संग मिलकर की बेटी की हत्या

शाह टाइम्स ब्यूरो

नौगांवा सादात। क्षेत्र में 14 वर्षीय किशोरी की मौत का मामला उस वक्त दिल दहला देने वाली ऑनर किलिंग में बदल गया, जब पुलिस जांच में हैरान कर देने वाला खुलासा हुआ। जिस घटना को शुरुआत में आत्महत्या बताया जा रहा था, वह दरअसल परिवार की इज्जत के नाम पर रची गई साजिश निकली। आरोप है कि किशोरी के प्रेम संबंध से नाराज मां और नाबालिग भाई ने ही गला दबाकर उसकी हत्या कर दी और सबूत मिटाने के लिए शव को फंदे पर लटका दिया, ताकि मामला आत्महत्या का लगे। पुलिस ने हत्यारो.पी मां को को जेल भेज दिया जबकि बाल अपचारी भाई को बाल सुधार गृह भेजा गया है।

यह घटना नौगावां सादात थाना क्षेत्र के एक गांव की थी। यहां पर एक राजमिस्त्री का परिवार रहता है। सोमवार सुबह में अचानक उनकी 14 वर्षीय बेटी की मौत हो गई थी। इसके बाद पूरे गांव में आत्महत्या किए जाने का शोर मच गया था लेकिन एकाएक ही आत्महत्या की कहानी उस वक्त किसी के भी गले नहीं उतरी थी। दरअसल, रविवार रात में घर से गायब

■ ऑनर किलिंग में मां-बेटा गिरफ्तार, एसपी ने किया हत्याकांड का खुलासा

किशोरी आधी रात में पड़ोसी प्रेमी के घर से आपत्तिजनक हालत में मिली थी। जिसे लेकर गांव में सुबह सवेरे तक हंगामा चला था। पुलिस के पूछने पर परिजनों ने बताया कि उनकी बेटी ने पड़ोसी से हुए झगड़े के बाद आत्महत्या की है। पंचनामा भरकर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था लेकिन बाद में मृतका के पिता ने पड़ोसी के बेटे पर गला दबाकर हत्या करने का आरोप लगाते हुए थाने में तहरीर दे दी थी। जिसके बाद पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया था। परिजनों का आरोप था कि आरोपी उनकी बेटी को 26 अप्रैल की सुबह को बहला-फुसला कर ले गया था। जिसे थोड़ी देर बाद ही बरामद कर लिया था। लेकिन, घंटाभर बाद उसने घर में घुस कर गला दबा कर

हत्या कर दी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी गला दबा कर हत्या किए जाने की पुष्टि की गई थी। परिजनों के बार-बार बयान से पलटने पर पुलिस इस मामले की गहनता से जांच कर रही थी। जिसमें मंगलवार शाम को सच्चाई सामने आ गई। किशोरी की गला दबाकर हत्या प्रेमी ने नहीं बल्कि उसकी मां व नाबालिग भाई ने की थी। हत्या को आत्महत्या का रूप देने के लिए गले में दुपट्टे का फंदा बनाकर शव को लटका दिया था। बुधवार को एसपी लखन सिंह यादव ने पुलिस कार्यालय सभागार में प्रेस कांफ्रेंस कर इस घटना का पर्दाफाश किया। उन्होंने बताया कि बेटी के घर वापस लौटने के बाद राजमिस्त्री काम पर चला गया था। जबकि, प्रेमी के साथ जाने से हुई बदनामी और आन की खातिर मां व नाबालिग भाई ने घर के भीतर ही गला दबाकर उसकी हत्या कर दी। हत्यारोपी मां को गिरफ्तार कर जेल तो वहीं बाल अपचारी भाई को अभिरक्षा में लेते हुए बाल सुधार गृह भेजा गया है। वहीं, एसपी ने घटना का खुलासा करने वाली पुलिस टीम को 15 हजार रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की। इस दौरान एएसपी अखिलेख भदौरिया, सीओ अवधभान सिंह भदौरिया व प्रभारी निरीक्षक बालेंद्र कुमार मौजूद रहे।

तीन दिन तक किशोरी की मौत बनी पहेली

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। आखिर वह घटना, जिसने तीन दिनों तक पुलिस और लोगों को उलझाए रखा, उसका सच इस तरह सामने आएगा यह किसी ने सोचा भी नहीं था। शुरुआत में मामला आत्महत्या माना गया और गांव में भी यही चर्चा रही। लेकिन अगले ही दिन कहानी ने मोड़ लिया और प्रेमी के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज हो गया। जांच आगे बढ़ी तो तस्वीर पूरी तरह बदल गई। बुधवार को जब पुलिस ने मृतका किशोरी की मां को हिरासत में लिया तो सामने आया कि यह आत्महत्या या साधारण हत्या नहीं, बल्कि ऑनर किलिंग थी। इस खुलासे ने सभी को हैरान कर दिया और गांव में चर्चाओं का दौर तेज हो गया। यह घटना बताती है कि सच तक पहुंचना कितना जटिल हो सकता है। शुरुआती तौर पर जो दिखता है, कई बार हकीकत उससे बिल्कुल अलग होती है, और जांच के साथ-साथ हर परत खुलती चली जाती है।

इज्जत के नाम पर बर्बाद हुआ परिवार

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। बेटी की हत्या के इस मामले ने एक पूरे परिवार की जिंदगी को तबाह कर दिया। इज्जत के नाम पर उठाए गए कदम में जहां मां को जेल जाना पड़ा, वहीं नाबालिग भाई भी इस अपराध में फंसकर बाल सुधार गृह पहुंच गया। जिस बेटे के हाथों में अभी किताबें होनी चाहिए थीं, वह अब कानून की गिरफ्त में है। एक पल के गुस्से और सामाजिक दबाव में लिया गया फैसला न सिर्फ बेटी की जिंदगी ले गया, बल्कि एक बेटे का भविष्य भी अंधेरे में धकेल गया। आज इस परिवार में न बेटी बची, न मां घर पर है और न ही बेटा अपने सामान्य जीवन में। एक गलत निर्णय ने तीन जिंदगियों को बर्बाद कर दिया।

फरीदाबाद में संदिग्ध हालत में युवक की मौत

कमरे में फंदे से लटका मिला शव

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। डिडौली क्षेत्र के गांव हरियाना निवासी युवक का फरीदाबाद में संदिग्ध परिस्थितियों में शव कमरे में पंखे से लटका मिला। घटना की सूचना मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया, जबकि पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है। डिडौली क्षेत्र के गांव हरियाना में किसान आसिफ अली का परिवार रहता है। उनके परिवार में पत्नी भूरी व दो बेटे हैं। 17 वर्षीय बड़ा बेटा नावेद तीन दिन पहले गांव के चार दोस्तों के साथ रोजगार की तलाश में फरीदाबाद के भड़कल क्षेत्र गया था। जहां वह एक साइट पर कारपेंटर का काम कर रहा था। मंगलवार को उसके साथी काम पर चले गए जबकि नावेद अपने कमरे पर ही रुका रहा। शाम को जब साथी वापस लौटे तो उन्हें कमरे का दरवाजा अंदर से बंद मिला। आवाज देने पर भी अंदर से कोई आहट नहीं सुनाई दी। इस पर

साथियों ने दरवाजा तोड़ दिया। अंदर जाकर देखा तो होश उड़े रह गए। कमरे में पंखे के सहारे नावेद का शव फंदे पर लटका हुआ था। उन्होंने इसकी सूचना तुरंत पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। वहीं, बेटे की मौत की खबर मिलते ही परि. जनों में कोहराम मच गया। रात में ही परिजन फरीदाबाद के लिए रवाना हो गए। नावेद के आत्मघाती कदम उठाने के पीछे क्या कारण रहे, ये स्पष्ट नहीं हो सका है। जवान बेटे की मौत पर परिजनों का रोते बिलखते बुरा हाल है।

खेत की सिंचाई कर रहे किसान पर हमला

चार नामजदों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

शाह टाइम्स ब्यूरो

नौगांवा सादात। थाना क्षेत्र के गांव जब्बारपुर में खेत में सिंचाई कर रहे एक किसान पर हमला किया गया। पुलिस ने इस मामले में रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित शमसुद्दीन ने आरोप लगाया है कि 25 अप्रैल की दोपहर करीब 1:30 बजे जब वह अपने खेत में सिंचाई कर रहे थे, तभी सुल्तानपुर निवासी दानिश, राकिब, अरशद और मिट्ठेपुर निवासी नाजिर वहां पहुंचे। उन्होंने गाली-गलौज शुरू कर दी और विरोध करने पर लाठी व फावड़े से हमला कर दिया। इस मारपीट में शमसुद्दीन के सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आई हैं। शमसुद्दीन ने थाने पहुंचकर आरो.पियों के खिलाफ तहरीर दी और कानूनी कार्रवाई की मांग की। पीड़ित का यह भी आरोप है कि आरोपियों ने उसे जान से मारने की धमकी दी और मौके से फरार हो गए। सीओ अवधभान सिंह भदौरिया ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर मामले की जांच शुरू करने की बात कही।

मारपीट में चार ग्रामीण घायल

गजरौला। थाना क्षेत्र के एक गांव में झगड़े की घटना में चार लोग घायल हो गए। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के गांव कटाई में मदर खां पुत्र इकबाल खां का परिवार रहता है। आरो.प है कि एहराज उर्फ अच्छे खां द्वारा मदर खां के खेत से जबरदस्ती रास्ता लेने के प्रयास किये जा रहे हैं। मदर खां ने विरोध किया तो एहराज उर्फ अच्छे खां ने फैयाज, शानू आदि के साथ मिलकर मदर खां, गजाना खां, तारिक एवं भूरे खां को लाठी डंडों से पीटकर घायल कर दिया। मारपीट के कारण शोर शराबे की स्थिति बन गई। शोर सुनकर आसपास के लोग बीच बचाव के लिए आए तो आरोपी जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित पक्ष ने पुलिस को तहरीर देकर आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करने की मांग की है।

हाईटेंशन लाइन करंट से लाइनमैन की मौत

शाह टाइम्स ब्यूरो

अमरोहा। अमरोहा के रजबपुर थाना क्षेत्र में 11 हजार वोल्ट की लाइन ठीक करते समय एक 28 वर्षीय लाइनमैन की करंट लगने से मौत हो गई। इस घटना के बाद परिजनों ने शव को बिजलीघर में रखकर प्रदर्शन किया। मृतक की पहचान जलालपुर कलां निवासी नितिन सैनी (28) पुत्र रामपाल के रूप में हुई है। नितिन अपने पीछे पत्नी और छह माह की बेटी प्रियांशी को छोड़ गए हैं। परिवार में मातम पसरा हुआ है।

जानकारी के अनुसार, बुधवार सुबह करीब 10 बजे गांव जलालपुर में बीती रात आई तेज आंधी और बारिश से पेड़ गिरने के कारण बिजली की लाइन प्रभावित हुई थी। नितिन सैनी लाइन ठीक करने के लिए खंभे पर चढ़े थे। बताया जा रहा है कि लाइन ठीक करने के लिए शटडाउन लिया गया था, लेकिन अचानक विद्युत प्रवाहित होने से वह झुलस गए। लाइनमैन की मौत की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। परिजनों ने गांव स्थित बिजलीघर में शव रखकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। देखते ही देखते सैकड़ों लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए स्थानीय पुलिस बल मौके पर पहुंचा और भीड़ को नियंत्रित किया। थाना प्रभारी रजबपुर संजय कुमार सिंह ने बताया कि मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। उन्होंने कहा कि मामले में तहरीर प्राप्त होने के बाद आगे की वैधानिक कार्रवाई की जाएगी। हादसे के कारणों की पुष्टि अभी नहीं हो सकी है और पुलिस जांच में जुटी है।

बिजलीघर पर शव रखकर परिजनों ने किया हंगामा

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जीवनरेखा साबित होगा एक्सप्रेस-वे

गंगा एक्सप्रेस वे से खुलेंगे विकास के द्वारः मलिक

शाह टाइम्स संवाददाता

हसनपुर। गंगा एक्सप्रेसवे का डिजिटल आगाज करते हुए उसको जनता के लिए समर्पित कर दिया गया। उत्तर प्रदेश के विकास को नई गति देने वाले गंगा एक्सप्रेसवे के उद्घाटन समारोह का जनपद के गांव मंगरोला में भव्य आयोजन किया गया।

■ गांव मंगरौला में हुआ भव्य कार्यक्रम, एलईडी स्क्रीन पर देखा प्रधानमंत्री मोदी का लाइव प्रसारण

बुधवार को गणेश वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्री गणेश की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर गंगा एक्सप्रेसवे का लोकार्पण कर दिया। जैसे ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुख्यमंत्री की उपस्थिति में जनपद हरदोई में गंगा एक्सप्रेसवे का उद्घाटन किया वैसे ही जनता के लिए जो बड़ी एलईडी स्क्रीन लगाई गई थी। जिस पर उद्घाटन समारोह का सीधा प्रसारण अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ

बैठकर हजारों लोगों ने देखा। जनपद के प्रभारी मंत्री केपी मलिक ने गंगा एक्सप्रेसवे को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लिए जीवनरेखा बताया। उन्होंने कहा कि यह एक्सप्रेसवे केवल सड़क नहीं, बल्कि आर्थिक प्रगति का मार्ग है। जिससे रोजगार और व्यापार के नये अवसर पैदा होंगे। सांसद चौधरी कंवर सिंह तंवर ने केंद्र और प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के शासन में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक लाभ पहुँच रहा है और एक्सप्रेसवे का जाल इसका जीवंत प्रमाण है। विधायक महेंद्र सिंह खड़गवंशी ने स्थानीय विकास कार्यों का ब्योरा दिया। उन्होंने बताया कि योगी सरकार के नेतृत्व में हसनपुर विधानसभा में सड़कों बिजली और शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सुधार हुए हैं। विधायक राजीव तरारा ने कानून व्यवस्था पर जोर देते हुए कहा कि योगी सरकार ने प्रदेश से माफियाराज का अंत कर दिया है। उन्होंने कहा कि आज बेटियाँ सुरक्षित हैं। विधान परिषद के सदस्य डा. हरि सिंह ढिल्लों एवं सतपाल सिंह सैनी ने भी सरकार की उपलब्धियां का बखान किया। इस अवसर पर कमिश्नर, जिला अध्यक्ष उदयगिरि गोस्वामी, जिलाधिकारी नितिन गौड, पुलिस अधीक्षक लखन सिंह यादव, पालिकाध्यक्ष राजपाल सैनी, ब्लॉक प्रमुख ममता गुर्जर, चंद्रपाल सिंह खड़गवंशी, पूर्व विधायक हरपाल सिंह, मुदित गुर्जर, सुरेंद्र सिंह लोहिया, अभिनव कौशिक, पूर्व विधायक तोताराम, मयंक अग्रवाल आदि मौजूद थे।

जमीन देने वाले किसानों को नही मिली मंच पर जगह

शाह टाइम्स संवाददाता हसनपुर। भारतीय किसान यूनियन अम्बावत के जिला अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार लोहिया ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि गंगा एक्सप्रेसवे के उद्घाटन समारोह में उनके गांव के किसी भी व्यक्ति को मंच पर नहीं बैठाया गया है। उन्होंने कहा कि गांव मंगरोला के किसानों ने गंगा एक्सप्रेसवे को अपनी जमीन दी है। लेकिन उसके बाद भी किसी को मंच पर नहीं बुलाया गया। यह बड़े ही अपमानजनक बात है।

दिग्विजय भाटी को किया नजरबंद

शाह टाइम्स संवाददाता

हसनपुर। गंगा एक्सप्रेसवे के पास स्थित लिंक रोड की खस्ताहाल स्थिति को लेकर किसानों का आक्रोश सातवें आसमान पर है। बुधवार को पुलिस प्रशासन ने भारतीय किसान यूनियन बीआर अंबेडकर के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ दिग्विजय सिंह भाटी को उनके घर में नजर बंद कर दिया। दिग्विजय भाटी ने बताया गांव मंगरोला में एक्सप्रेसवे उतार से गांवों को जोड़ने वाले मुख्य संपर्क मार्ग की स्थिति इतनी जर्जर हो चुकी है कि किसान अपनी उपज मंडियों तक नहीं ले जा पा रहे हैं। डॉ दिग्विजय भाटी के साथ सोनू गुर्जर, देवेंद्र यादव, रामपाल यादव, अमरजीत गुर्जर, रूम सिंह खड़गवंशी, नदीम चौधरी, नन्हे यादव आदि मौजूद थे। वही भारतीय किसान यूनियन (इंडिया) के पदाधिकारी प्रभारी मंत्री को ज्ञापन देने निकले, तो उन्हें उनके घरों में नजर बंद कर दिया गया।किसान संगठनों ने साफ कहा है कि यदि जल्द ही सड़कों की मरम्मत नहीं हुई, तो वे चुप नहीं बैठेंगे और आंदोलन को और उग्र किया जायेगा। प्रशासन की इस कार्रवाई से किसानों में भारी रोष है। इस दौरान लोकेश बिधूड़ी, जितेंद्र, हितेश भाटी, धर्मेंद्र, धर्मवीर सहित अन्य पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

मेरठ से प्रयागराज तक लगेगा 1500 का टोल

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। गंगा एक्सप्रेसवे के शुरू होने के साथ जहां सफर तेज और आसान होगा, वहीं मेरठ से प्रयागराज तक यात्रा करने वालों को करीब 1500 रुपये टोल भी चुकाना पड़ सकता है। यह टोल दर लंबी दूरी तय करने वाले यात्रियों और ट्रांसपोर्ट कारोबारियों के लिए अहम साबित होगी। एक्सप्रेसवे पर सफर से समय और ईंधन की बचत तो होगी, लेकिन टोल की लागत यात्रियों के बजट को प्रभावित कर सकती है। खासकर नियमित यात्रा करने वाले लोगों और माल ढुलाई से जुड़े व्यापारियों को इस खर्च को ध्यान में रखना होगा। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि बेहतर सड़क, कम समय और सुरक्षित यात्रा के चलते यह टोल उचित माना जा सकता है। अब देखने वाली बात होगी कि लोग सुविधा और खर्च के बीच कैसे संतुलन बनाते हैं।

अब सात घंटे में पहुंचेंगे मेरठ से प्रयागराज

शाह टाइम्स ब्यूरो अमरोहा। मेरठ से प्रयागराज तक बनाया गया गंगा एक्सप्रेसवे जनता का समय बचाने का काम करेगा। बुधवार को हरदोई में गंगा एक्सप्रेसवे का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकार्पण कर जनता को समर्पित कर दिया। करीब 5 साल में 36230 करोड़ की लागत से मेरठ से प्रयागराज तक बनाये गये गंगा एक्सप्रेसवे की दूरी 594 किलोमीटर है। गंगा एक्सप्रेसवे 518 गांव व 12 जनपदों से होकर गुजर रहा है। गंगा एक्सप्रेसवे पर 14 बड़े पुल और 165 के करीब छोटे पुल बनाये गये हैं। इसके अलावा इस पर 32 फ्लाई ओवर 7 रेलवे ओवरब्रिज 453 व्हीकल अंडरपास और 795 पुलिया का निर्माण किया गया है। बताया यह भी जा रहा है कि इस एक्सप्रेसवे पर शाहजहांपुर में 3.5 किलोमीटर लंबी हवाई पट्टी भी है। इस पर 17 से 21 इंटरचेंज एंट्री एग्जिट प्वाइंट बनाये गये हैं। यह एक्सप्रेसवें 12 जिलों से होकर गुजरता है। और इसमें 120 मीटर की राइट ऑफ वें चौड़ाई है। 12 जनपदों में 21 स्थानो पर लोगों के गंगा एक्सप्रेसवे पर चढ़ने उतरने की सुविधा दी गई है।

झोलाछाप के इलाज से नवजात की मौत

परिजनों ने मचा कोहराम

शाह टाइम्स ब्यूरो

रहरा। रहरा क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित अस्पतालों और झोलाछाप चिकित्सकों का नेटवर्क एक बार फिर सवालों के घेरे में आ गया है। ताजा मामला रहरा थाना क्षेत्र के कस्बा रहरा के एक निजी अस्पताल का है, जहां प्रसव के बाद नवजात बच्ची की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटना के बाद परिजनों में भारी आक्रोश है और उन्होंने अस्पताल स्टाफ पर गंभीर लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

जानकारी के अनुसार, रहरा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी एक गर्भवती महिला को सोमवार को प्रसव पीड़ा होने पर परिजन रहरा के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराए थे। अस्पताल में महिला का इलाज शुरू हुआ और देर रात उसने एक बच्ची को जन्म दिया। शुरुआत में सब कुछ सामान्य बताया गया, लेकिन कुछ ही देर बाद नवजात की तबीयत बिगड़ने लगी। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल में न तो पर्याप्त संसाधन थे और न ही विशेषज्ञ डॉक्टर मौजूद थे। जब बच्ची की हालत गंभीर हुई तो अस्पताल स्टाफ ने सही समय पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया। परिजन बार-बार नवजात की स्थिति के बारे में पूछते रहे, लेकिन उन्हें टालमटोल जवाब दिया गया। मंगलवार सुबह बच्ची ने दम तोड़ दिया।क्षेत्र में झोलाछाप डॉक्टरों का बोलबाला है, जो बिना मानक सुविधाओं के अस्पताल चला रहे हैं और लोगों की जान से खिलवाड़ कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि समय रहते उचित इलाज मिलता, तो बच्ची की जान बच सकती थी। स्थानीय लोगों का कहना है कि रहरा क्षेत्र में झोलाछापों का बढ़ता आतंक अब आम लोगों के लिए खतरा बनता जा रहा है। बावजूद इसके, स्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई न के बराबर है। इस घटना ने एक बार फिर प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। परिजनों ने बिना कानूनी कार्रवाई के नवजात बच्चे का अंतिम संस्कार कर दिया

पालिका बोर्ड की बैठक 4 मई को होगी

शाह टाइम्स संवाददाता गजरौला। नगर पालिका परिषद गजरौला की बोर्ड बैठक आगामी 04 मई को पालिका सभागार में पूर्वान्ह 12 बजे से होगी। बैठक में नगर के विकास से जुड़े प्रस्तावों पर चर्चा की जाएगी। यह जानकारी चेयरमैन श्रीमति राजेन्द्र उर्फ उमा देवी ने दी।

कार की टक्कर से घायल ग्रामीण की मौत

22 अप्रैल को धनौरा रोड पर हुआ था हादसा

शाह टाइम्स संवाददाता

गजरौला। तेज रफ्तार कार की टक्कर से घायल बाइक सवार ग्रामीण की उपचार के दौरान मौत हो गयी जबकि उसके साथ बाइक पर सवार अन्य दो युवकों का उपचार निजी हॉस्पिटल में चल रहा है। मृतक के पुत्र की तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपित कार चालक के विरूद्ध रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

जानकारी के अनुसार 22 अप्रैल को असलम अली, वसीम अहमद व युसूफ तीनों एक साथ बाइक पर सवार होकर गजरौला से बछरायूं थाना क्षेत्र स्थित अपने गांव रहमापुर माफी जा रहे थे। कुमराला चौकी के पास स्थित पेट्रोल पम्प के पास पीछे से आ रही तेज रफ्तार कार ने बाइक को टक्कर मार दी थी। हादसे में तीनों घायल हो गए थे। घायलों को आसपास के लोगों की मदद से कुमराला चौकी के पास स्थित निजी अस्पताल में ही भर्ती कराया गया था। यहाँ से असलम अली की हालत गंभीर देखते हुए हायर सेंटर रेफर किया था, रास्ते में ही असलम अली की मौत हो गयी थी। इस मामले में पुलिस ने मृतक असलम अली के पुत्र सैफ अली की तहरीर के आधार पर कार चालक के विरूद्ध रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

बारिश से मौसम हुआ सुहावना

झुलसाने वाली गर्मी से मिली राहत

शाह टाइम्स संवाददाता

गजरौला। पिछले कुछ दिनों से भीषण गर्मी और लू की मार झेल रहे क्षेत्रवासियों को रात और सुबह के समय हुई बारिश और तेज ठंडी हवाओं से राहत मिली। इतना ही नहीं और दिनों की अपेक्षा तापमान भी कम रहा।

यूं तो मौसम विभाग ने ही बारिश का पूर्वानुमान जताया था। मंगलवार की रात से ही तेज हवाएं चलने लगीं थीं और रात में रूक रूककर कई बार बारिश भी हुई। दिन में भी एक दो बार बारिश हुई। बारिश और तेज ठंडी हवाओं ने कई दिन से पड़ृ रही झुलसाने वाली गर्मी से निजात दिलाई। बारिश व तेज ठंडी हवाओं से और तापमान में भी दिनों की अपेक्षा दस डिग्री की गिरावट दर्ज की। बुधवार को तापमान 33-34 डिग्री सेल्सियस रहा। मौसम सुहावना होने के कारण बाजारों में भी खरीददारों की भीड़ देखने को मिली। तेज धूप से झुलस रहे पेड़ पौधों को भी पानी मिल जाने से उनकी तरोताजगी भी बढ़ गई। मौसम विभाग का अनुमान है कि आगामी दिनों में भी बारिश की संभावना बनी रहेगी।

MI ने SRH को 244 रन का टारगेट दिया

रायन रिकेल्टन ने नाबाद 123 रन बनाए, प्रफुल्ल हिंगे को 2 विकेटदिल्ल

मुंबई, वार्ता। मुंबई इंडियंस ने आईपीएल में बुधवार को हैदराबाद को जीत के लिए 244 रन का टारगेट दिया। वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई ने टॉस जीतकर बैटिंग करते हुए 20 ओवर में 5 विकेट पर 243 रन बनाए।

ओपनर रायन रिकेल्टन ने 55 गेंद पर नाबाद 123 रन की शतकीय पारी खेली। इस पारी में 10 चौके और 8 छक्के शामिल रहे। रिकेल्टन के अलावा, विल जैक्स ने 46 और कप्तान हार्दिक पंड्या ने 31 रन बनाए। सनराइजर्स की ओर से प्रफुल्ल हिंगे ने 2 विकेट झटके। ईशान मलिंगा, साकिब हुसैन और नीतीश कुमार रेड्डी को एक-एक विकेट मिला। कप्तान पैट कमिंस को कोई विकेट नहीं मिला। हैदराबाद ने अनिकेत वर्मा को इम्पैक्ट प्लेयर बनाया है। वे साकिब हुसैन की जगह मैदान पर आए। आखिरी ओवर में तिलक वर्मा 7 रन बनाकर आउट हुए। प्रप्रफुल्ल हिंगे के इस ओवर में 14 रन आए। इन रनों के सहारे मुंबई ने 20 ओवर में 243 रन बनाए और हैदराबाद को 244 रन का टारगेट दिया। 19वें ओवर की पहली बाल पर कप्तान हार्दिक पंड्या 31 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें साकिब हुसैन ने हेनरिक क्लासन के हाथों कैच कराया। पैट कमिंस ने अपने कोटे के आखिरी ओवर में महज 6 रन दिए। 17वें ओवर में उनकी बाल पर कोई बाउंड्री नहीं आई। सभी रन सिंगल के जरिए आए। 16वें ओवर में मुंबई ने 200 रन का आंकड़ा पार कर लिया। हार्दिक पंडडा ने प्रप्रफुल्ल हिंगे की 5वीं बाल पर चौका लगाकर टीम को 200 पार पहुंचाया। उन्होंने हिंगे के इस ओवर में 3 चौके और एक छक्के के सहारे 21 रन बनाए। रायन रिकेल्टन ने 15वें ओवर की आखिरी बाल पर सिंगल लेकर शतक पूरा किया। 14वें ओवर की चौथी बाल पर मुंबई ने चौथा विकेट गंवाया। यहां पर नमन धीर को प्रफुल्ल हिंगे ने हर्ष दुबे के हाथों कैच कराया। इसी के साथ फिफ्टी पार्टनरशिप ब्रेक हुई। हिंगे ने इस ओवर में महज 4 रन दिए। 13वें ओवर में ईशान मलिंगा ने महज 7 रन खर्च किए। उनके इस ओवर में कोई बाउंड्री नहीं आई है। सभी रन सिंगल के जरिए बने। एक रन वाइड से आया। 12वें ओवर में मुंबई ने 150 रन का आंकड़ा पार कर लिया है। हर्ष दुबे के इस ओवर की शुरुआती दो बाल पर रायन रिकेल्टन ने लगातार दो छक्के लगाए। फिर आखिरी बाल पर नमन धीर ने चौका लगाया। ईशान मलिंगा ने 9वें ओवर में सूर्यकुमार यादव को कैच आउट कराया। 11वें ओवर में साकिब हुसैन ने 13 रन खर्च कर दिए। उनकी बाल पर रायन रिकेल्टन और नमन धीर ने एक-एक चौके लगाए। 9वें ओवर की तीसरी बाल पर मुंबई ने दूसरा विकेट गंवाया। यहां पर सूर्यकुमार यादव 5 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें ईशान मलिंगा ने अभिषेक शर्मा के हाथों कैच कराया। पिछले ओवर में विल जैक्स पवेलियन लौटे थे।

वैभव को बैटिंग करते देखना विशुद्ध सिनेमा जैसा है: चेतेश्वर

मुल्लांपुर, वार्ता। राजस्थान रॉयल्स ने मुल्लांपुर में टाटा आईपीएल 2026 में पंजाब किंग्स की जीत का सिलसिला तोड़ते हुए छह विकेट से जीत दर्ज की। 'जियो स्टार' के एक्सपर्ट चेतेश्वर पुजारा और मिशेल मैकक्लेनेघन ने 'निडर युवा खिलाड़ी' वैभव सूर्यवंशी और यशस्वी जायसवाल के खेलने के तरीके के असर का विश्लेाण किया।

पुजारा ने वैभव सूर्यवंशी के निडर अंदाज की जमकर तारीफ करते हुए कहा, वैभव सूर्यवंशी को बैटिंग करते देखना बिल्कुल सिनेमा जैसा है। जिस तरह वह हर गेंदबाज का सामना निडर होकर करते हैं, वह कमाल का है। वह बस गेंद को देखते हैं और उसे हिट करने के लिए खुद पर भरोसा रखते हैं। सबसे खास बात यह है कि जब विरोधी टीम को पता होता है कि वह हमला करने वाले हैं, तब भी उन्हें रोकना मुश्किल होता है। उनकी यह निरंतरता, और पावरप्ले में उनका निडर इरादा ही उनकी टीम को निर्णायक बढ़त दिलाता है और ऐसे मैचों का नतीजा तय करता है। मिशेल मैकक्लेनेघन ने रन चेज के दौरान यशस्वी जायसवाल की भूमिका पर रोशनी डाली और कहा, यशस्वी अपनी कम उम्र के हिसाब से बहुत ज्यादा समझदारी दिखा रहे हैं।

वह उस पार्टनरशिप में एक अनुभवी बल्लेबाज की तरह खेल रहे हैं, यह समझते हुए कि कब पीछे हटना है और वैभव सूर्यवंशी को अपना स्वाभाविक आक्रामक खेल खेलने देना है। जो बात सबसे ज्यादा उभरकर सामने आती है, वह है उनका परिस्थितियों के हिसाब से ढलना।

खेल विशेष

न्यूजीलैंड ने टी-20 महिला विश्व कप के लिए टीम की घोषणा की

वेलिंगटन, वार्ता। न्यूजीलैंड ने पिछले आईसीसी महिला टी-20 विश्व कप में खिताबी जीत वाली टीम में शामिल कुल 10 खिलाड़ियों को इंग्लैंड और वेल्स में होने वाले आगामी टूर्नामेंट के लिए 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया है। न्यूजीलैंड ने बुधवार को स्टार ऑलराउंडर मेली केर को टीम का कप्तान बनाया। इसी के साथ मैजूदा चैंपियन न्यूजीलैंड टी-20 विश्व कप के लिए अपनी टीम का घोषणा करने वाली दूसरी टीम बन गई। कीवी टीम में अनुभव और युवाओं का अच्छा मेल है, जिसमें अनुभवी सूजी बेट्स और डिवाइन अपने 10वें टी-20 विश्व कप में खेलेंगी, जबकि नई खिलाड़ी नेन्सी पटेल और बल्लेबाज इजी शार्प का आईसीसी टूर्नामेंट में अपने पहले अनुभव के लिए टीम में स्वागत किया गया है।

भारतीय भारोत्तोलकों ने एक स्वर्ण व तीन रजत जीते

नई दिल्ली। भारतीय भारोत्तोलकों ने अपिया, समोआ में चल रही 2026 कॉमनवेल्थ यूथ और जूनियर वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप के साथ-साथ यूनिवर्सल कप में भी अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा, और प्रतियोगिता के तीसरे दिन एक स्वर्ण और तीन रजत पदक जीतकर अपने पदकों की संख्या में और इजाफा किया। कॉमनवेल्थ यूथ और जूनियर चैंपियनशिप में बेलाना हरिका ने 69 किंग्रा वर्ग में कुल 197 किंग्रा (स्नैच में 86 और क्लीन एंड जर्क में 111 किंग्रा) वजन उठाकर स्वर्ण जीता जबकि करांगी तरंगि. नि ने 63 किंग्रा में कुल 179 किंग्रा (स्नैच में 79 और क्लीन एंड जर्क में 100 किंग्रा) वजन उठाकर रजत और भूमिका मोहिते ने 63 किंग्रा में कुल 195 किंग्रा (स्नैच में 86 और क्लीन एंड जर्क में 109 किंग्रा) वजन उठाकर रजत जीता। यूनिवर्सल कप में अभोक निपाने ने 88 किंग्रा वर्ग में कुल 324 किंग्रा (स्नैच में 140 और क्लीन एंड जर्क में 184 किंग्रा) वजन उठाकर रजत जीता।

जोडार ने सिनर के साथ मैड्रिड का ब्लॉकबस्टर मुकाबला तय किया

मैड्रिड, वार्ता। राफेल जोडार मंगलवार को मैड्रिड ओपन में पहली बार एटीपी मास्टर्स 1000 इवेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे। अपने घरेलू मैदान पर उन्होंने विट कोप्रिवा को 7-5, 6-0 से हराकर दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी जानिक सिनर के साथ क्वार्टरफाइनल में अपनी पहली भिड़ंत तय की। 19 साल के यह स्पेनिश खिलाड़ी इस दशक में मास्टर्स 1000 इवेंट के अंतिम आठ में पहुंचने वाले सिर्फ छठे टीनेजर हैं, जबकि मैड्रिड टूर्नामेंट के इतिहास में इस चरण तक पहुं. चने वाले वह सिर्फ चौथे वाइल्ड कार्ड खिलाड़ी हैं। जोडार ने कहा, मैं आज अपने खेल के स्तर और इस टूर्नामेंट में अपने प्रदर्शन से बहुत खुश हूं। घर पर खेलना, और उन बहुत से लोगों के सामने खेलना जिन्हें मैं जानता हूं और जो मेरा समर्थन करने आए हैं, यह बहुत खास है।

सबालेंका को हरा हैली ने किया मैड्रिड ओपन में यादगार उलटफेर

मैड्रिड, वार्ता। दुनिया की नंबर 30 टेनिस खिलाड़ी आर्यना सबालेंका को हरा हैली बैटिस्ट ने किया मैड्रिड ओपन मेने महिला एकल टेनिस क्वार्टर-फाइनल मुकाबले में टॉप सीड आर्यना सबालेंका को हराकर मैड्रिड ओपन 2026 का बड़ा उलटफेर किया।

मंगलवार को अमेरिका की उभरती हुई स्टार हैली बैटिस्ट ने दो घंटे 30 मिनट तक चले मुकाबले में शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए बेलारुस की आर्यना सबालेंका को तीन सेट, 2-6, 6-2, 7-6 (6) में हराकर अपने करियर की यागदार जीत दर्ज करते हुए मैड्रिड ओपन के सेमीफाइनल में पहली बार जगह बना ली। सबालेंका से पहला सेट बिना ज्यादा मुकाबले के हारने के बाद - इस दौरान दो ब्रेक पॉइंट गंवाने के बाद - मैच चार बार की ग्रैंड स्लैम एकल चैंपियन के पक्ष में सीधे नतीजे के लिए तैयार लग रहा था। लेकिन बैप्टिस्ट अभी इस गोलियाथ के सामने हारने के लिए तैयार नहीं थीं। उन्होंने जबरदस्त वापसी की, वर्ल्ड नंबर 1 से तीन ब्रेक पॉइंट लेकर दूसरे सेट में भी उतना ही दबदबा बनाया और मैच को बराबर कर दिया, जिससे तीसरे और निर्णायक सेट में मैच बराबर हो गया।

प्लेऑफ में जगह पक्की करने पर होगी आरसीबी की नजर

अहमदाबाद, वार्ता। मौजूदा चैंपियन रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु आईपीएल 2026 प्लेऑफ की दौड़ में अपनी पकड़ और मजबूत करने की कोशिश करेगी, जब गुरुवार को यहां नरेंद्र मोदी स्टेडियम में सीजन के 42वें मैच में उसका सामना गुजरात टाइटन्स से होगा। आरसीबी इस मुकाबले में जबरदस्त फॉर्म में उतर रही है,

उसने अपने आठ में से छह मैच जीते हैं और 1-919 के शानदार नेट रन रेट के साथ पॉइंट्स टेबल पर दूसरे स्थान पर है। वहीं, गुजरात टाइटन्स का प्रदर्शन इस सीजन में उतार-चढ़ाव भरा रहा है, जिसमें उसे चार जीत और चार हार मिली हैं, जिससे वह पॉइंट्स टेबल में बीच में फंसी हुई है और उसका नेट रन रेट भी नेगेटिव है।

बेंगलुरु की टीम ने इसी सीजन में पहले गुजरात टाइटन्स को पांच विकेट से हराया था और इस बार भी वह अपनी बल्लेबाजी की ताकत और अनुशासित गेंदबा. जी के संतुलित तालमेल पर ही भरोसा करेगी। विराट कोहली 58-50 की औसत से 351 रन बनाकर आरसीबी की बल्लेबाजी की रीढ़ बने हुए हैं, जबकि देवदत्त पडिक्कल और रजत पाटीदार ने मध्यक्रम में आक्रामक अंदाज में उनका साथ दिया है। उनकी गें. दबाजी भी इस टूर्नामेंट में सबसे असरदार रही है, भुवनेश्वर कुमार अब तक 14 विकेट ले चुके हैं और जोश हेजलवुड लगातार मैच जिताने वाली गेंदबाजी कर रहे हैं। आरसीबी दिल्ली कैपिटल्स पर एकतरफा जीत हासिल करके इस मैच में उतर रही है, जिसमें उसने अपने विरोधी को सिर्फ 75 रन पर ऑल आउट कर दिया था और फिर 6-3 ओवर में ही लक्ष्य हासिल कर लिया था।

सूर्यवंशी ने फिर किया ऑरेंज कैप पर कब्जा

नई दिल्ली, वार्ता। जब भी पंजाब किंग्स या राजस्थान रॉयल्स का मैच प्च्स 2026 में होता है, ऑरेंज कैप तालिका में बड़े बदलाव देखने को मिलते हैं। मंगलवार रात न्यू चंडीगढ़ में जब दोनों टीमें आमने-सामने हुईं, तब भी यही देखने को मिला। ऑरेंज कैप वैभव सूर्यवंशी इस सीजन सबसे ज्यादा रन बनाने वालों की सूची में फिर से शीर्ष पर पहुंच गए हैं। उन्होंने सिर्फ 16 गेंदों में 43 रन बनाए, जिसमें पांच छक्के शामिल थे। इसके साथ ही वह इस सीजन 400 रन के आंकड़े तक पहुंचने वाले पहले बल्लेबाज बन गए। सीजन की शुरुआत 52, 31, 39 और 78 जैसी पारियों से करने के बाद सूर्यवंशी का प्रदर्शन थोड़ा धीमा पड़ा था,

लेकिन उन्होंने शानदार वापसी करते हुए पिछली तीन पारियों में से दो में 46 और 103 का स्कोर बनाया है और अब ताजा पारी के बाद वह फिर से ऑरेंज कैप सूची में नंबर 1 पर हैं। उनके पीछे शीर्ष पांच में अभिोक शर्मा (380 रन), केएल राहुल (358), विराट कोहली (351) और हेनरिक क्लासेन (349 रन) मौजूद हैं। वहीं मंगलवार को 44 गेंदों में 59 रन की पारी खेलने वाले पंजाब के प्रभसिमरन सिह 346 रन के साथ छठे स्थान पर हैं। प्रभसिमरन के कप्तान श्रेयस अय्यर 27 गेंदों में 30 रन बनाकर सीजन में कुल 309 रन तक पहुंच गए हैं और अब दसवें स्थान पर हैं। पर्पल कैप जोफ्रा आर्चर ने न्यू चंडीगढ़ में प्रियांश आर्य का विकेट लेकर अपनी कुल विकेटों की संख्या 14 तक पहुंचा दी है, जिससे वह अब आरसीबी के भुवनेश्वर कुमार, चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के अंशुल कंबोज और एसआरएच के इशान मलिगा के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर पहुंच गए हैं। आर्चर की इकॉनमी रेट 8-27 है, जबकि भुवनेश्वर की 7-61, कंबोज की 8-56 और मलिगा की 9-44 है। इनके पीछे 13 विकेट के साथ लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के प्रिस यादव और गुजरात टाइटंस (जीटी) के कगिसो रबाडा मौजूद हैं।

भारतीय पहलवानों ने एशियन बीच गेम्स में जीते चार पदक

सान्या (चीन), वार्ता। भारतीय पहलवानों ने बुधवार को शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियन बीच गेम्स 2026 में बीच रेसलिग में दो स्वर्ण सहित चार पदक जीते। इसी के साथ भारत के पदकों की संख्या छह हो गई।

आज हुए मुकाबलों में प्रिया मलिक (महिलाओं की 70 किंग्रा) और पुपा यादव (महिलाओं की 60किंग्रा) ने स्वर्ण पदक जीता, जबकि सिद्धार्थ (पुरुषों की 70 किंग्रा) और जसप्रीत कौर (महिलाओं की 70 किंग्रा) ने क्रमशः रजत और कांस्य जीते। महिलाओं के 60 किंग्रा फाइनल में, पुपा यादव ने चीन की एशियन चैंपियन जी मेंग्यू को 3-0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। वियतनाम की थी माई हान गुयेन ने पोडियम पूरा किया। एशियन पदक विजेता प्रिया मलिक ने महिलाओं के 70 किंग्रा फाइनल में मंगोलिया की बोलोरटुंगलाग जोरिग्ट को 3-2 से हराकर रेसलिग में भारत के लिए दूसरा गोल्ड मेडल जीता। चीन की ली वेनजी ने कांस्य पदक जीता। जसप्रीत कौर पोडियम पर पहुंचने वाली दूसरी भारतीय महिला पहलवान थीं। 70 किंग्रा के सेमीफाइनल में वियतनाम की थी लिन्ह डांग से हारने के बाद, जसप्रीत कौर ने कजाकिस्तान की बेइबिट सेदुअली के खिलाफ कांस्य का मुकाबला 2-0 से जीता। चीन की जिया लॉन्ग और थी लिन्ह डांग ने महिलाओं की 70 किंग्रा में एक के बाद एक स्वर्ण और रजत पदक जीते। भारत के पुरुष पहलवानों में, सिद्धार्थ अकेले ऐसे थे।

भारतीय गोल्फ के दिग्गज विजय कुमार का निधन

लखनऊ, वार्ता। भारतीय पेशेवर गोल्फ के दिग्गज खिलाड़ी और पूर्व इंडियन ओपन चैंपियन विजय कुमार का मंगलवार को उनके गृह नगर लखनऊ में 57 वा की आयु में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

2002 के इंडियन ओपन के विजेता और चार बार के 'ऑर्डर ऑफ मेरिट' चैंपियन, विजय कुमार भारतीय पेशेवर गोल्फ के सबसे सफल और सम्मानित नामों में से एक थे। 29 सितम्बर, 1968 को लखनऊ में जन्मे विजय ने 1988 में पेशेवर गोल्फर के तौर पर अपना करियर शुरू किया। उन्होंने 1990 के दशक के मध्य से लेकर अगले दशक की शुरुआत तक भारतीय घरेलू गोल्फ पर अपना दबदबा बनाए रखा, उनका शानदार करियर कई खिताबों से भरा रहा। 2002 के इंडियन ओपन में विजय की ऐतिहासिक जीत भारतीय गोल्फ के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जाती है। वह उन चुनिदा नौ भारतीय गोल्फरों में से एक हैं जिन्होंने इंडियन ओपन का खिताब जीता है। विजय ने स्कॉटलैंड के सेंट एंड्रयूज में आयोजित 1999 के अल्फ्रेड डनहिल कप में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया था। अपनी बेहतरीन खेल-कौशल, निरंतरता, प्रतिस्पर्धी भावना और अनुकरणीय आचरण के लिए व्यापक रूप से सराहे जाने वाले विजय ने गोल्फरों की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया और देश में इस खेल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अपनी उपलब्धियों से परे, हमेशा मुस्कुराते रहने वाले विजय को उनके सकारात्मक दृटिकोण, हंसमुख स्वभाव, बेहतरीन हास्य-बोध और खेल भावना के लिए हमेशा याद किया जाएगा। डीपी वर्ल्ड प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया के अध्यक्ष कपिल देव ने विजय कुमार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा, विजय कुमार जी भारतीय गोल्फ के सच्चे दिग्गजों में से एक थे। उनकी उपलब्धियों, विनम्रता और खेल के प्रति समर्पण ने उन्हें गोल्फरों की कई पीढ़ियों के लिए एक आदर्श (रोल मॉडल) बना दिया। उनका निधन भारतीय गोल्फ के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है, और हम उनके परिवार तथा प्रियजनों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। डीपी वर्ल्ड प्रोफेशनल गोल्फ टूर ऑफ इंडिया के सीईओ अमनदीप जोहल ने कहा कि विजय कुमार उन बेहतरीन पेशेवरों में से एक थे जिन्हें भारतीय गोल्फ ने देखा है।

बिश्नोई को ड्रॉप करने से उनका आत्मविश्वास गिरेगा: अभिनव

नई दिल्ली, वार्ता। पूर्व क्रिकेटर अभिनव मुकुंद का मानना है कि अच्छी फॉर्म में चल रहे रवि बिश्नोई को ड्राप करने से उनका आत्मविश्वास प्रभावित होगा। एक टाइमआउट शो में अभिनव मुकुंद ने कहा कि मैं यश राज को खिलाने के फैसले से पूरी तरह सहमत नहीं हूं, क्योंकि मेरा मानना है कि आईपीएल में लंबे समय तक सफल रहने वाली टीमों ने अपने गेंदबाजों या भारतीय खिलाड़ियों का एक मजबूत कोर बनाए रखा है।

और खासकर जब रवि बिश्नोई ने अच्छी गेंदबाजी की है। अगर आप उन्हें किसी दूसरे लेग स्पिनर के लिए बाहर करते हैं, तो इससे उनका आत्मविश्वास बुरी तरह प्रभावित होगा। पंजाब किंग्स के खिलाफ पुंजा आरआर के सबसे सफल गेंदबाज रहे और उन्होंने चार विकेटों में से दो विकेट लिए। बिश्नोई इस सीजन आरआर में लखनऊ सुपर जायंट्स के साथ आईपीएल 2025 के खराब दौर के बाद आए थे, जहां उन्होंने 11 पारियों में नौ विकेट लिए थे और उनकी इकॉनमी रेट 10-83 रही थी। हालांकि, इससे पहले आईपीएल में उनके कई शानदार सीजन रहे थे- 2020 में अपने पहले सीजन से लेकर 2024 तक उन्होंने क्रमशः 12, 12, 13, 16 और 10 विकेट लिए थे, जबकि उनकी इकॉनमी रेट 7.37, 6.34, 8.44, 7.74 और 8.77 रही। उनके 44 टी-20 आई मैचों में से 37 मुकाबले 2022 से 2024 के बीच आए हैं। और फिर उनका प्रदर्शन गिर गया। उल्लेखनीय है इस सीजन की शुरुआत में बिश्नोई ने कहा था, पिछला सीजन मुश्किल था। लेकिन मैंने अपनी प्रक्रिया पर टिके रहने की कोशिश की। मेरी एक कमजोरी थी, अगर मेरी लेंथ गलत होती थी तो मुझे चौके-छक्के पड़ते थे। मैं उसी को सुधारने की कोशिश कर रहा था। मैंने पूरा घरेलू सीजन खेला और अपनी लेंथ को बेहतर करने पर काम किया। सही लेंथ पर गेंद डालने से बल्लेबाजों के लिए मुश्किल हुई, आज भी जब मैंने अधिक फुल गेंद डाली तो मार पड़ी। मानसिक, तकनीकी और शारीरिक, मैंने तीनों पहलुओं पर काम किया।

शाह टाइम्स

सम्पादकीय

गुरुवार, 30 अप्रैल 2026

Dainikshahtimes@gmail.com For Articles

अब 4 मई पर नजर

पश्चिम बंगाल में दूसरे चरण का मतदान संपन्न हो गया। बुधवार को 142 सीटों पर मतदान हुआ। छह बजे तक आंकड़ों के अनुसार 91 प्रतिशत से अधिक मतदान हो चुका था और यह उम्मीद जताई जा रही है कि यह और अधिक बढ़ सकता है। पहले चरण का मतदान जो 152 सीटों पर 23 अप्रैल को हुआ था, उसमें भी रिकॉर्ड 93 फीसदी मतदान हुआ था। मत प्रतिशत बढ़ने को लेकर राजनीतिक पंडित भी एक राय नहीं बना पा रहे हैं। कुछ का मानना है कि यह रूझान टीएमसी के पक्ष में जा सकता है, तो ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो कहते हैं कि यह भाजपा के पक्ष में जाएगा। जैसाकि होता है चुनाव संपन्न होने के बाद एग्जिट पोल का दौर शुरू हो जाता है। बताते चलें कि पश्चिम बंगाल सहित पांच राज्यों केरलम, तमिलनाडु, पुड्डुचेरी, असम में चुनाव हुए हैं। लेकिन चर्चाओं में पश्चिम बंगाल का चुनाव ही अधिक रहा है। अगर हम यह कहें कि इसे भाजपा ने अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है तो गलत नहीं होगा। यह प्रतिष्ठा का ही सवाल है कि वहां पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित तमाम कैबिनेट व भाजपा और उसके सहयोगी संगठन आरएसएस ने वहां महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन तमाम लव लश्कर को देखते हुए यह उम्मीद जताई जा रही है कि भाजपा पश्चिम बंगाल जीतने में कोई कसर नहीं छोड़ने जा रही है और भाजपा दावा भी कर रही है कि वह पश्चिम बंगाल में सरकार बनाने जा रही है। छह एग्जिट पोल के नतीजे भी उसकी सोच को सही साबित भी करते हैं। छह में से केवल एक में ही टीएमसी जीतती दिखाई दे रही है। असम में भाजपा सरकार बनाने जा रही है। केरलम में जरूर बाजी कांग्रेस के हाथ जाती दिखाई दे रही हो, तमिलनाडु में पांच में से चार एग्जिट पोल में डीएमके की वापसी होती दिखाई दे रही है। जाहिर है चुनाव के बाद एग्जिट पोल में तमाम तरह की राय जाहिर की जाती है और अनुभव बताता है कि कई बार ये पोल गलत साबित होते रहे हैं। इसलिए असल पता तभी चलेगा जब 4 मई को चुनाव परिणाम सामने आएंगे, लेकिन असल बात इस समय यह है कि दूसरे चरण में जिस तरह का माहौल पश्चिम बंगाल में देखने को मिला, वह हमारे लोकतंत्र के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है। भले ही चुनाव प्रतिशत बढ़ा हो, लेकिन जिस तरह वहां से कई स्थानों पर हिंसा की खबरें आई हैं, जिसमें एक बुजुर्ग तक की जान चली गई है। वह बताता है कि अभी लोगों में इतना धैर्य नहीं आया है कि वह शांतिपूर्वक तरीके से मतदान कर सके और यह तब हुआ जब प. बंगाल में सुरक्षाबलों की अभूतपूर्व उपस्थिति बताई गई है। प. बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि बीएसएफ व सीआरपीएफ जैसे केंद्रीय बलों ने जमकर भय का माहौल बनाया और लोगों को पीटा व गिरफ्तार किया। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि अपने जीवन में उन्होंने ऐसा चुनाव कभी नहीं देखा। एसआईआर को लेकर पहले से ही चुनाव आयोग की निष्पक्षता संदेह के घेरे में रही है।

रोजगार, आस्था व संस्कृति का होगा संरक्षण

देश का सबसे बड़ा 594 किलोमीटर लंबा एक्सप्रेसवे अन्नदाता किसानों की उन्नति, युवाओं के रोजगार, आस्था व संस्कृति के संरक्षण तथा उत्तर प्रदेश की समृद्धि का प्रमुख माध्यम साबित होगा, मेरठ से प्रयागराज तक फैले इस आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर ने 12 जनपदों के एक लाख से अधिक किसानों के योगदान से आकार लिया है, एक्सप्रेसवे के साथ-साथ 27 स्थानों पर इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल क्लस्टर और लॉजिस्टिक हब विकसित किए जा रहे हैं, जो न केवल आवागमन को तेज करेंगे, बल्कि नए निवेश और रोजगार के द्वार भी खोलेंगे, डबल इंजन सरकार की दूरदर्शिता का प्रतीक यह एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश को नई ऊंचाइयों की ओर ले जा रहा है, डबल इंजन सरकार का संकल्प है कि जिस परियोजना का शिलान्यास होगा, उसका उद्घाटन भी सुनिश्चित किया जाएगा। **-योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उप्र**

स्कूल की चौखट पर खड़ा बाजार, भीतर सिमटती शिक्षा

प्रो. आर.के. जैन

निजी विद्यालयों में एनसीईआरटी पुस्तकों के अनुपालन का सवाल अब महज पाठड सामग्री का विवाद नहीं रहा, बल्कि यह देश की शिक्षा व्यवस्था के चरित्र की परीक्षा बन चुका है। जब एक ओर कानून स्पष्ट दिशा देता हो और दूसरी ओर संस्थान स्वार्थवश उससे भटकें, तो यह केवल लापरवाही नहीं, बल्कि नैतिक विचलन का संकेत होता है। अप्रैल 2026 में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा केंद्र, सीबीएसई और सभी राज्यों को जारी नोटिस ने इस विडंबना को उजागर किया है। यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या शिक्षा का अधिकार कानून केवल औपचारिक घोषणा बनकर रह गया है, या उसे लागू करने की प्रतिबद्धता ही क्षीण हो गई है। यह पूरा घटनाक्रम बताता है कि शिक्षा में समानता का मूल सिद्धांत निरंतर दबाव और उपेक्षा के बीच संघर्ष कर रहा है।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 की धारा 29 ने स्पष्ट रूप से यह प्रावधान किया था कि प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8) में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण एनसीईआरटी या संबंधित एससीईआरटी द्वारा किया जाएगा। इसी सोच के तहत एनसीईआरटी और एससीईआरटी को पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के निर्धारण का अधिकार सौंपा गया। इन संस्थाओं द्वारा तैयार पुस्तकें न केवल शैक्षणिक रूप से संतुलित और विश्वसनीय होती हैं, बल्कि आम परिवारों के लिए किफायती भी रहती हैं। इसके विपरीत, निजी प्रकाशकों की महंगी किताबें इस मूल उद्देश्य को कमजोर करती हैं। जब एक ही कक्षा की पुस्तकों पर हजारों रुपये खर्च होने लगें, तो यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या शिक्षा अब अधिकार से ज्यादा एक लाभकारी व्यापार में बदलती जा रही है।

निजी विद्यालयों में महंगी पुस्तकों को अनिवार्य बनाना कोई आकस्मिक भूल नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित आर्थिक तंत्र की ओर संकेत करता है। कई स्थानों पर स्कूल और प्रकाशक मिलकर ऐसा गठजोड़ रचते हैं, जिसमें शिक्षा का उद्देश्य पीछे छूट जाता है और मुनाफा केंद्र में आ जाता है। अभिभावकों को हउच्च गुणवत्ताह और हअधिक उपयोगी सामग्रीह का हवाला देकर इन पुस्तकों को खरीदने के लिए बाध्य किया जाता है, जबकि इन दावों की ठोस पुष्टि प्राय: नहीं होती। इस पूरी प्रक्रिया में अभिभावकों की विवशता का व्यवस्थित दोहन होता है और वे विरोध करने में असहाय महसूस करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति शिक्षा के नैतिक आधार को कमजोर करती है और संस्थागत विश्वसनीयता पर

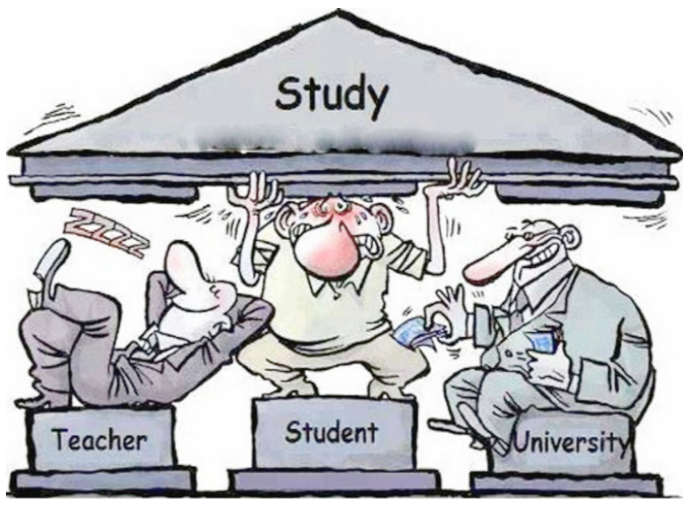

गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े करती है। सबसे चिंताजनक परिणाम एक तेजी से गहराते शिक्षा-विभाजन के रूप में सामने आता है। जहां सरकारी विद्यालयों के बच्चे सस्ती, मानकीकृत और समान पुस्तकों से पढ़ते हैं, वहीं निजी स्कूलों के छात्र महंगी और अलग सामग्री पर निर्भर होते हैं, जिससे उनके ज्ञान का आधार ही भिन्न बन जाता है। यही अंतर आगे चलकर अवसरों की खाई को और चौड़ा कर देता है। मध्यम और निम्न वर्गीय परिवार पहले से ही शिक्षा पर बढ़ते खर्चों का दबाव झेल रहे हैं, ऐसे में किताबों का अतिरिक्त आर्थिक बोझ उनके लिए बेहद असहनीय हो जाता है। यह स्थिति केवल आर्थिक असमानता को नहीं बढ़ाती, बल्कि समाज में गहराते असंतुलन और विभाजन को भी और मजबूत करती है। इस पूरे परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की पहल एक महत्वपूर्ण और समयोचित हस्तक्षेप के रूप में सामने आती है, जिसने शिक्षा के अधिकार को मानवाधिकार के व्यापक दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता को और स्पष्ट किया है। अनावश्यक तथा भारी-भरकम पुस्तकों का बढ़ता बोझ बच्चों के शारीरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जो राष्ट्रीय स्कूल बैग पॉलिसी 2020 की मूल भावना के विपरीत है। यदि राज्य सरकारें और संबंधित संस्थाएं अब भी इस मुद्दे पर उदासीन बनी रहती हैं, तो यह केवल प्रशासनिक अक्षमता नहीं, बल्कि संवैधानिक दायित्वों की स्पष्ट उपेक्षा मानी जाएगी। इसलिए इस विषय को अब सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ठोस और प्रभावी कदम उठाना अनिवार्य हो गया है।

अकादमिक स्वायत्तता का तर्क अक्सर इस व्यवस्था को सही ठहराने के लिए दिया जाता है, पर इसकी वैधता तभी तक है जब तक वह कानून की सीमाओं में रहे। जब विधि स्पष्ट रूप से तय करती है कि पाठडपुस्तकों का चयन किन संस्थाओं के अधिकार में होगा, तब उस सीमा का उल्लंघन स्वतंत्रता नहीं, बल्कि अनुशासनहीनता का संकेत है। एनसीईआरटी की पुस्तकें विशेषज्ञों द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुरूप तैयार होती हैं, जिससे उनकी विश्वसनीयता सिद्ध होती है। इसके विपरीत, निजी प्रकाशनों में आकर्षण अधिक, पर सामग्री की प्रमाणिकता पर सवाल बने रहते हैं। ऐसे में अकादमिक स्वतंत्रता के नाम पर व्यावसायिक हितों को बढ़ावा देना शिक्षा की मूल भावना के विरुद्ध है। अब समय महज चर्चा का नहीं, ठोस और निर्णायक हस्तक्षेप का है। केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर एक पारदर्शी, कड़ा और जवाबदेह निगरानी तंत्र विकसित करना होगा, जो कागजों तक सीमित न रहे, बल्कि जमीन पर प्रभावी दिखे। निजी विद्यालयों की पुस्तक सूचियों का नियमित, निष्पक्ष और व्यापक ऑडिट सुनिश्चित किया जाए, तथा नियमों का उल्लंघन करने वाले संस्थानों पर सख्त और उदाहरणात्मक कार्रवाई हो। जुर्माने से लेकर मान्यता रद्द करने तक के प्रावधानों को पूरी दृढ़ता के साथ लागू करना अनिवार्य है। साथ ही अभिभावकों को जागरूक और सशक्त बनाना होगा, ताकि वे अपने अधिक. ारों के प्रति सजग रहें और किसी भी अनावश्यक आर्थिक बोझ के विरुद्ध निर्भीक होकर आवाज उठा सकें।

आखिरकार यह प्रश्न केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि राष्ट्र के भविष्य और उसकी सामाजिक दिशा से गहराई से जुड़ा है। शिक्षा वही मजबूत आधार है जिस पर एक संतुलित और न्यायपूर्ण समाज की इमारत खड़ी होती है, और यदि इसी आधार में असमानता की दरार पड़ जाए, तो समावेशी विकास का सपना अधूरा रह जाता है। समान पाठड सामग्री सिर्फ शैक्षणिक जरूरत नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय और अवसर की समानता का एक अहम स्तंभ है। अब सरकार और समाजकृदोनों के सामने यह स्पष्ट विकल्प है कि शिक्षा को बराबरी का सेतु बनाया जाए या उसे विभाजन की खाई में बदलने दिया जाए।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

वाहनों की बात करें तो उनके लिए इसका असर मिश्रित है। अप्रैल 2023 से बने वाहन E20 कंप्लायंट हैं, वे 20 प्रति. इथेनॉल मिश्रित ईंधन से अपने वाहन आसानी से चला सकते हैं। अप्रैल 2025 से बने वाहन पूर्ण म्20 अनुकूलित हैं, लेकिन 2023 से पहले के वाहनों में रबर पार्ट्स, गैस्केट्स और प्लास्टिक पर इथेनॉल का बुरा असर हो सकता है। हालांकि, विशेषज्ञ कहते हैं कि यह मामूली है और सर्विसिंग में ठीक हो जाता है। E20 से ऑक्टेन नंबर बढ़ता है (91 से 95 तक), इसलिए एक्सेलरेशन बेहतर हो सकता है।

पेट्रोल में इथेनॉल ब्लेंडिंग से क्या होगा

रजनीश कपूर

पिछले कुछ दिनों से केंद्र सरकार ने पेट्रोल में इथेनॉल ब्लेंडिंग को 20 प्रतिशत से अधिक बढ़ाने और फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों को बढ़ावा देने का संकेत दिए है। पश्चिम एशिया संकट के कारण ऊर्जा आपूर्ति बाधित होने के बीच यह कदम तेल आयात पर निर्भरता कम करने, विदेशी मुद्रा बचाने और स्वच्छ ईंधन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से उठाया जा रहा है। पेट्रोलियम मंत्रालय की एक संयुक्त सचिव ने संकेत दिए कि सरकार जल्द ही E85 (85% इथेनॉल) से E100 (100% इथेनॉल) तक के वाहनों के टेस्टिंग नॉर्म्स अधिसूचित करने वाली है। ऑटोमेकर्स पहले से ही इसके प्रोटोटाइप तैयार कर चुके हैं। देखना यह होगा कि सरकार का यह फैसला आम आदमी की जेब, पर्यावरण और वाहनों पर क्या असर डालेगा? भारत ने 2025 में म्20 कार्यक्रम को पूरा कर लिया है। अप्रैल 2026 तक देशभर में म्20 पेट्रोल उपलब्ध है। अब सरकार E85 या इससे ऊंचे ब्लेंड की ओर आगे बढ़ रही है। फ्लेक्स-फ्यूल वाहन किसी भी अनुपात E20 से E100 तक में इथेनॉल चला सकते हैं। ब्राजील इसका सफल उदाहरण है। भारत में यह कदम ऊर्जा सुरक्षा के लिए जरूरी है। सरकार का दावा है कि EBP कार्यक्रम से अब तक 4.5 करोड़ बैरल कच्चा तेल बचाया गया और 1.65 लाख करोड़ रुपये विदेशी मुद्रा की बचत हुई। 2014 से अब तक 69.8 मिलियन टन CO_2 उत्सर्जन कम हुआ। लेकिन क्या यह आम आदमी के लिए फायदेमंद है? दावा है कि इथेनॉल ब्लेंडिंग का सबसे बड़ा फायदा पर्यावरण को है। इथेनॉल नवीकरणीय स्रोत (गन्ना, मक्का, चावल) से बनता है। नीति आयोग के अनुसार, गन्ने से बने इथेनॉल से GHG उत्सर्जन 65% और मक्के से 50% कम होता है। टेलपाइप पर CO HC और पार्टिकुलेट मैटर PM कम निकलते हैं। E20 से CO_2 में 6-8 प्रतिशत कमी आती है, जबकि E85 या E100 पर यह और ज्यादा। अध्ययनों से पता चलता है कि इथेनॉल ब्लेंड से वाहन प्रदूषण 20-30: तक घट सकता है। वहीं इसके नुकसान भी हैं। गन्ना आधारित इथेनॉल पानी-गहन है। एक लीटर इथेनॉल बनाने में करीब 2860 लीटर पानी लगता है। भारत में गन्ना पहले से ही 70 प्रतिशत सिंचाई पानी का उपभोग करता है। ज्यादा इथेनॉल के लिए अगर गन्ना या खाद्यान्न (मक्का, चावल) का इस्तेमाल बढ़ा तो 'फूड बनाम फ्यूल' विवाद खड़ा हो सकता है। इसके साथ ही भूमि उपयोग भी बढ़ेगा, मिट्टी की उर्वरता घट सकती है और कीटनाशकों का इस्तेमाल बढ़ेगा। दूसरी पीढ़ी (2G) इथेनॉल (कृषि अपशेष से) पर जोर देने की जरूरत है, जो पर्यावरण के लिए बेहतर है। कुल मिलाकर, अगर नीति सतर्क रही तो पर्यावरणीय फायदा साफ है, कम आयात, कम प्रदूषण, लेकिन पानी और भूमि प्रबंधन बिना तो नुकसान भी हो सकता है। उल्लेखनीय है कि इथेनॉल पेट्रोल से सस्ता है, इसलिए ब्लेंडेड पेट्रोल का प्रति लीटर दाम कम रहता है। सरकार ने E20 के लिए कीमत कम रखने की सिफारिश की थी। लेकिन इथेनॉल की ऊर्जा घनत्व पेट्रोल से 30 प्रति. कम है, इसलिए इससे वाहन का माइलेज घटता है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, पुराने म्10 वाहनों में E20 से 6-7 प्रतिशत (4-व्हीलर) या 3-4% (2-व्हीलर) माइलेज गिरावट हो सकती है। मतलब, अगर आपकी कार 15 किलोमीटर प्रति लीटर की खपत करती है तो E20 पर 14.1-14.5 किलोमीटर हो जाएगी। गौरतलब है कि आप E85 या E100 चुन सकते हैं, अगर वह सस्ता हो। भारत में अभी इंफ्रास्ट्रक्चर (अलग पंप) और कीमत निर्धारण स्पष्ट नहीं है। लंबे समय में इंसेंटिव से बचत हो सकती है। पुराने वाहन वाले उपभोक्ता (2012-2023 तक बने) को माइलेज नुकसान और संभवत: मेंटेनेंस खर्च बढ़ सकता है। कुल मिलाकर, जेब पर तुरंत असर नकारात्मक हो सकता है, लेकिन अगर सरकार टैक्स छूट और सब्सिडी दे तो लंबे समय में यह फायदेमंद साबित हो सकता है। वहीं किसान समुदाय को इसका फायदा जरूर होगा, गन्ना और मक्का की खरीद बढ़ेगी, तो आय निश्चित ही बढ़ेगी।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

इस साल तपती धरती का कारण और इसका समाधान

निर्मल रानी

उत्तर भारत के पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व प. बंगाल जैसे राज्य इन दिनों भीषण गर्मी की चपेट में हैं। इन राज्यों में कई जगहों पर तापमान 40 डिग्री से लेकर 44 डिग्री तक पहुंच गया है। पिछले दिनों भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा हीटवेव अलर्ट भी जारी किया जा चुका है। मौसम विभाग ने अपनी चेतावनी में लू चलने और तापमान में 4 डिग्री तक बढ़ोतरी होने की संभावना को लेकर लोगों को सचेत किया है। पिछले कुछ वर्षों से लगभग हर साल गर्मी के तापमान में इजाफा होता ही जा रहा है। जीवन के लिए एकमात्र ग्रह पृथ्वी गत दो दशकों से ग्लोबल वार्मिंग का निरन्तर प्रभाव झेल रही है। इसके अलावा भी वैज्ञानिकों द्वारा भारत में तेज गर्मी के और भी कई कई कारण बताए जा रहे हैं। इन कारणों में खासकर जलवायु परिवर्तन के अलावा हीट डोम और अल नीनो प्रभाव को रेखांकित किया जा रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार उच्च दबाव प्रणाली गर्म हवा को जमीन के पास फंसाकर श्ढक्कनश की तरह काम करती है, जिससे तापमान तेजी से बढ़ता है। परिणाम स्वरूप compression heating से गर्मी और तीव्र हो जाती है। उधर पहले से हो रहा जलवायु परिवर्तन, सूखी मिट्टी और कम वनस्पति (वृक्ष कटान) इसे बढ़ावा देते हैं। इसी को हीट डोम प्रभाव कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त ग्रीनहाउस गैसों से वैश्विक तापमान बढ़ रहा है। इसने हीटवेव की तीव्रता और इसकी अवधि दोनों को ही बढ़ा दिया है। बताया जा रहा है कि 2026 में दुनिया के 100 सबसे गर्म शहरों में 92 शहर केवल भारत में हैं। इन गर्म क्षेत्रों में केवल दिन ही नहीं बल्कि यहां की रातें भी गर्म रहती हैं। इसे सीवियर वार्म नाइट कहते हैं। यह स्थिति जलवायु परिवर्तन का ही नतीजा है। साथ ही इस हीट वेव पर अल नीनो का प्रभाव भी बताया जा रहा है।

आशंका व्यक्त की जा रही है कि 2026 में सुपर अल नीनो की आशंका से रिकॉर्ड गर्मी पड़ना भी संभव है। अल नीनो का प्रभाव ही प्रशांत महासागर में गर्म पानी का दौर हवाओं को कमजोर कर भारत में गर्मी और कम मानसून लाता है। इसी के साथ गर्मी को बढ़ने में अनियंत्रित शहरीकरण की भी बड़ी भूमिका है। देश में चारों ओर खेत व जंगल वृक्ष निरन्तर कम होते जा रहे हैं। और शहरीकरण के नाम पर कंक्रीट के जंगल बढ़ते जा रहे हैं। लिहाजा श्अर्बन हीट आइलैंडश का प्रभाव और कंक्रीट-आधारित विकास इसके लिए खासकर जिम्मेदार हैं। यह कंक्रीट के जंगल दिन में गर्मी को सोखते हैं और रात में इसे छोड़ते हैं। उधर शहरों में होती जा रही पेड़-पौधों की कमी से वातावरण में नमी घटती जा रही है। यही वजह है कि दिल्ली व अहमदाबाद जैसे महानगरों में रातें पूर्व की तुलना में 60 प्रतिशत अधिक गर्म होने लगी हैं। शहरों में कंक्रीट, डामर और सीमेंट की पक्की इमारतें सूर्य की गर्मी सोख लेती हैं तथा रात में धीरे-धीरे छोड़ती हैं, जिससे तापमान ग्रामीण क्षेत्रों से 5-10 डिग्री अधिक रहता है। पेड़-पौधों और हरियाली की कमी से वाष्पीकरण घटता है, जो प्राकृतिक शीतलन प्रदान करता। साथ ही वाहनों, एसी और उद्योगों से निकलने वाली गर्मी इसे और भी तीव्र बनाती

है। गोया भारतीय शहरों में बढ़ता शहरीकरण बढ़ते तापमान के लिए 60 प्रतिशत तक जिम्मेदार है। और यही तापमान वृद्धि प्रति दशक 0.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि करता है। शहरीकरण ने गर्मी में 90 प्रतिशत इजाफा किया है तथा रात्रिकालीन सतह तापमान लगभग 70-80 प्रतिशत तक बढ़ा है। मिसाल के तौर पर जमशेदपुर में शहरीकरण ने तापमान वृद्धि में 100 प्रतिशत योगदान दिया।

ऐसे में सबसे ज्वलंत प्रश्न यही है कि आखिर तापमान वृद्धि की जिम्मेदार हमारी वर्तमान पीढ़ी क्या अपनी आने वाली नस्लों को भी ऐसी ही या इससे भी अधिक तपती पृथ्वी देकर जाएगी या इससे बचने के कुछ उपाय करना चाहेगी? इसके लिए सबसे पहले भारतीय शहरों में हरित आवरण को विस्तार देने की सख्त जरूरत है। हालांकि इसके लिए अनेक सरकारी योजनाएं व स्थानीय उपाय प्रभावी हैं जोकि शहरी गर्मी कम करने में हमारी सहायता करते हैं। इसके लिए बाकायदा कार्य योजना बनाकर तथा वर्षाऋतु के आरंभ से ही सरकारी और नगर निकाय भूमि पर बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाए जा सकते हैं।

कई राज्य इस दिशा में सक्रियता से काम भी कर रहे हैं। वृक्षारोपण को एक आंदोलन का रूप देने के लिए हर व्यक्ति अपने परिवार के शादी ब्याह,मैरिज एनिवर्सरी,बर्थडे, जन्म मृत्यु बरसी जैसे अवसरों पर वृक्षारोपण कर इन अवसरों को यादगार बनाने के साथ साथ जलवायु को बेहतर बनाने की दिशा में भी अपना कीमती योगदान दे सकता है। इसके अलावा हर व्यक्ति जहां जमीन कम हो वहां अपने घरों की छतों पर रूफ गार्डनिंग कर सकता है और वर्टिकल गार्डन भी लगा सकते हैं। अपने घरों के खुले क्षेत्र में अधिक से अधिक गमले लगाकर भी तापमान को काफी हद तक नियंत्रित किया जा सकता है तथा ताजी ऑक्सीजन प्राप्त की जा सकती है। गौरतलब है कि कोरोना काल में जब देशभर में अचानक कोरोना प्रभावित लोगों के लिए ऑक्सीजन की कमी पैदा हुई थी उस समय लोगों को हरियाली और वृक्षारोपण की खूब याद आई थी। कई बीमार लोग तो खेतों में पेड़ों के नीचे बैठकर स्वास्थ्य लाभ लेते देखे गए। इस आपदा ने ऑक्सीजन को लेकर लोगों में इतनी जागरूकता बढ़ाई कि उसी समय से गमलों व पौधों की नर्सरी का व्यवसाय कई गुना बढ़ गया।

बहरहाल भविष्य में तापमान वृद्धि से बचने व इसके दीर्घकालिक उपाय करने के साथ साथ तात्कालिक रूप से शरीर पर पड़ने वाले इसके दुष्प्रभाव से बचाव करना भी बेहद जरूरी है। इसके लिए सबसे पहले अपने शरीर को डिहाइड्रेशन से बचाना और शरीर को हाइड्रेटेड रखना सबसे जरूरी है। इसके लिए बहुत सारा पानी पीना चाहिए और बार बार पीना चाहिए। इसके अलावा नारियल पानी, नींबू पानी, सत्तू व ओआरएस जैसे शीतल पेय भी शरीर के तापमान को नियंत्रित रखने में मददगार होते हैं और डिहाइड्रेशन रो. कते हैं।

जीरा, धनिया या खस मिला ठंडा पानी भी इसके लिए बहुत फायदेमंद है। इसके साथ ही अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से भी बचना चाहिए। इसके साथ ही घरों में पर्दे,सनशेड आदि लगाकर धुप को रोका जा सकता है। रात के समय खिड़कियां खुली रखने, पंखा चलने व आवश्यकता हो तो गीले कपड़े पहनने या ठन्डे पानी से नहाने व पैरों को ठन्डे पानी में भिगोकर रखने से भी प्रचंड गर्मी से राहत पाई जा सकती है। इस मौसम में आहार में भी सावधानियां बरतने की जरुरत है। हल्का व पौष्टिक भोजन लेना चाहिए। जंक फूड को तो पूरी तरह नजरअंदाज करना चाहिए। इसप्रकार से धरती के इस बढ़ते तापमान का हम किसी हद तक मुकाबला कर सकते हैं।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दूसरे और अंतिम चरण के मतदान के दौरान नादिया स्थित एक मतदान केंद्र पर बुजुर्ग महिला के साथ एक व्यक्ति।

भारत के साथ सैन्य-तकनीकी सहयोग और बढ़ाने का इच्छुक रूस

मॉस्को। रूस ने कहा है कि वह भारत के साथ सैन्य-तकनीकी सहयोग को और बढ़ाने का इच्छुक है और मिल कर काम करने तथा और लाइसेंस प्राप्त हथियार निर्माण के लिए तैयार है। रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने भारतीय सूचना पोर्टल 'फर्स्टपोस्ट' को दिए एक साक्षात्कार में कहा रूस, भारत के साथ सैन्य-तकनीकी सहयोग बढ़ाना जारी रखने का इरादा रखता है। भारतीय सशस्त्र बलों की सभी शाखाओं के लिए विस्तृत श्रृंखला में सैन्य उत्पादों की आपूर्ति परस्पर सहमत समय सीमा पर की जा रही है। इसके अलावा वह संयुक्त रूप से लाइसेंस प्राप्त हथियारों के निर्माण के लिए भी तैयार है। राजनयिक ने कहा कि रूस न केवल तैयार सैन्य उत्पादों का निर्यात करने के लिए तैयार है, बल्कि संयुक्त विकास, आधुनिक हथियारों के लाइसेंस युक्त निर्माण और विभिन्न प्रकार के उपकरणों के आधुनिकीकरण एवं अन्य परियोजनाओं को लागू करने के लिए भी तैयार है।

अमेरिका ने समुद्री क्षेत्र को बंधक बनाया: ईरान

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में समुद्री डकैती को अंजाम देने जैसे गंभीर आरोप लगाए

न्यूयॉर्क/तेहरान। ईरान ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अमेरिका की कड़ी आला.चना करते हुए अमेरिका पर समुद्री डकैती को अंजाम देने और खास समुद्री क्षेत्र को बंधक बनाने का आरोप लगाया है। संयुक्त राष्ट्र में ईरान के राजदूत अमीर सईद इरावनी ने होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरान के अपने कदमों का बचाव करते हुए कहा कि अमे.रिकी नीतियां अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन कर रही हैं।

- ईरान की अनुमति के बाद जापानी सुपरटैंकर ने पार किया होर्मुज जलडमरूमध्य क्षेत्र
- अमेरिका ने 28 फरवरी से ईरान के खिलाफ एक गैरकानूनी समुद्री नाकाबंदी लागू कर दी है

जलमार्गों की सुरक्षा और संरक्षण पर सुरक्षा परिषद की एक खुली बहस में इरावनी ने अमेरिकी नौसैनिक नीति के खिलाफ ईरान के कड़े रुख को स्पष्ट किया। उन्होंने हालिया अमेरिकी कार्रवाइयों को अंतर्राष्ट्रीय कानून और क्षेत्रीय स्थिरता पर सीधा हमला बताते हुए घोषणा की कि अमेरिका समुद्री डकैतों और आतंकवादियों की तरह व्यवहार कर रहा है। ईरानी राजदूत ने आरोप लगाया कि अमेरिका ने 28 फरवरी से ईरान के खिलाफ एक गैरकानूनी समुद्री नाकाबंदी लागू कर दी है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने अंतर्राष्ट्रीय जलक्षेत्र में ईरानी वाणिज्यिक जहाजों को जब्त किया और चालक दल के सदस्यों को हिरासत में लिया, जो अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत 'समुद्री डकैती' है। इरावनी ने तर्क दिया कि अमेरिकी कार्रवाइयां न केवल संयुक्त राष्ट्र चार्टर का उल्लंघन करती हैं, बल्कि संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव 3314 के तहत 'आक्रामकता' की श्रेणी में आती हैं। उन्होंने सुरक्षा परिषद के अन्य सदस्यों को भी उनके 'पाखंड' के लिए आड़े हाथों लिया और कहा कि अंतर्राष्ट्रीय नौवहन के लिए चिंता जताने वालों में से किसी में भी इस बैठक में अमेरिकी कृत्य की निंदा करने का साहस नहीं है। राजदूत ने दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण तेल शिपिंग मार्गों में से एक, होर्मुज जलडमरूमध्य में ईरान के अपने आचरण का बचाव किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि ईरान के उपाय प्रथागत अंतर्राष्ट्रीय कानून के तहत उसके अधिकारों और दायित्वों पर आधारित हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि ईरान समुद्री कानून पर 1982 के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है, इसलिए वह इसके संधि प्रावधानों से पूरी तरह बाध्य नहीं है। इरावनी ने कहा कि ईरान ने फारस की खाड़ी, होर्मुज जलडमरूमध्य और ओमान की खाड़ी में हमेशा समुद्री सुरक्षा और नौवहन की स्वतंत्रता को बनाए रखा है। उन्होंने कहा कि ईरान द्वारा उठाए गए कदम राष्ट्रीय सुरक्षा और सुरक्षित मार्ग की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए उठाए गए हैं। ईरानी राजदूत ने पश्चिमी देशों की भी तीखी आलोचना की और उन पर 'दोहरे मापदंड' अपनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि समुद्री स्वतंत्रता के प्रति उनकी चिंता वास्तविक नहीं है। राजदूत ने स्पष्ट किया कि समुद्री परिवहन में किसी भी व्यवधान की पूरी जिम्मेदारी हमलावर देश अमेरिका और उसके समर्थकों की है। वहीं ईरानी अधिका.रियों से औपचारिक अनुमति मिलने के बाद जापानी स्वामित्व वाले एक सुपरटैंकर ने होर्मुज जलडमरूमध्य को सफलतापूर्वक पार किया है। अमेरिका-इजरायल और ईरान संघर्ष शुरू होने के बाद इस रणनीतिक समुद्री मार्ग से जापान से जुड़ा यह पहला प्रमुख तेल पारगमन माना जा रहा है।

ईरान में हार से बचने को रास्ता तलाश रहा अमेरिका

वॉशिंगटन स्थित 'यूरेशिया सेंटर' के पूर्व उपाध्यक्ष अमेरिकी विशेषज्ञ अर्ल रासमुसेन ने किया दावा

वाशिंगटन। वाशिंगटन स्थित 'यूरे.शिया सेंटर' के पूर्व उपाध्यक्ष अर्ल रासम.सेन ने दावा किया है कि अमेरिका ईरान में हार से बचने का रास्ता खोजने की को.शिश कर रहा है। रासमुसेन ने संवाद समिति रिया नोवोस्ती को बताया कि अमे.रिका हार से बचने के लिए किसी भी तरह का रास्ता तलाश रहा है, लेकिन संभवत: उसे इसे स्वीकार करना ही होगा, अन्यथा भविष्य अज्ञात है। विशेषज्ञ ने उन अपेक्षाओं को 'अवास्तविक' बताया कि तेहरान इस संघर्ष में आत्मसमर्पण कर देगा। रासमुसेन ने यह चेतावनी भी दी कि तनाव और बढ़ने से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। रासमुसेन ने कहा कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प जानते हैं कि तनाव में और वृद्धि संभवत: दुनिया को वैश्विक मंदी या महामंदी की ओर धकेल देगी। उनके अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ईरान के खिलाफ अपने सैन्य अभियान के लिए कांग्रेस से समय विस्तार की मांग कर सकते हैं, क्योंकि वह अनधिकृत युद्धों के लिए निर्धारित 60 दिनों की कानूनी सीमा के करीब पहुंच रहे हैं। उन्होंने कहा कि ट्रम्प एक ऐसी स्थिति में हैं जहां जीतना कठिन है, फिर भी वे निकलने का रास्ता खोजने का प्रयास कर रहे हैं। वे संभवत: अतिरिक्त समय विस्तार की मांग करेंगे। एक मई को ट्रम्प द्वारा कांग्रेस को ईरान के खिलाफ सैन्य अभियान की सूचना दिए जाने के 60 दिन पूरे हो जाएंगे। 'युद्ध शक्तियों के संकल्प' के तहत, राष्ट्रपति को 60 दिनों के बाद अभियान जारी रखने या सेना वापस बुलाने के लिए कांग्रेस की मंजूरी प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, जिसके लिए वे अतिरिक्त 30 दिनों के लिए लिखित रूप में प्रमाणित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यदि ट्रम्प सेना वापस बुलाते हैं, तो यह राजनीतिक रूप से अच्छा नहीं लगेगा। वे अपनी धमकियों पर अडिग रहकर आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन इसकी सबसे संभावित परिणति और भी खराब होगी। विशेषज्ञ ने ट्रम्प से यह स्वीकार करने का आह्वान किया कि ईरान पर हमला करना एक अत्यंत गलत निर्णय था और उन्हें इस संघर्ष को रोक देना चाहिए। हालांकि, उन्होंने संकेत दिया कि इजरायल और अमेरिका के राजनीतिक अभिजात वर्ग का कुछ हिस्सा और अधिक तनाव बढ़ाने के लिए दबाव डाल सकता है। गौरतलब है कि अमेरिका और इजरायल ने 28 फरवरी को ईरान के ठिकानों पर हमले किए थे, जिससे काफी क्षति हुई और हजारों नागरिक हताहत हुए। सात अप्रैल को वाशिंगटन और तेहरान ने दो सप्ताह के युद्धविराम की घोषणा की थी। इस्लामाबाद में उसके बाद हुई वार्ता बेनतीजा रही। अमेरिका 13 अप्रैल से 'हॉर्मुज जलडमरूमध्य' के दोनों किनारों पर ईरानी बंदरगाहों में प्रवेश करने और वहां से निकलने वाले समुद्री यातायात की घेराबंदी भी कर रहा है।

- रासमुसेन ने तनाव और बढ़ने से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ने की भी चेतावनी भी दी

अमेरिकी शेयर बाजार लुढ़ककर अपने न्यूनतम स्तर पर पहुंचा

वाशिंगटन। ईरान के साथ चल रहे युद्ध के कारण तेल की कीमतों में आए एक और उछाल ने मंगलवार को अमे.रिकी शेयर बाजार वॉल स्ट्रीट को हालिया रिकॉर्ड स्तर से नीचे धकेल दिया।

ऊर्जा बाजारों में बढ़ते दबाव का सामना कर रहे निवेशकों के कारण बाजार में यह गिरावट देखी गई है। शेयर बाज़ार सूचकांक 'एस एंड पी 500' अपने नवीनतम सर्वकालिक उच्च स्तर से 0.5 प्रतिशत गिर गया। डॉव जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज सूचकांक 25 अंक यानी 0.1 प्रतिशत लुढ़का, जबकि नैस्डैक कंपोजिट सूचकांक अपने रिकॉर्ड स्तर से 0.9 प्रतिशत नीचे आ गया। बाजार में यह हलचल तेल की कीमतों में जारी निरंतर वृद्धि के कारण हुई है। जून अनुबंध के लिए ब्रेंट क्रूड तेल 2.8 प्रतिशत बढ़कर 111.26 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ, जबकि अधिक सक्रिय रूप से कारोबार वाले जुलाई अनुबंध में 2.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह 104.40 डॉलर पर पहुंच गया। फरवरी के अंत से कीमतों में तेजी से वृद्धि हुई है, जब ब्रेंट 70 डॉलर के करीब कारोबार कर रहा था। अब यह 119 डॉलर के उस स्तर की ओर बढ़ रहा है जो संघर्ष की शुरुआत में देखा गया था। इसका असर वाशिंगटन के सभी पेट्रोल पंपों पर महसूस किया जा रहा है।

ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने के पक्षधर नहीं हैं सम्राट चार्ल्स-3: ट्रम्प

वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया है कि ब्रिटेन के सम्राट चार्ल्स-3 भी इस बात से सहमत हैं कि ईरान को परमाणु हथियार विकसित करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। ट्रम्प ने पश्चिम एशिया नीति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ईरान को कभी भी परमाणु हथियार हासिल नहीं करने दिया जाएगा और इस मुद्दे पर सम्राट चार्ल्स भी उनकी सोच से सहमत हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति की यह टिप्पणी ब्रिटेन की संवैधानिक परंपराओं के संदर्भ में असहज मानी जा रही है, क्योंकि ब्रिटिश सम्राट परंपरागत रूप से राजनीतिक रूप से तटस्थ रहते हैं और सरकारी नीति या अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों पर सार्वजनिक रूप से पक्ष नहीं लेते।ब्रिटेन में संवैधानिक व्यवस्था के तहत सम्राट किसी भी दलगत या प्रत्यक्ष राजनीतिक रुख से दूरी बनाए रखते हैं। ऐसे में ट्रम्प का यह दावा राजनीतिक और कूटनीतिक हलकों में चर्चा का विषय बन गया है। इस बीच ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि ईरान से जुड़ा युद्ध ब्रिटेन का युद्ध नहीं है और वह इस संघर्ष में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होने के पक्ष में नहीं हैं। उन्होंने यह भी दोहराया है कि ईरान को परमाणु हथियार नहीं मिलने चाहिए, जो लंबे समय से ब्रिटिश सरकारों की नीति रही है।

भारत-केन्या ने की अपनी मुद्राओं में व्यापार पर चर्चा

नई दिल्ली। अफ्रीका क्षेत्र में भारत के एक महत्वपूर्ण व्यापा.रिक भागीदार के रूप में उभर रहे केन्या के साथ नैरोबी में हुई एक बैठक में दोनों देशों ने द्विपक्षीय व्यापार और आर्थिक सहयोग की समीक्षा की है। दोनों देशों ने इसे और विस्तृत एवं मजबूत बनाने के अलावा अपनी मुद्राओं में व्यापार करने की संभावनाओं पर भी पर चर्चा की।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की बुधवार को जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार भारत-केन्या संयुक्त व्यापार समिति (जेटीसी) की 27-28 अप्रैल को नैरोबी में हुई दसवीं बैठक में दोनों पक्षों ने स्थानीय मुद्राओं में व्यापार निपटान को बढ़ावा देने की संभावना को स्वीकार किया है। यह उल्लेख किया गया कि केन्याई बैंकों ने भारतीय बैंकों के साथ विशेष रुपये पर आधारित वोस्त्रो खाते (एसआरवीए) खोले हैं, और इस व्यवस्था का अधिक उपयोग द्विपक्षीय लेनदेन को सुगम बना सकता है। बैठक में स्थानीय मुद्रा निपटान (एलसीएस) तंत्र अपनाने की संभावना पर भी चर्चा की गई। केन्या के लिए भारत एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा है और दोनों के बीच व्यापार बढ़कर 4.31 अरब अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है।

- अफ्रीका क्षेत्र में भारत के एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार के रूप में उभर रहा केन्या

बैठक में दोनों देशों ने व्यापार और निवेश संबंध मजबूत करने पर बातचीत की। इस सत्र की अध्यक्षता वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग के सचिव राजेश अग्रवाल और केन्या गणराज्य के व्यापार विभाग की प्रधान सचिव रेजिना अकोटा ओम्बम ने की। विज्ञप्ति के अनुसार दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय व्यापार में लगातार वृद्धि का उल्लेख किया, जिसमें भारत केन्या के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में से एक के रूप में उभरा है। भारत और केन्या के बीच कुल व्यापार 2025-26 में 4.31 अरब अमेरिकी डॉलर रहा, जिसमें 2024-25 के 3.45 अरब अमेरिकी डॉलर से 24.91 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

ट्रम्प ने फ्रेडरिक मर्ज की तीखी आलोचना की

वाशिंगटन। ईरान के मुद्दे पर अमेरिका और उसके यूरोपीय सहयोगियों के बीच गहराते मतभेद के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि मर्ज को लगता है कि ईरान का परमाणु हथियार संपन्न होना ठीक है। ट्रम्प ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ सोशल पर कहा कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि जर्मनी आर्थिक और अन्य मोर्चों पर इतना खराब प्रदर्शन कर रहा है। उन्होंने कहा कि जर्मन चांसलर को नहीं पता कि वह क्या कह रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि यदि ईरान के पास परमाणु हथियार होता, तो पूरी दुनिया को बंधक बना लिया जाता। उन्होंने कहा कि वह अभी ईरान के संबंध में वह कदम उठा रहे हैं, जो अन्य देशों या राष्ट्रपतियों को बहुत पहले कर लेने चाहिए थे।

ट्रम्प की तस्वीर वाले पासपोर्ट जारी करेगा अमेरिका

आजादी की 250वीं वर्षगांठ पर लिमिटेड एडिशन मिलेगा, ट्रम्प का गोल्डन सिग्नेचर भी दिखेगा

वाशिंगटन। अमेरिका अपनी आजादी की 250वीं वर्षगांठ के मौके पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तस्वीर वाले खास पासपोर्ट जारी करेगा। अमेरिकी विदेश विभाग ने मंगलवार को बताया कि यह लिमिटेड एडिशन नए डिजाइन वाले अमेरिकी पासपोर्ट इस गर्मियों से जारी किए जाएंगे। साथ ही इसमें राष्ट्रपति ट्रम्प का गोल्डन सिग्नेचर भी होगा।

अधिकारी के मुताबिक, वाशिंगटन पासपोर्ट एजेंसी से इन पासपोर्ट्स की शुरुआत होगी। वहां व्यक्तिगत रूप से पासपोर्ट रिन्यू कराने वालों को यही डिफाल्ट पासपोर्ट मिलेगा। हालांकि, ऑनलाइन आवेदन करने वालों और अन्य केंद्रों पर मौजूदा डिजाइन जारी रहेगा। स्टेट डिपार्टमेंट के प्रवक्ता टामी पिगाट ने कहा कि, अमेरिका ये पासपोर्ट कस्टमाइज्ड आर्टवर्क और बेहतर इमेजरी के साथ आएंगे, लेकिन इनकी सुरक्षा वही रहेंगी, जो अमेरिकी पासपोर्ट को दुनिया के सबसे सुरक्षित दस्तावेजों में से एक बनाती है। यह पासपोर्ट सीमित संख्या में जारी किए जाएंगे, लेकिन कितने जारी होंगे, यह अभी साफ नहीं है। पासपोर्ट के पीछे के कवर पर जान ट्रंबुल की पेंटिंग 'डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस' की तस्वीर होगी। यह मशहूर पेंटिंग 1776 के उस पल को देखाती है जब अमेरिकी नेताओं ने पहली बार स्वतंत्रता का दस्तावेज कांग्रेस (अमेरीकी संसद) में पेश किया था। यह पेंटिंग अमेरिकी इतिहास का प्रतीक मानी जाती है और वाशिंगटन डीसी के कैपिटल बिल्डिंग में भी लगी है। अभी जो अमे.रिकी पासपोर्ट जारी होते हैं, उनके अंदर के फ्रंट कवर पर पर्सी मोरन की पेंटिंग होती है, जिसमें फांसिस स्काट की फोर्ट मैकहेनरी पर हमले के बाद की सुबह दिखाई गई है। इसी घटना से अमेरिकी राष्ट्रगान लिखे जाने की प्रेरणा मिली थी और उसकी कुछ पंक्तियां भी अंदर छपी होती हैं। 'डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस' पेंटिंग। इसमें थामस जेफरसन समेत पांच लोगों की कमेटी को दिखाया गया है, जो स्वतंत्रता घोषणा का ड्राफ्ट लेकर आए थे। 'डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस' पेंटिंग। इसमें थामस जेफरसन समेत पांच लोगों की कमेटी को दिखाया गया है, जो स्वतंत्रता घोषणा का ड्राफ्ट लेकर आए थे ट्रम्प की तस्वीर का इस्तेमाल अन्य स्मारक चीजों में भी किया जा रहा है।

- ऑनलाइन आवेदन करने वालों और अन्य केंद्रों पर मौजूदा डिजाइन जारी रहेगा

जापान में 10 जुलाई 2026 को रिलीज होगी धुरंधर

मुंबई। अपने शानदार और रिकॉर्ड तोड़ ग्लोबल बॉक्स ऑफिस सफर के बाद, जियो स्टूडियोज और बी62 स्टूडियोज की फिल्म 'धुरंधर (पार्ट वन)', 10 जुलाई 2026 को जापान में थिएटर रिलीज के लिए तैयार है। यह फिल्म के इंटरनेशनल सफर का एक और बड़ा पड़ाव माना जा रहा है।

जापान में रिलीज से पहले, फिल्म ने दुनिया भर के कई बड़े मार्केट्स में बेहतरीन प्रदर्शन किया है और भारतीय सिनेमा के लिए नए रास्ते खोले हैं। 05 दिसम्बर 2005 को ग्लोबली रिलीज हुई इस स्पाई एक्शन एंटरटेनर ने दुनियाभर में 1328 करोड़ रुपये से ज्यादा का कारोबार किया था। धु.रंधर (पार्ट 1) ने इंटरनेशनल मार्केट में भी बड़ा मुकाम हासिल किया। यह नॉर्थ अमेरिका में अब तक की नंबर 1 हिंदी फिल्म बनी, वहीं कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म रही, और यूके में भी टॉप परफॉर्म करने वाली भारतीय फिल्मों में शामिल हुई। अपने बड़े पैमाने, दमदार कहानी और अलग जॉनर अपील के साथ, 'धुरंधर' जापान के दर्शकों से जुड़ने के लिए पूरी तरह तैयार है। फिल्म में जबरदस्त एक्शन, इमा.शन और गहराई से बुनी कहानी देखने को मिलती है, जो इसे एक इमर्सिव और सभी के लिए एंगे. जिंग सिनेमाई अनुभव बनाती है। हाल के समय की सबसे चर्चित हिंदी फिल्मों में से एक 'धुरंधर' को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला है और इसने कई बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड भी तोड़े हैं। फिल्म में रणवीर सिंह के साथ संजय दत्त, अक्षय खन्ना, आर-माधवन, अर्जुन रामपाल और सारा अर्जुन जैसे कलाकार नजर आते हैं। यह हाई-ऑक्टेन एक्शन थ्रिलर आदित्य धर द्वारा लिखी, निर्देशित और प्रोड्यूस की गई है।

- जापान में रिलीज से पहले, फिल्म ने दुनिया भर के कई बड़े मार्केट्स में बेहतरीन प्रदर्शन किया है

पाक में गुब्बारों में एलपीजी भरकर खाना बना रहे लोग

किल्लत की वजह से लोग ऐसा करने पर मजबूर, जानकर बोले: ये प्रयोग चलते-फिरते बम जैसा

कराची। पाकिस्तान के कराची शहर में गैस की भारी कमी के कारण लोग अब प्लास्टिक के गुब्बारों में गैस भरकर खाना बनाने को मजबूर हो गए हैं। लंबे समय से एलपीजी किल्लत की वजह से लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित हो रही है।

यह खतरनाक तरीका खास तौर पर कराची के ओरंगी टाउन इलाके में देखा गया है, जिसमें मोमिनाबाद भी शामिल है। वहां के लोगों का कहना है कि अनियमित गैस सप्लाई के कारण उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। रिपोर्ट के मुताबिक लोग खास तरह के प्लास्टिक के गुब्बारों में गैस भरते हैं। जब थोड़ी देर के लिए गैस सप्लाई आती है, तब इन गुब्बारों को भर लिया जाता है और बाद में दिनभर इन्हीं का इस्तेमाल करके खाना बनाया जाता है। ये गुब्बारे स्थानीय बाजार में भी करीब 1000 से 1500 रुपए में मिल रहे हैं। एक्सपर्ट्स ने इस तरीके को बेहद खतरनाक बताया है। सेफ्टी एनालिस्ट्स का कहना है कि प्लास्टिक के गुब्बारों में गैस भरना 'मोबाइल बम' जैसा है, क्योंकि हल्की सा घर्षण, गर्मी या चिंगारी भी बड़ा विस्फोट करा सकती है। घरों के अंदर ऐसे गैस से भरे गुब्बारे रखना आग लगने के खतरे को बढ़ाता है।

खासकर घनी आबादी वाले इलाकों में इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। यह स्थिति ऐसे समय में सामने आई है, जब वैश्विक स्तर पर ऊर्जा सप्लाई पर दबाव बढ़ा हुआ है। अमेरिका और ईरान के बीच चल रहे तनाव के कारण ऊर्जा सप्लाई चेन प्रभावित हुई है, जिसमें होर्मुज स्ट्रेट जैसे अहम रास्तों पर भी असर पड़ा है। कराची में कई सालों से गैस की कमी, कम दबाव और लंबी कटौती की समस्या चलती रही है। सर्दियों में तो हालत और खराब हो जाती है, क्योंकि उस समय मांग बढ़ जाती है और सप्लाई उतनी नहीं होती। इसी वजह से पहले भी लोग अलग-अलग जुगाड़ करते रहे हैं।

- ये गुब्बारे स्थानीय बाजार में भी करीब 1000 से 1500 रुपये में मिल रहे हैं

यौन समस्याएं
यौन समस्याओं के विशेषज्ञ

पुराने से पुराने यौन रोग के मरीज एक बार अवश्य मिलें
डा. सम्राट
नशामुक्ति, शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा तम्बाकू, प्रोक्सीवॉन कैप्सूल अफीम, चरस, डोडे पोस्त इंजेक्शन व अन्य नशा छुड़ाने का स्थायी ईलाज।
नावल्टी सिनेमा चौक
मुजफ्फरनगर (यू.पी.)
M-9412211108

देश/विदेश से एम.बी.बी.एस, एवं स्टडी वीजा के लिए सम्पर्क करें
• रशिया
• जॉर्जिया
• कजाखस्तान
• किर्गिज़स्तान
• उज्बेकिस्तान
• बांग्लादेश
• नेपाल
• चाईना
• ईरान
• इजिप्ट
• यू.के.
• कनाडा
• यू.एस.ए.
और भी देशों से
Since 2010
अन्जुम कलीम (एम.डी.) 8384872313 9457439020
M.B.B.S./M.D.
BDS, BAMS, BUMS, BEMS
Abroad Admission & Counselling For India
•Top Govt. Universities.
•MCI, WHO Approved Universities.
•Indian Hostel & Mess Available.
•Lowest Price Packages.
•Boys/Girls Hostels Are Separates Available.
अपना एम.बी.बी.एस. 25 से 27 लाख में पूरा करें
जिसमें ट्यूशन फीस, हॉस्टल फीस, खाना 3 टाईम (वेज/नॉनवेज), वीजा एक्सटेंशन, इंश्योरेंस, मेडिकल, ट्रांसपोर्टेशन, लॉन्ड्री, एफ.एम.जी. ई. कॉचिंग, 15 इंडियन बेस्ट फैकल्टी के द्वारा दी जा रही है
471 बच्चें जनवरी एफ.एम.जी.ई. एक्जाम में पास हुऐ (अन्य कोई खर्चा नहीं)
www.mbbsbijnor.com
ADD : MBBS ABROAD CONSULTANCY, MOIN KA CHAURAHA, CHAHSHIREEN JAMA MASJID, B-21, BIJNOR (U.P)